

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत
नेपाली केन्द्रीय विभागको एम.ए. दोस्रो वर्षको दशौं पत्रको
प्रयोजनको लागि प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी
सुशीला पोखरेल
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
कीर्तिपुर
२०६३

शोधनिर्देशकको मन्तव्य

“गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको अध्ययन” शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाली केन्द्रीय विभाग कीर्तिपुरको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि यसै केन्द्रीय क्याम्पसकी छात्रा सुशीला पोखरेलले मेरो निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । सामग्री-सङ्कलनका क्रममा सम्बद्ध व्यक्तिहरूसँग भेट गरी परिश्रमपूर्वक सम्पन्न गरिएको उहाँको यस शोधकार्यसँग म सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि सिफारिस गर्दछु ।

मिति: २०६३/ /

.....
जीवेन्द्रदेव गिरी
उपप्राध्यापक
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
कीर्तिपुर

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर

स्वीकृति-पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत विश्वविद्यालय क्याम्पसकी छात्रा सुशीला पोखरेलले त्रि.वि. स्नातकोत्तर तह (एम.ए.) मा नेपाली विषयको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि गर्नुभएको “गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको अध्ययन” नामक शोधपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

शोधपत्र मूल्याङ्कन समिति

- १) विभागीय प्रमुख: प्रा.घनश्याम उपाध्याय कँडेल
- २) शोनिर्देशक: उप.प्रा. जीवेन्द्रदेव गिरी
- ३) बाह्य परीक्षक:

मिति: २०६३/ /

कृतज्ञताज्ञापन

‘गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको अध्ययन’ शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र मैले गोरखा जिल्लाको विभिन्न भू-भागको भ्रमण गरी सामग्री सङ्कलन गरेको हुँ । प्रस्तुत शोधपत्रलाई तयार पार्न सहयोग गर्नुहुने विभागीय प्रमुख प्रा. घनश्याम उपाध्याय कँडेल प्रति आभार व्यक्त गर्दछु । ती सामग्रीको वर्गीकरण र अध्ययन विश्लेषण गरी यो रूप दिनमा आदरणीय गुरु उपप्राध्यापक जीवेन्द्रदेव गिरीको महत्वपूर्ण सहयोग रहेको छ । आङ्गनो अति व्यस्त जीवनमा पनि अमूल्य समय दिइ मलाई समुचित निर्देशन दिएर लेखन कार्यमा अभिप्रेरित गर्नुहुने शोधनिर्देशक श्रद्धेय गुरुप्रति सर्वप्रथम म हार्दिक आभारका साथै कृतज्ञताज्ञापन गर्दछु । यस शोधपत्र तयार पार्ने सिलसिलामा आवश्यक सामग्री उपलब्ध गराई समुचित सल्लाह र सहयोग गर्नुहुने सम्पूर्ण महानुभावहरूप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । त्यस्तै अनेकौं बाधा व्यवधानलाई पन्छाएर अलिकति पनि दुःख नमानी अथक परिश्रम गरेर मलाई समय, साधन र वातावरण दिएर मेरा अध्ययनलाई निरन्तरता प्रदान गर्नुहुने मेरो पिता पूर्णप्रसाद पोखरेल तथा माता मनिकर्णिका पोखरेल, दाजु इन्द्रप्रसाद पोखरेल, भिनाजू नीलकण्ठ भट्टराई, दिदी सरस्वती भट्टराईप्रति पनि सदैव कृतज्ञ रहने

छु । त्यस्तै शोधलेखनको सन्दर्भमा ठाउँ-ठाउँमा पुगेर सामग्री सङ्कलनदेखि अन्य कार्यमा सहयोग गर्नुहुने जीवनसाथी सुनील अर्यालप्रति आभार प्रकट गर्दछु ।

शोधकार्यको सन्दर्भमा विभिन्न सामग्री उपलब्ध गराउने त्रि.वि. पुस्तकालय, आवश्यक वर्णविन्यास हेरी सहयोग पुऱ्याउने मित्रहरू नरहरि घिमिरे, जगदीश गैरेप्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट गर्दछु साथै सङ्कलित सामग्रीहरू होसियारीपूर्वक टङ्गन गरिदिने ‘जी कम्प्युटर सेन्टर’ कीर्तिपुरका जीतेन महर्जन र विवेक महर्जनप्रति पनि हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु ।

अन्त्यमा प्रस्तुत शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि सविनय अनुरोध सहित नेपाली केन्द्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर समक्ष पेश गर्दछु ।

शोधार्थी
सुशीला पोखरेल
स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षे
शैक्षिक सत्र २०५९-२०६१
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रि.वि. कीर्तिपुर

सङ्क्षेपीकृत सूची

| | |
|-------------------|--|
| इ.सं. | - इस्वी संवत् |
| क्र.सं. | - क्रम-सङ्ख्या |
| कि.मि. | - किलोमिटर |
| गा.वि.स. | - गाउँ विकास समिति |
| चौ.सं. | - चौथो संस्करण |
| जि.वि.स. | - जिल्ला विकास समिति |
| डा. | - डाक्टर |
| ते.सं. | - तेस्रो संस्करण |
| ने.रा.प्र.प्र. | - नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान |
| पा.वि.के. | - पाठ्यक्रम विकास केन्द्र |
| प्रा. | - प्राध्यापक |
| पृ.ना.न.पा. | - पृथ्वीनारायण नगरपालिका |
| पृ. | - पृष्ठ |
| मि. | - मिटर |
| वि.सं. | - विक्रम संवत् |
| नं. | - नम्बर |
| सं. | - सङ्ख्या |
| उप. प्रा. | - उपप्राध्यापक |
| सा.प्र. | - साभ्ता प्रकाशन |
| सा.सं. | - सातौं संस्करण |
| त्रि.वि. | - त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| त्रि.वि.पा.वि.के. | - त्रिभुवन विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम विकास केन्द्र |

चिह्न सूची

| | |
|-------|----------------|
| चिह्न | अर्थ |
| / | वा, र |
| - | निर्देशक चिह्न |
| :- | निर्देशक चिह्न |
| : | निर्देशक चिह्न |

विषयसूची

| | पृष्ठ |
|---|------------|
| पहिलो परिच्छेद : शोधपरिचय | १७ |
| १.१ शोधशीर्षक | १ |
| १.२ शोधार्थीको पूरा नाम थर | १ |
| १.३ शोधकार्यको प्रयोजन | १ |
| १.४ विषयपरिचय | १ |
| १.५ शोधसमस्या | २ |
| १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा | २ |
| १.७ शोधको उद्देश्य | ५ |
| १.८ शोधकार्यको औचित्य | ५ |
| १.९ अध्ययनको सीमा | ६ |
| १.१० शोधविधि | ६ |
| १.११ शोधपत्रको रूपरेखा | ७ |
| | |
| दोस्रो परिच्छेद : गोरखा जिल्लाको परिचय | ८१५ |
| २.१ नामकरण | ८ |
| २.२ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि | ८ |
| २.३ भौगोलिक स्थिति | १० |
| २.३.१ हिमाली प्रदेश | ११ |
| २.३.२ भोट तथा लेकाली प्रदेश | ११ |
| २.३.३ पहाडी प्रदेश | १२ |
| २.३.४ बेसी र टारहरू | १२ |
| २.४ हावापानी | १२ |
| २.५ नदीनाला | १३ |
| २.५.१ बूढीगण्डकी | १३ |
| २.५.२ दरौँदी | १३ |
| २.५.३ चेपे नदी | १३ |
| २.५.६ मर्स्याङ्दी | १३ |
| २.६ तालहरू | १४ |
| २.६.१ दूधपोखरी | १४ |
| २.६.१ नारदकुण्ड | १४ |
| २.७ गुफाहरू | १४ |
| २.८ सामाजिक जीवन | १५ |

| | |
|---|--------|
| २.९ मठमन्दिर तथा तीर्थस्थलहरू | १६ |
| २.९.१ गोरखनाथ बाबा | १६ |
| २.९.२ मनकामनादेवी | १७ |
| २.९.३ कालिकादेवी | १७ |
| २.९.४ गोरखादरबार | १८ |
| २.१० आर्थिक अवस्था | १८ |
| २.११ शैक्षिक अवस्था | १९ |
| २.१२ लोकसाहित्यको अवस्था | २१ |
| २.१२.१ लोकगीत | २३ |
| २.१२.२ लोककथा | २३ |
| २.१२.३ लोकगाथा | २४ |
| २.१२.४ लोकनाटक | २४ |
| २.१२.५ उखान-टुक्का | २४ |
| २.१२.६ गाउँखाने कथा | २५ |
| २.१३ निष्कर्ष | २५ |
| | |
| तेस्रो परिच्छेद : टुक्काको सैद्धान्तिक अध्ययन र नेपाली टुक्का | ३६(४८) |
| ३.१ परिचय | ३६ |
| ३.२ टुक्काको परिभाषा | ३८ |
| ३.३ टुक्काका संरचनागत तत्त्व | ३१ |
| ३.३.१ खास पद र खास क्रियाको संयोजन | ३२ |
| ३.३.२ अर्थगत विशिष्टता | ३३ |
| ३.३.३ टुक्काको सन्दर्भ-प्रयोग | ३४ |
| ३.४ नेपाली टुक्काको अध्ययनपरम्परा | ३५ |
| ३.४.१ वर्गीकरण | ३७ |
| ३.४.१.१ विषयात्मक आधारमा वर्गीकरण | ३८ |
| ३.४.१.२ रूपरचनाका आधारमा वर्गीकरण | ३९ |
| ३.४.२ विशेषता | ३९ |
| ३.४.२.१ लोकजीवनको चित्रण | ४३ |
| ३.४.२.२ सङ्क्षिप्तता र लोकप्रियता हुनु | ४३ |
| ३.४.२.३ सरल र सरसता हुनु | ४३ |
| ३.४.२.४ पदहरू परिवर्तन नहुनु | ४३ |
| ३.४.२.५ अभिधार्थमा प्रयोग नहुनु | ४४ |
| ३.४.३ महत्त्व | ४४ |

| | |
|--|---------------|
| ३.५ नेपाली टुक्का र लोकसाहित्यका अन्य विधाबीच भिन्नता र समानता | ४५ |
| ३.६ निष्कर्ष | ४७ |
| चौथो परिच्छेद: गोरखाली टुक्काको वर्गीकरण र विश्लेषण | ४९(७८) |
| ४.१ गोरखाली टुक्काको वर्गीकरण | ४९ |
| ४.१.१ समाजविषयक टुक | ४९ |
| ४.१.२ संस्कृतिविषयक टुक | ४९ |
| ४.१.३ पुराण-इतिहासविषयक टुक्काहरू | ५० |
| ४.१.४ लोकविश्वासविषयक टुक्काहरू | ५० |
| ४.१.५ प्रकृतिविषयक टुक्काहरू | ५१ |
| ४.१.६ आर्थिक तथा कृषिव्यवसायमूलक टुक्काहरू | ५१ |
| ४.१.७ व्यङ्ग्य विषयमूलक टुक्काहरू | ५१ |
| ४.१.८ जातिसम्बन्धी टुक्काहरू | ५२ |
| ४.१.९ स्थानसम्बन्धी टुक्काहरू | ५२ |
| ४.१.१० विविध विषयवस्तुसम्बन्धी टुक्काहरू | ५२ |
| ४.२ गोरखाली टुक्काको विश्लेषण | ५३ |
| ४.२.१ भाषिक आधारमा विश्लेषण | ५३ |
| ४.२.१.१ नाम र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू | ५४ |
| ४.२.१.२ अव्यय र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू | ५४ |
| ४.२.१.३ विशेषण, विशेष्य र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू | ५४ |
| ४.२.१.४ भेदक, भेद्य र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू | ५५ |
| ४.२.१.५ क्रियापदविहीन टुक्काहरू | ५५ |
| ४.२.१.६ विभिन्न शब्द र शब्दावलीमा एउटै क्रियापद भएका टुक्काहरू | ५५ |
| ४.२.१.७ एउटै शब्दमा विभिन्न क्रियापद लागेर बनेका टुक्काहरू | ५६ |
| ४.२.१.८ पदसमूह र क्रियापद मिलेर बनेका टुक्काहरू | ५६ |
| ४.२.१.९ समस्त शब्द र क्रियापद मिलेर बनेका टुक्काहरू | ५६ |
| ४.२.१.१० अर्थ एक रूप अनेकका टुक्काहरू | ५७ |
| ४.२.१.११ बिम्बात्मक टुक्काहरू | ५८ |
| ४.२.१.१२ उखान रूपका टुक्काहरू | ५९ |
| ४.२.१.१३ निषेध रूपका टुक्काहरू | ५९ |
| ४.२.१.१४ द्वित्व शब्दका आधारमा | ६० |
| ४.२.१.१५ पद सङ्ख्याको आधारमा | ६० |

| | |
|--|----|
| ४.२.२ विषयवस्तुका आधार | ६२ |
| ४.२.२.१ सामाजिक संस्कार या परम्परा | ६२ |
| ४.२.२.२ ऐतिहासिक घटना | ६३ |
| ४.२.२.३ पौराणिक विषयवस्तु | ६४ |
| ४.२.२.४ आर्थिक स्थिति | ६५ |
| ४.२.२.५ अन्धविश्वास तथा शकुन र अपशकुन | ६५ |
| ४.२.२.६ मानवीय षट्पत्ति | ६६ |
| ४.२.२.७ शारीरिक सम्बन्धी वर्णन | ६७ |
| ४.२.२.८ पशुपक्षी तथा जीवजन्तु | ६७ |
| ४.२.२.९ लोकविश्वास | ६८ |
| ४.२.२.१० आधुनिक परिवेशमा निर्मित टुक्काहरू | ६९ |
| ४.२.२.११ मिथकीय टुक्काहरू | ६९ |
| ४.२.३ साहित्यिक आधारमा विश्लेषण | ७२ |
| ४.२.३.१ आलङ्कारिकता | ७२ |
| ४.२.३.२ शब्दशक्ति | ७५ |
| ४.३ गोरखाली टुक्काका विशेषता | ७६ |

| | |
|------------------------------------|---------------|
| पाँचौ परिच्छेद : उपसंहार | ७९(८१) |
| ५.१ पृष्ठभूमि | ७९ |
| ५.२ सारांश | ८० |
| ५.३ निष्कर्ष | ८१ |
| ५.४ भावी अनुसन्धानका निमित्त सुझाव | ८१ |
| सन्दर्भग्रन्थसूची | ८२(८३) |
| परिशिष्ट क | ८४ |
| परिशिष्ट ख | ८५(११८) |
| परिशिष्ट ग | ११९(१३०) |
| परिशिष्ट घ | १३१ |
| परिशिष्ट ङ | १३२ |

पहिलो परिच्छेद

शोधपरिचय

१.१ शोधशीर्षक

प्रस्तुत शोधको शीर्षक 'गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको अध्ययन' रहेको छ ।

१.२ शोधार्थीको पूरा नाम थर

सुशीला पोखरेल

१.३ शोधकार्यको प्रयोजन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली विषयको स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षमा अध्ययन गर्नुपर्ने दसौं पत्रको प्रयोजनका निम्ति प्रस्तुत शोधकार्य गरिएको हो ।

१.४ विषयपरिचय

भाषा वा बोलीमा लाक्षणिक तथा विशेष अर्थमा प्रयोग हुने र आफ्नो वाच्यार्थमा भन्दा बेग्लै लक्ष्यार्थमा जोड दिने वाक्यांश वा पदसमूहलाई टुक्का भनिन्छ । तिनको सङ्कलन र अध्ययन गर्नु आजको आवश्यकता हो । गोरखा जिल्लामा बसोबास गर्ने मानिसहरूको आङ्गनै लोकपरम्परा छ । उनीहरूको भाषामा छुट्टै प्रकारको मिठास पाइन्छ । भाषामा मिठास थप्ने क्रममा टुक्काको विशिष्ट भूमिका रहन्छ । त्यसैले टुक्काको राम्रो सम्भावना भएको जिल्ला गोरखालाई छनोट गरी यहाँ प्रचलित टुक्काको खोज र अध्ययन गरिएको हो । गोरखा जिल्ला भौगोलिक रूपमा विकट जिल्ला हो । बाह्य प्रभावका दृष्टिले कम मात्र प्रभावित यस जिल्लामा लोकपरम्परा, लोकविश्वास र लोकप्रचलनले

महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त गरेको छ । लोकसाहित्यको एउटा महत्त्वपूर्ण विधा टुक्काको प्रचलन र प्रयोग यस जिल्लामा प्रशस्त मात्रामा भएको पाइन्छ ।

सामान्य व्यक्तिले प्रयोग गर्ने भाषामा होस् वा विशिष्ट व्यक्तिले प्रयोग गर्ने भाषामा होस् यहाँ टुक्काको प्रयोग प्रशस्त हुने गरेको पाइन्छ । ती टुक्काहरूले भाषालाई समृद्ध र गौरवशाली बनाएका छन् । त्यसैले भाषामा महत्त्वपूर्ण स्थान राख्ने टुक्काको खोजी तथा अध्ययन गरेर प्रकाशमा ल्याउनु प्रस्तुत शोधपत्रको मुख्य लक्ष्य रहेको छ । त्यसैले यस शोधपत्रमा गोरखा जिल्लामा विभिन्न स्थानहरूमा प्रचलित टुक्काहरूको सङ्कलन गरेर वर्गीकरण र विश्लेषण गरिएको हो ।

१.५ शोधसमस्या

लोकसाहित्यको एउटा महत्त्वपूर्ण विधाका रूपमा रहेको टुक्काले भाषा र साहित्यमा महत्त्वपूर्ण स्थान ओगटेको छ तापनि यसको व्यापक खोजी र अध्ययन भएको पाइदैन । गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूले पनि नेपाली लोकसाहित्यको भण्डारलाई समृद्ध बनाउन महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेका छन् । त्यसैले यस शोधपत्रमा निम्नलिखित समस्याहरूलाई केन्द्रमा राखेर शोधकार्य गरिएको छ ।

- क) गोरखा जिल्लामा के-कस्ता टुक्काहरू प्रचलित छन् ?
- ख) गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूलाई के-कति आधारमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ?
- ग) गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूलाई केकति आधारमा विश्लेषण गर्न सकिन्छ ?

उपर्युक्त किसिमका विभिन्न शोधसमस्याहरूमा केन्द्रित भएर यसको वर्गीकरण र विश्लेषण गर्नु नै शोधकर्ताको ध्येय रहेको छ । यसरी हेर्दा शोधशीर्षक नै समस्याको रूपमा रहेको पाइन्छ ।

१.६ पूर्वकार्यको समीक्षा

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूको सङ्कलन र अध्ययन कार्य हालसम्म कसैबाट पनि भएको पाइँदैन । केही पत्र-पत्रिकाहरूमा टुक्काको सामान्य चर्चा भए पनि उद्देश्यमूलक रूपमा यस्तो कार्य भएको छैन । नेपालका अन्य क्षेत्रमा प्रचलित टुक्काहरू समेत गोरखामा प्रचलित रहेको हुनाले गोरखामा प्रचलित टुक्का सम्बन्धी अध्ययन र विश्लेषणसँग तिनको सम्बन्ध गाँसिएको छ र यहाँ त्यस्ता अध्ययनको पनि चर्चा गरिएको छ ।

क) पुष्कर शमशेर ज.ब.रा.ले 'उखान-टुक्काको वर्णक्रमानुसारी सूची र वाक्यांश, वाक्यपद्धति इत्यादि कोश' (वि.सं. १९९८) मा उखान र टुक्का सङ्कलन सूची दिइएको पाइन्छ । त्यसमा उनले लगभग पाँच हजार जति टुक्कालाई वर्णानुक्रममा व्यवस्थित तरिकाले राखी तिनीहरूको अर्थ दिएर तिनीहरूलाई विभिन्न विद्वान्का उदाहरणसहित तथा आफूले पनि वाक्यमा प्रयोग गरेर देखाएका छन् । सो कार्यमा उखान र टुक्काबीचको स्पष्ट भिन्नता देखाइएको पाइँदैन । त्यो केवल उखान र टुक्का सङ्कलनको सूचीका रूपमा रहेको छ । त्यसमा टुक्काको सैद्धान्तिक रूपमा अध्ययन, वर्गीकरण र विश्लेषण भएको पाइँदैन तैपनि यस कार्यमा उक्त कोश सहयोगी सिद्ध भएको छ । त्यहाँ गोरखामा प्रचलित उखानहरू पनि निकै मात्रामा सङ्कलित छन् ।

ख) गोपाल पाण्डेको 'रचना केशर' (२०००) मा टुक्का, वाक्यांश र वाक्यपद्धति भन्दै टुक्काको छोटो चर्चा भएको पाइन्छ । त्यसमा पनि उखान र टुक्का बीचको स्पष्ट भिन्नता दिइएको पाइँदैन ।

ग) पारसमणि प्रधानले 'नेपाली मुहावरा' (२०११) मा प्रकाशित पुस्तकमा टुक्कालाई 'मुहावरा' नामले स्विकारी टुक्काका बारेमा चर्चा गरेका छन् । यसमा पनि केही टुक्का सङ्कलित छन्, तर तिनीहरूको व्याख्या-विश्लेषण भने गरिएको छैन । प्रधान कै 'टिपनटापन' पुस्तकमा 'नेपाली साहित्यमा उखानको स्थान' नामक लेखमा टुक्काबारे अलिकति चर्चा गरिएको पाइन्छ तर सैद्धान्तिक रूपमा व्याख्या त्यहाँ पनि हुन सकेको छैन । त्यहाँ सङ्कलित टुक्काहरू मध्ये केही गोरखा जिल्लामा पनि प्रचलित छन् ।

घ) बालकृष्ण पोखरेलले 'राष्ट्रभाषा' (२०३२) मा टुक्काको चर्चा गर्दै प्रथम पटक टुक्कालाई दुई वर्गमा विभाजनसमेत गरेका छन् । यस पुस्तकमा उनले केही टुक्काको सङ्कलन गरी तिनीहरूलाई साधारण अर्थ र लक्ष्यार्थमा राखेर दुवै तरिकाले अर्थ्याएका छन् । उनले टुक्कालाई एकपदीय र अनेकपदीय भनेर वर्गीकरण पनि गरेको पाइन्छ । नेपाली टुक्काहरूका बारेमा पोखरेलले गरेको चर्चा गोरखाली टुक्काहरूको अध्ययनमा पनि सान्दर्भिक छ ।

ङ) कृष्णप्रसाद पराजुलीले पनि टुक्काका सन्दर्भमा कार्य गरेका छन् । उनले 'राम्रो रचना: मीठो नेपाली' नामक पुस्तकमा केही टुक्काको सङ्कलन र तिनको अर्थ समेत दिई टुक्कालाई अलग्गै विषयका रूपमा हेर्ने जमर्को गरेका छन् । कृष्णप्रसाद पराजुलीले नै आङ्गनो पुस्तक 'भाषाको माया' मा पनि टुक्कासम्बन्धी परिचय र परिभाषा दिँदै निकै टुक्काको सङ्कलन प्रस्तुत गरेका छन् । उनले तिनको अर्थ दिँदै वाक्यमा प्रयोग समेत गरेर भाषामा टुक्काको महत्त्व रहेको कुरा अगाडि ल्याएका छन् । यसर्थ गोरखाली टुक्काको अध्ययनका क्रममा पनि पराजुलीको कार्यलाई उल्लेख्य मान्न सकिन्छ ।

च) चूडामणि रेग्मी 'नेपाली टुक्काको अध्ययन' (२०४१) मा करिब बाइस सय टुक्काको सूची दिँदै प्रथमपटक टुक्काको सैद्धान्तिक चर्चा गरिएको छ र पूर्वकार्यको विवरण समेत दिइएको छ । यस कार्यमा उक्त अध्ययनसँग विशेष सरोकार रहेको छ । उखानको सैद्धान्तिक, विश्लेषणका साथै, गोरखामा प्रचलित विभिन्न उखानहरूको त्यहाँ भएको समावेशीकरणले प्रस्तुत अध्ययनमा महत्त्व राख्छ ।

छ) हीरामणि शर्मा पौड्यालको 'पर्वती भाषिकाको स्वरूप र संरचना' (२०४४) नामक पुस्तकमा केही टुक्काहरूको सङ्कलन छ । गोरखाली टुक्काको अध्ययनमा सो सङ्कलन विद्यमान टुक्काहरूसम्बन्धी जानकारी पनि सान्दर्भिक रहेको छ ।

ज) जीवेन्द्रदेव गिरीको 'लोकसाहित्यको अवलोकन' (२०५७) मा लोकसाहित्यका विविध विधाहरूको चर्चा गर्दै सामान्य रूपमा टुक्काको समेत चर्चा भएको

पाइन्छ तर टुक्काको समग्र व्याख्या-विश्लेषण भने त्यहाँ भएको छैन । सो चर्चा पनि प्रस्तुत अध्ययनका सन्दर्भमा उल्लेख्य छ ।

यसरी सिङ्गे नेपाली टुक्काको क्षेत्रमा केही कार्य भएका छन्, तर गोरखाली टुक्काका सम्बन्धमा भने यसभन्दा अगाडि खासै काम भएको पाइँदैन । गोरखाको साहित्यका सम्बन्धमा केही-केही भए तापनि टुक्काका सम्बन्धमा कसैले केही कार्य गरेको देखिँदैन । यही स्थितिमा गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको अध्ययनका सम्बन्धमा प्रस्तुत कार्य गर्न लागिआएको छ ।

१.७ शोधको उद्देश्य

यस शोधपत्रको मुख्य उद्देश्य नेपाली भाषा, साहित्य र लोकसाहित्यमा महत्वपूर्ण स्थान ओगटेको 'टुक्का' को अध्ययन गर्नु नै हो । यस क्रममा गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूमा केन्द्रित रहेर निम्नलिखित उद्देश्यपूर्तिमा यो शोधपत्र केन्द्रित रहेको छ:-

- क) गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूको सङ्कलन गर्नु ।
- ख) गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूलाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरेर देखाउनु ।
- ग) गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूलाई विभिन्न आधारमा विश्लेषण गरेर देखाउनु ।

१.८ शोधकार्यको औचित्य

लोकजीवनमा प्रचलित टुक्काहरूले मान्छेका बोली व्यवहारमा विशिष्टता ल्याउने काम गर्छन् । भाषामा उक्ति वैचित्र्य, गम्भीरता, व्यङ्ग्यात्मकता र सङ्गीतात्मकता ल्याउन टुक्काहरूको प्रयोग भएको हुन्छ । नेपाली साहित्यमा यस्ता टुक्काहरूको प्रशस्तै मात्रामा प्रयोग भएको पाइन्छ भने लोकसाहित्यमा त यसको छुट्टै अस्तित्व स्थापित भइसकेको छ । भाषा-साहित्यमा र लोकसाहित्यमा विशेष महत्त्व राख्ने टुक्काहरूको राष्ट्रिय स्तरमा र क्षेत्रीय स्तरमा लिखित रूपमा खोजी र सङ्कलन गरेर प्रकाशनमा ल्याउनुपर्ने आजको

प्रमुख आवश्यकता हो । हाम्रो देशको प्रत्येक कुनाकापचामा यस्ता लोकसाहित्यिक वैभवहरू लुकेर बसेका छन् । त्यस्ता वैभवहरूको समयमा नै खोजी र सङ्कलन भएन भने भविष्यमा लोप भएर जान पनि सक्छन् । यी सम्पूर्ण कुराहरूलाई ध्यानमा राखेर गोरखामा प्रचलित टुक्काहरूको खोजी सङ्कलन र अध्ययन गरिने यस शोधकार्यको औचित्य स्वतः सिद्ध छ । साथै प्रस्तुत शोधकार्यले लोकसाहित्यका बारेमा अध्ययन गर्न चाहने अध्येताहरूलाई राम्रो सहयोग पुऱ्याउने छ भन्ने कुरामा विश्वास लिन सकिन्छ । साथै नेपाली लोकसाहित्य प्रेमी पाठक वर्गलाई खुराक प्रदान गर्न पनि यसबाट सहयोग पुग्न जाने कुरा सुनिश्चित छ ।

१.९ अध्ययनको सीमा

यस शोधकार्यको सीमा निम्नानुसार रहेको छः

- क) यस कार्यमा गण्डकी अञ्चलको गोरखा जिल्लाभित्रका मुख्य-मुख्य स्थानमा गएर टुक्का सङ्कलन गरिएको हो ।
- ख) गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूको स्थलगत रूपमा सङ्कलन गर्दा प्रचलित नेपालीभाषाका टुक्काहरूलाई मात्र समेटिएको छ ।
- ग) सङ्कलित टुक्काहरू त्यहाँ बोलिने नेपाली भाषामा नै रहेका छन् र वर्गीकरण, व्याख्या र विश्लेषणमा पनि त्यहाँको जनजीवन र रहनसहनलाई मुख्य आधार मानिएका छ ।

१.१० शोधविधि

प्रस्तुत शोधपत्र तयार गर्दा निम्नलिखित शोधविधि प्रयोग गरिएको छः

क) क्षेत्रीय अध्ययनविधि

यस अध्ययन पद्धतिअनुसार गोरखा जिल्लाका विभिन्न सम्भाव्य स्थानहरूमा पुगेर स्थानीय मानिसहरूको बोलीचालीका क्रममा प्रयोग भएका टुक्काहरूलाई सङ्कलन गरिएको छ । साथै यस अध्ययनका क्रममा कतिपय व्यक्तिहरूसँग प्रश्नावली र अन्तर्वार्ता विधिको समेत प्रयोग गरिएको छ ।

ख) पुस्तकालयीय विधि

पुस्तकालयीय पद्धतिको उपयोग गरेर पुस्तकालयहरूमा सङ्कलित लोकसाहित्यका आवश्यक सामग्रीहरूको अध्ययन गरिनाका साथै स्थापित सैद्धान्तिक मान्यताअनुरूप सङ्कलित टुक्काहरूको वर्गीकरण, व्याख्या र विश्लेषण गरिएको छ ।

१.११ शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रको रूपरेखा निम्नानुसार रहेको छ :-

पहिलो परिच्छेद : शोधपरिचय

दोस्रो परिच्छेद : गोरखा जिल्लाको सामान्य परिचय

तेस्रो परिच्छेद : टुक्काको सैद्धान्तिक अध्ययन

चौथो परिच्छेद : गोरखाली टुक्काको वर्गीकरण र विश्लेषण

पाँचौं परिच्छेद : उपसंहार

दोस्रो परिच्छेद

गोरखा जिल्लाको परिचय

२.१ नामकरण

गोरखा हिमालयको सुरम्य काखमा रहेको छ । यसले नेपालको गर्विलो इतिहास बोकेको छ । यो प्राकृतिक छटा एवं पवित्र र पुण्य स्थलले भरिएको छ । यसको नामकरण कसरी भयो भन्नेबारेमा विभिन्न प्रकारका कथनहरू रहेका छन् । शिवस्वरूप गोरखनाथ बाबाको सबभन्दा मनपरेको क्षेत्र र बासस्थान रहेको र तिनै गोरखनाथद्वारा रक्षित र पालित भएको कारण यस क्षेत्रको नाम गोरखा रहन गएको हो भन्ने जनश्रुति रहेको छ । यसैगरी 'गोरखा' को शाब्दिक अर्थ केलाउँदै जाँदा 'गो' भनेको 'गाई' र 'रखा' अर्थात् 'रक्षा' भन्नाले 'संरक्षण' भन्ने तात्पर्यमा गोरखा भनिएको हो भन्ने कथन पनि प्रचलित छ । गाईलाई पूजा गर्ने र गाईलाई आमाको रूपमा मान्ने परम्परा पनि प्राचीनकालदेखि नै प्रचलित रहिआएको छ । यसैबाट 'गोरक्षा' अर्थात् 'गाईको रक्षा गर्ने प्रदेश' का रूपमा 'गोरखा' नाम रहन गएको कुरा पनि उपयुक्त नै देखिन्छ । साथै गोरखनाथ र कालिकाको मन्दिर तथा गुफा गोरखा जिल्लामा रहेको र नेपालीहरूले गोरखनाथको पूजाआजा गर्दै आइरहेको कारणबाट गोरखा नाम रहन गएको कुरा पनि सान्दर्भिक नै देखिन्छ ।

२.२ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक दृष्टिकोणबाट गोरखा नेपालको एक गौरवशाली जिल्ला हो । गोरखाबाट नै सिङ्गे नेपालको परिकल्पना भएको छ । गोरखाली राजाले नै नेपालको एकीकरण गरेको हुँदा इतिहासले गोरखालाई स्पष्ट रूपमा चिनाइसकेको छ । गोरखाको प्राचीन इतिहासलाई हेर्ने हो भने वि.सं. १३४४ तिर गोरखा सिँजाका राजा जितारी मल्लको राज्यअन्तर्गत रहेको देखिन्छ । वि.सं. १५२४ तिर यक्ष मल्लले यसलाई आङ्गनो राज्य भादगाउँमा गाभेको देखिन्छ । वि.सं. १६०३ तिर पाल्पाका राजा मणिमुकुन्द सेनले गोरखामा आङ्गनो

आधिपत्य स्थापित गरेका थिए ।^१ तर उनका सन्तानहरूले गोरखालाई आङ्गनो राज्यमा गाभ्न नसकेकाले स्थानीय शासकहरूले यसलाई स्वतन्त्र राज्य बनाए । गोरखाको पुराना इतिहासलाई हेर्दा विक्रमको सोह्रौं शताब्दीतिर गोरखाको वारपाक, सिरानचोक र लिगलिगजस्ता ठाउँहरूमा गुरुङ-मगरले राज्य गरेको देखिन्छ ।^२ ती ठाउँहरू सुचारुरूपले शासनव्यवस्था सञ्चालन गर्नुभन्दा उक्त मगर गुरुङ राजाहरूले मोजमज्जामा नै समय बिताउने गरेको देखिन्छ । यसैकारणले गर्दा तागाधारीहरूको धर्मपरम्पराको रक्षा हुन सकेको थिएन र उनीहरू अर्को राजाको खोजमा थिए । संयोग वश पछि पश्चिमको इस्मा भन्ने ठाउँमा जोतिष नारायणदास अर्याल गोसाइँकुण्डको स्नान गर्न जाँदा गोरखा कै हरिसिद्धि सापकोटा कहाँ बास बस्न पुगे । त्यसै बासबसाइका क्रममा उनले त्यहाँको यथार्थ जानकारी लिई अघि बढ्दै जाँदा छोप्राक भन्ने ठाउँमा गणेश पाण्डेको घरमा बास बस्न पुगे । यहाँ राजा फेर्ने बारेमा सल्लाह भयो । लमजुङका यथोब्रहमा शाहका कान्छा छोरा द्रव्य शाहको जन्म कुण्डलीमा राजयोग परेको कारणबाट उनैलाई राजा बनाउने निर्णय उनले गरे । यसरी लमजुङका राजा यथोब्रहमा शाहका कान्छा छोरा द्रव्य शाह लिगलिगमा दगुरेर राजा भए देखि नै गोरखा राज्यको शिलान्यास भएको हो । सोही योजनाबमोजिम लिगलिग कोटमा दसैंको टीकाका दिन राजा छान्ने प्रचलन रहेको देखिन्छ । त्यसपछि गोरखामा मगर राजाबाट सताइएका मगोर पन्त, गजानन भट्टराई, मुरलीधर खवास, गङ्घाराम राना आदिका सल्लाहले गोरखामा आक्रमण गरी वि.सं. १९१६ भाद्र कृष्ण अष्टमीका दिन द्रव्य शाह गोरखामा राजा भए । यसरी द्रव्य शाह गोरखामा राजा भएपछि निरन्तर द्रव्य शाहका उत्तराधिकारीहरूले यहाँ शासन गर्दै आएका छन् ।^३ यसै वंशजका उत्तरवर्ती राजा राम शाहले वि.सं. १९६३ देखि १९९३ सम्म गोरखा राज्यमा शासन

^१ बालचन्द्र शर्मा, नेपालको ऐतिहासिक रूपरेखा, (वाराणसी : कृष्णकुमारी, २०३३), पृ. १४१ ।

^२ पूर्ववत्, पृ. १४२ ।

^३ पूर्ववत् ।

चलाए ।^४ उनको सामाजिक सुधार र प्रजावात्सल्य ज्यादै चर्चा योग्य छ । यसैबाट न्याय हराए गोरखा जानू विद्या हराए काशी जानू भन्ने लोकोक्तिको जन्म हुन पुगेको हो । यिनै राजाहरूका वंशमा गोरखाका उत्तराधिकारी राजाका रूपमा श्री ५ पृथ्वीनारायण शाहको उदय भयो । उनको शासनकालमा विभिन्न राज्यमा विभाजित नेपाललाई एकै सूत्रमा आबद्ध गर्ने र विशाल नेपालको निर्माण गर्ने योजना उनले बनाए । उनीबाट छिन्नभिन्न भएको नेपाललाई एकीकृत गर्न एकीकरणको अभियान थालियो । सबै नेपालीहरूको सहयोगबाट नेपाल एकीकरणको कार्य पनि सफल भयो ।

२.३ भौगोलिक स्थिति

गोरखा जिल्ला नेपालका पाँच विकास क्षेत्र मध्येको पश्चिमाञ्चल विकास क्षेत्रको गण्डकी अञ्चलमा पर्दछ । राजधानी काठमाडौं देखि १४० कि.मि पश्चिम २७डू १५ देखि २८डू ४५ उत्तर अक्षांश र ८४डू २७ देखि ८८डू ५८ पूर्वी देशान्तर बीच यो जिल्ला अवस्थित छ ।^५ यस जिल्लालाई पूर्वतर्फ बूढीगण्डकी नदीले धादिङ जिल्लाबाट दक्षिण तर्फ त्रिशूली नदीले, चितवन जिल्लाबाट तथा मर्स्याङ्दी र चेपेले तनहुँ, लमजुङ् र मनाङ जिल्लाबाट अलग्याएका छन् । यस जिल्लाको क्षेत्रफल ३,६१० वर्ग कि.मि छ ।

गोरखा एक पहाडी जिल्ला हो । धरातलीय स्वरूप अनुसार यस जिल्लालाई हिमाली प्रदेश, लेकाली प्रदेश, पहाडी प्रदेश तथा बेसी र टार गरी चार भागमा विभाजन गर्न सकिन्छ ।^६ यस जिल्लाका दक्षिणी टारहरू समुन्द्री सतहबाट ५०० मिटर उचाइभन्दा पनि कम उचाइमा रहेका छन् भने उत्तर हिमश्रृङ्खलाको उचाइ ८,००० मिटरसम्मको छ । गोरखा जिल्लाको उपर्युक्त धरातलीय विभाजनअनुसारका विभिन्न भू-भागहरूको विशेषता निम्नानुसार छः-

^४ योगी, नरहरिनाथ, इतिहास प्रकाश, (अङ्क २, भाग ३), पृ. ४१९ ।

^५ मेचीदेखि महाकालीसम्म, भाग-३, सञ्चार मन्त्रालय सूचना विभाग, २०३१, पृ. ६० ।

^६ पूर्ववत्, पृ. ६०-६३ ।

२.३.१ हिमाली प्रदेश

यो प्रदेश बाह्रै महिना हिउँले ढाकिने प्रदेश हो । यो प्रदेश गोरखा जिल्लाको उत्तरी भागमा पर्दछ । यसको उचाइ ८,००० मिटर सम्मको छ । यस प्रदेशमा मुख्य हिमाली श्रृङ्खलाहरू मनासलु (८,५६३ मि.), बौद्ध हिमाल (६,६७२ मि.), गणेश हिमाल (७,४०६ मि.), हिमालचुली (७,८९३ मि.) रहेका छन् । यिनै हिमालबाट अविरल रूपमा बग्ने दरौंदी, चेपे र बूढी गण्डकी नदीले गोरखाली भूमिलाई हराभरा बनाएका छन् । पश्चिमी सीमाको रूपमा बगेको मर्स्याङ्दी तथा चेपे र पूर्वी सीमाको रूपमा बगेको बूढी गण्डकीले गोरखालाई दुई झ्याक पारेका छन् । वीचैबाट दरौंदी बगेको छ । यिनले गोरखा जिल्लालाई जलस्रोतको खानी नै बनाएका छन् । यस प्रदेशमा उत्तरी क्षेत्रका सामागाउँ, छेक्पार, ल्हो, विही चुन्चेतजस्ता गाउँ विकास समितिहरू पर्दछन् । यहाँ वर्षामा थोरै पानी पर्ने र हिउँदमा हिउँ पर्ने हुनाले ज्यादै जाडो हुन्छ । यहाँका मानिसहरू हिमालकै फेदीमा घर बनाएर बस्ने गर्दछन् । यस प्रदेशको जनघनत्व अपेक्षाकृत कम छ ।

२.३.२ भोट तथा लेकाली प्रदेश

यो प्रदेश समुन्द्र सतहदेखि १०,००० फिट भन्दा माथि र १५,००० फिटभन्दा तलको उचाइमा पर्दछ । यस प्रदेशमा मानिसहरू फाटफुट रूपमा बसोबास गरेका छन् । परापूर्वकालदेखि गोरखा हुँदै तिब्बत जाने भञ्ज्याङहरू लोर्के, ग्याला र सिर्दिबास यसै क्षेत्रमा पर्दछन् । गोरेटो बाटाका भरमा नै यस क्षेत्रका मानिसहरू आवतजावत गर्दछन् । एककिसिमले भन्ने हो भने यहाँको जनजीवन कठिन मात्र होइन अत्यासलाग्दो नै छ । यस क्षेत्रलाई हेर्दा कृषियोग्य जमिन एवं उद्योग व्यवसाय ज्यादै नगण्य रूपमा छ । मानिसहरू चौरी गाई पालेर ध्यू तथा छालाको व्यापार गर्ने गर्दछन् । धार्मिक दृष्टिकोणले अत्यन्त विख्यात र प्राकृतिक दृष्टिकोणले विछट्ट रमणीय दूधपोखरी, कल्छुमा ताल, नारदकुण्ड र तातोपानीजस्ता तालहरू यसै प्रदेशमा रहेको हुँदा तिनले गोरखाको सौन्दर्य बढाउन विशेष योगदान गरेका छन् ।

२.३.३ पहाडी प्रदेश

यो प्रदेश गोरखाको अत्याधिक जनघनत्व भएको प्रदेश हो । समुन्द्र सतहबाट ४,००० फिट देखि लगभग ८,००० फिटसम्म उचाइका भागलाई पहाडी प्रदेश नामकरण गरिएको छ । यातायातो सुविधा नहुँदाहुँदै र टारमा भन्दा खेतीयोग्य जमिन कम हुँदाहुँदै पनि रम्य हावापानीका कारणले यस भेगमा मानिसहरूको बसोबास बढी रहेको छ । गोरखा दरवार, बारपाककोट, सिरानचोक कोट र लिंगलिंगकोट आदिजस्ता गुफा, कोट र गुम्बाहरू यसै प्रदेशमा पर्दछन् ।

२.३.४ बेसी र टारहरू

गोरखाको दक्षिणी भेगमा रहेका २,००० फिटदेखि ३,००० फिटसम्मका भागहरू यसै प्रदेशमा पर्दछन् । च्याङ्लीटार, गाइखुरटार, पालुडटार, ध्वाकोटटार र देउरालीका टारहरू यसै भेगमा रहेका महत्वपूर्ण टारहरू हुन् । यस भागमा औलो एवं रोगव्याधिबाट तर्सैर पहिले धेरै मानिसहरू नबसेपनि औलो उन्मुलनपछि धेरै मानिसको बसोबास रहेको छ र विकास पनि भएको छ । यी टारहरूमा सिंचाइसुविधाका अभावले पहिले घैयाधान लगाइने गरेकाले घैयाटारका रूपमा पनि यी प्रसिद्ध छन् । ठूला टार, रातोमाटो र धेरै खेती गर्नुपर्ने भएकाले गोरखामा छोरी नदिनू सल्यानटारमा गोरु नदिनू जस्तो लोकोक्ति गोरखाली जनजिब्रामा टाँसिएको छ । यी टारहरू गोरखा जिल्लाका अन्नका भण्डार हुन् ।

२.४ हावापानी

समुन्द्र सतहबाट २२८ मिटरबाट सुरु भई ८,१६३ मिटर उचाइसम्म पुगेको गोरखाको धरातल विशेष खालको छ । त्यसकारण यहाँको हावापानी पनि विषम छ । यहाँका तल्ला भागमा पाइने टारहरू, बेसीहरू र नदीका खोंचहरूमा उष्ण हावापानी पाइन्छ । त्यसपछि तल्लो पहाडी धरातलमा समशीतोष्ण र क्रमशः शीतोष्ण हुँदै हिमाली वा लेकाली हावापानी पाइन्छ ।

२.५ नदीनाला

२.५.१ बूढीगण्डकी

यो नदी करिब ७,००० मिटर उचाइमा रहेको लार्के र ग्याला हिमभन्ज्याडबाट उत्पन्न भई गोरखा जिल्लाको पूर्वी सीमाबाट बग्दछ । यो नदी तथा यसका शाखा खोलाहरूले यस जिल्लाका धेरै फाँट र टारहरू हराभरा बनाएका छन् । यो नदी बेनीघाटमा पुगेर त्रिशूली नदीमा परिणत भएको छ ।

२.५.२ दरौँदी

दरौँदी नदी हिमालको काखमा पर्ने नारदकुण्डबाट निस्कई गोरखाको बीच भागबाट बग्दै खरैनीमाथि मभुवाघाटमा आई मिसिएको मह□वपूर्ण नदी हो । यसको उत्पत्ति रूपीलाला हिमभन्ज्याडबाट भएको भए पनि नारदकुण्डको पवित्र जलसमेत मिसिएकाले यस हिमनदीलाई पानीको मात्राका हिसाबले खोलो भनिए तापनि धर्मशास्त्रहरूमा धर्मनदी लेखिएको पाइन्छ । यही नाम अपभ्रंश भएर दरौँदी लेखिएको भन्ने परम्परा प्रचलित छ । यस नदीले गोरखा जिल्लालाई पूर्व र पश्चिम गरी दुई भागमा विभाजन गरेको छ ।

२.५.३ चेपे नदी

गोरखा र लमजुङको सिमानाका रूपमा रहेको चेपे नदी हिमालको दूधपोखरीबाट निःसृत हुन्छ । गोरखाका शाहवंशीय प्रथम राजा द्रव्य शाह तथा उनका दाजु लमजुङे राजा नरहरि शाहबीच पटक पटक हुने गरेको झडपलाई अन्त्य गर्न राजमाताले चेपेमा आङ्गनो दूध बगाएर दुबै छोरालाई चेपे नदी ननाग्ने धर्मवचनमा बाँधेकाले यो गोरखाको मह□वपूर्ण ऐतिहासिक नदी हो । यो नदी चेपेघाटनजिक पुगेर मस्यार्डदी नदीमा परिणत भएको छ ।

२.५.६ मस्यार्डदी

यो नदी मनाङ हिमाल हुँदै लमजुङको बीचबाट बग्दछ । यसले चेपेघाट पुगेर गोरखाको पश्चिमी सीमाको काम गरेको छ ।

उपर्युक्त प्रमुख नदीहरूबाहेक गोरखा जिल्लामा पर्ने अन्य खोलानालाहरू हुन् । केउमाल, हौडा, भालुवन, माछे, भुसेन्गे आदि ।^७

२.६ तालहरू

प्रकृतिको रमणीय स्थल गोरखामा धेरै ताल र हिमाली प्रदेशहरू नै छन् । गोरखाको प्रोक गा.वि.स.मा कल्छुमाताल, उहीया गा.वि.स.मा ठूलो दूधपोखरी ताल खरीबोट गा.वि.स. मा दूध पोखरी र बारपाक गा.वि.स.मा नारदकुण्ड ताल पर्दछन् । यी तालहरू धार्मिक दृष्टिले निकै महत्वपूर्ण तालहरूमा मानिन्छन् ।

२.६.१ दूधपोखरी

गोरखा जिल्लाको खरीबोट गा.वि.स.मा पर्ने दूध पोखरी चेपे नदीको उद्गम स्थल हो । यहाँको पानी दूधजस्तै सेतो भएकाले यसलाई दूधपोखरी भनिएको हो । यसलाई परापूर्व कालमा महादेवले स्नान गरेको पोखरीका रूपमा लिइन्छ । यहाँ जनैपूर्णिमाको दिन ठूलो मेला लाग्दा विभिन्न ठाउँबाट पुण्यप्राप्तिका अभिलाषा बोकेर यस ठाउँमा थुप्रै तीर्थयात्रीहरू आउने गर्दछन् ।

२.६.१ नारदकुण्ड

पौराणिक कालमा नारद ऋषिले यसै कुण्डमा आई स्नान गर्ने गरेकाले यसको नाम नारदकुण्ड रहन गएको हो भन्ने जनश्रुति छ । यो गोरखा जिल्लाको बारपाक गा.वि.स.मा पर्छ । यो दरौंदी नदीको मुहान हो । यस कुण्डमा पनि विशेष गरेर जनै पूर्णिमाकै दिनमा ठूलो मेला लाग्ने गर्दछ ।

२.७ गुफाहरू

गोरखा जिल्लामा गुफाहरू पनि प्रशस्त छन् । यहाँ विशेष नाम चलेका गुफाहरू बकेश्वरी गुफा, पार्वती गुफा र शृङ्गी गुफा हुन् । हाल स्वाँरामा पर्ने पार्वती गुफालाई पहिले पार्वतीले वासस्थान बनाएका हुनाले पार्वतीगुफा भनिएको हो भन्ने किंवदन्ती छ । मनकामना गा.वि.स.मा बकेश्वरीमाईको

^७ बयान बहादुर मास्के, गोरखा जिल्लाका केही तथ्याङ्क, **गोरखा शक्ति** (वर्ष १, अङ्क १, २०२९) पृ. ३२ ।

स्थान छ । केटो-केटी लाटा भएमा यस मन्दिरमा दर्शन गराएमा बोल्न सक्छन् भन्ने जनविश्वास छ । यस्तै गोरखाको उत्तरी क्षेत्रमा शृङ्गी गुफा छ ।

२.८ सामाजिक जीवन

२०५९ को जनगणनाअनुसार गोरखाको कुल जनसंख्या २,८८,१०१ मध्ये महिला १,५३,४२० र पुरुष १,३४,६९१ छन् । यस जिल्लामा विभिन्न जातजातिको बसोबास छ ।^५ गोरखाको उत्तरी भेगमा गुरुङ तथा भोटेहरू, बीच भागमा बाहुन, क्षेत्री, नेवार, मगर, दमाई, कामी, च्यामे, बराम, सार्की र तामाङ जातिहरू र दक्षिणमा कुमाललगायत अन्य जातिहरू बस्दछन् ।

रहनसहन र चालचलनको हिसाबले हेर्दा गोरखा जिल्लालाई सामाजिक अवस्थाको आधारमा दुई भागमा विभाजन गर्न सकिन्छ- उत्तरी वर्ग र दक्षिणी वर्ग । गोरखाको उत्तरी भेगमा गुरुङ तथा भोटेहरूको बसोबास रहेको छ । यस क्षेत्रमा नेपाली भाषा बोल्नेहरू कम छन् । गुरुङ र भोट भाषा नै यहाँ बोलिन्छन् । यिनीहरूको वेषभूषा पनि तिब्बतीसँग मिल्छ । यिनीहरू ल्होसार खुब रमाइलो गरी मनाउँछन् । गोरखाको बीच र दक्षिणी भेगमा प्रायः बाहुन, क्षेत्री, नेवार, कामी, दमाई, सार्की, गाइने, आदि जातिहरू बसोबास गर्दछन् । तिनीहरू प्रायः हिन्दू धर्म नै मान्दछन् । दसैं, तिहार, जनैपूर्णिमा आदि तिनका प्रमुख चाडपर्व हुन् । यस क्षेत्रमा बसोबास गर्ने पुरुषहरू भोटो, कछाड, इस्टकोट, टोपी लगाउँछन् भने महिलाहरू चौबन्दी चोलो र फरिया लगाउँछन् । यी मध्ये नेवारहरूले आफ्नो मातृभाषा बोलेपनि अरुसँग कुरा गर्दा नेपाली भाषामा मै प्रयोग गर्दछन् । यहाँ इसाईहरू पनि आङ्गनो परम्परा अनुसार चाडपर्व मनाउँछन् । यहाँ अझै पनि जातिगत विभेदको भावना पूर्ण रूपले हटिसकेको छैन । बढ्दो शिक्षा र राजनैतिक जागरणले यस तर्फ विस्तारै सुधारका सङ्केतहरू देखिन थालेका छन् ।

^५ केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागद्वारा प्रकाशित बुलेटिनअनुसार ।

२.९ मठमन्दिर तथा तीर्थस्थलहरू

गोरखा जिल्लामा बसोबास गर्ने मानिसहरूको आङ्गनै प्रकारको परम्परागत मान्यता र साँस्कृतिक पद्धति छ । गोरखामा परम्परादेखि नै प्रचलित रहेका अनेकौं तीर्थस्थलहरू पनि छन् र तिनले यहाँ धार्मिक तथा साँस्कृतिक जीवनपद्धतिको निर्माणमा महत्वपूर्ण भूमिका खेलेका छन् । गोरखामा अवस्थित मठमन्दिर तथा तीर्थस्थलहरू यस प्रकार छन्:-

२.९.१ गोरखनाथ बाबा

गोरखा पोखरीथोक बजारबाट उत्तरपट्टि बढ्दै जाँदा करिब आधा घण्टामाथि पूर्वपट्टिको डाँडामा गोरखनाथ बाबाको गुफा अवस्थित छ । त्यस गुफाभित्र वि.सं. ७५२ को एउटा शिलालेख छ । यो शिवदेवले कुँदेका थिए भनिन्छ । गोरखनाथ कैलाशकूटबाट वा नरेन्द्रदेवको राज्यबाट यहाँ आएका थिए भन्ने भनाइ छ । गोरखनाथ गोरखा आएपछि यहाँबाट फर्कन मानेनन् भन्ने किंवदन्ती पनि छ । यो गुफा पृथ्वीनारायण शाहको दरबारका नजिक पर्दछ । एकदिन पृथ्वीनारायण शाहले गोरखनाथको दर्शन पाएका थिए । गोरखनाथले दही मुखमा हाली ओकलेर पृथ्वीनारायण शाहलाई खान दिएका थिए । सो दही उनको मुखमा नपरी खुट्टामा परेकाले गोरखनाथले तिमी हिँडेजति राज्य आङ्गनो बनाउन सक्नेछौं भनेर आशीर्वाद दिएका थिए भन्ने किंवदन्ती पनि त्यत्तिकै प्रचलित छ । त्यसैले यहाँका मानिसहरू गोरखनाथप्रति ज्यादै भक्तिभाव राख्दछन् । गोरखनाथको दर्शन गर्न टाढा-टाढाबाट भक्तजनहरू आउँछन् । बडादसैंको अवसरमा राजदरबारबाट जमरा राख्ने प्रचलन पनि छ । नेपाली समाजले गोरखनाथलाई सहकालका देवता ठान्दछ । त्यसै कारणले गोरखनाथलाई रोट चढाउने चलन पनि छ ।^९

^९ युवा रेडक्रस, 'सदरमुकामलाई नियाल्दा' प्रयास (वर्ष १, अङ्क १, २०४७), पृ. १ ।

२.९.२ मनकामनादेवी

यो गोरखा जिल्लाका मनकामना गा.वि.स.मा पर्दछ । यस मन्दिरको स्थापना लखन थापाले गरेका हुन् । आज पनि उनकै सन्ततिले मनकामनाको पुजारीका रूपमा काम गर्दै आइरहेका छन् । राजा राम शाहकी रानीले मनकामनाको अवतार लिएको भन्ने ऐतिहासिक किंवदन्ती छ । मनले चिताएको वर पाइन्छ भन्ने भक्तजनहरूको विश्वासले यो मन्दिर ज्यादै प्रसिद्ध भएको छ । केही वर्ष अघि मात्रै कुरिनटारबाट मनकामना मन्दिरसम्म रञ्जुमार्ग (केवलकार) बनेपछि ३-४ घण्टाको उकालो बाटो १० मिनेटमै छोटिएको छ । यस मन्दिरमा हरेक दिन हजारौं दर्शनार्थी यात्रीहरू जाने गर्दछन् । मनकामनाको पूजा चलाउन सरकारी गुठी खडा गरिएको छ । यसैबाट प्रत्येक दिन पूजा सञ्चालन गरिन्छ ।^{१०}

२.९.३ कालिकादेवी

गोरखनाथको गुफाभन्दा उत्तरपट्टि कालिकाको मन्दिर छ । कालिकाको प्रत्यक्ष दर्शन शाहवंशीय राजाले गर्न सक्ने र अरुले ढोकाबाहिरबाटै गर्नुपर्ने धार्मिक परम्परा छ । कालिका मन्दिर पनि यस क्षेत्रको प्रमुख तीर्थस्थल मानिन्छ । कालिकाको मन्दिरमा प्रत्येक अष्टमीमा राँगा, बोका, आदिको बलि चढाइन्छ ।^{११}

श्री ५ पृथ्वीनारायण शाहले यी तीन मह□वपूर्ण देवीहरूको वर्णन गर्दै गुरु गोरखनाथको वरदान र कालिका तथा मनकामनाको शक्तिबाट आफूले नेपाल एकीकरणको अभियानमा सफलता पाएको चर्चा गरेका छन् । उनले यिनको पूजाआजामा त्रुटि भएमा गाथगादीमा समेत बाधा पर्न जाने विचार व्यक्त गरेका छन् ।^{१२} उनका यी उद्गारबाट गोरखनाथ, कालिका र मनकामनाप्रतिको परम्परागत जनआस्था स्वतः स्पष्ट हुन्छ ।

^{१०} बयानबहादुर मास्के, पूर्ववत्, पृ. १० ।

^{११} पूर्ववत्, पृ. १० ।

^{१२} सूर्यनाथ अर्यालबाट प्राप्त जानकारी ।

२.९.४ गोरखादरबार

गोरखा धर्म, संस्कृति कला आदिका दृष्टिले समुन्नत क्षेत्र हो । यहाँका दरबार, मन्दिर र पाटी पौवामा कुँदिएका कलासंस्कृतिका अनुपम नमुनाहरू पाइन्छन् । गोरखादरबार कलाकृतिका दृष्टिले निकै महत्वपूर्ण छ । साथै नेपाल एकीकरणकर्ता पृथ्वीनारायण शाहको जन्म यसै दरबारमा भएकाले यो ऐतिहासिक स्थलका रूपमा चर्चित छ । यो दरबार पृथ्वीनारायण नगरपालिकामा पर्दछ । यो दरबार पृथ्वीनारायण शाहका बाजे पृथ्वीपतिले बनाएका हुन् ।^{१३}

२.१० आर्थिक अवस्था

आर्थिक दृष्टिले गोरखा जिल्लाको त्यति विकास हुन सकेको छैन । भौगोलिक विकटता, सडक यातायातको असुविधा तथा भौतिक र मानवीय स्रोतको परिचालनको अभावका कारणले गोरखामा सन्तोषजनक रूपमा आर्थिक विकास हुन नसकेको देखिन्छ । यो जिल्ला बेसी र टार भाग थोरै भएकाले कृषि-उत्पादनका दृष्टिले पछि परेको छ । लेकाली, पहाडी र उपत्यकाका भागहरूमा खेतीपाती राम्रै हुन्छ । गोरखाका कतिपय युवाहरू मलाया, सिङ्गापुर, हङ्कङ र भारतमा सैनिक सेवामा संलग्न छन् । कतिपय मानिसहरू गाउँका स्थानीय बजारमा व्यापार गर्दछन् । कतिपय पढेलेखेका मानिसहरू नेपालको सरकारी सेवा र शिक्षणसेवामा संलग्न छन् । उद्योग, कलकारखाना र विकासका दृष्टिले यो जिल्ला पछि परेको जिल्ला हो तापनि केही उद्योग-विकासका आधार भन्ने विद्यमान छन् । गोरखाका मुख्य उद्योगहरूमा गोरखकाली रबर उद्योग, यातायात प्रतिष्ठान, केबुलकार, घरेलु तथा साना उद्योग (दर्ता ६९०), मनासलु कागज उद्योग (आरुघाट), गोरखा आयुर्वेदिक उद्योग प्रा.लि. आदि सञ्चालित छन् ।^{१४}

^{१३} बयानबहादुर मास्के, पूर्ववत्, पृ ३-४ ।

^{१४} उद्योग वाणिज्य संघ, गोरखाको बुलेटिनअनुसार ।

कुनै पनि ठाउँको विकासको आधार बाटोघाटो नै हो । यस दृष्टिले गोरखामा आँबुखैरेनीबाट गोरखाको पोखरीथोकसम्म जाने कालोपत्रे बाटो बनेको छ । त्यस्तै बेनीघाट-आरुघाट-आरखेत हरितसडक बनेको छ । कृषि सडकका रूपमा बिरेन्चोक-वक्राड-मनकामना, बुङकोट गैरीचौतारा-क्यामुन्टार, अश्राड-दमै चौतारा-गुफाडाँडा मोहोरिया, घ्याम्पेसाल-मसेल-निबेल, कोया भन्ज्याड-धावा, बिर्दी-सेरा, बुङकोट रामेश्वरी-बराहफाँट, सातदोबाटो-निबेल फाँटसम्म आवतजावत गर्न सडक बनेका छन् ।^{१४}

गोरखाका प्रमुख व्यापार केन्द्रहरू पोखरीथोक, बारपाक, आरुघाट, ठाँटीपोखरी, आँपपीपल, गाईखुर, मिरकोट आदि हुन् । गोरखाको आर्थिक विकास गर्न यहाँका टारहरूमा सिंचाइ-सुविधा पुऱ्याउन बाञ्छनीय छ । पहाडी क्षेत्रमा फलफूल खेती गर्न प्रेरणा दिई बजार व्यवस्था मिलाउन सकेमा र हिमाली क्षेत्रमा चरन व्यवस्था मिलाई भेडाच्याङ्ग्रा पालनव्यवस्थालाई उत्प्रेरित गर्न सकेमा यहाँका बढ्दो बेरोजगारी हटाउन सकिन्छ । त्यस्तै ठाउँ हेरि दुग्ध उत्पादन, मौरीपालन, राडीपाखी उद्योग, निगालो बाँसका सामान बनाउने उद्योग तथा घरेलु उद्योगलाई प्रोत्साहन गर्न सकेमा यहाँको आर्थिक स्थितिलाई बलियो बनाउन सकिन्छ ।

२.११ शैक्षिक अवस्था

गण्डकी अञ्चलका पाँच जिल्लाहरूमध्ये गोरखा पहिलेदेखि नै शैक्षिक गतिविधिका रूपले अगाडि पर्दै आएको छ । यहाँ संस्कृत पठनपाठनको परम्परा निकै पहिलेदेखि विद्यमान थियो । अभ्र पृथ्वीनारायण शाह गोरखाका राजा भइसकेपछि उनले बनारस, मकवानपुर, काठमाडौं आउँदाजाँदा शिक्षाको महत्त्व बुझेका थिए । त्यसैले गर्दा उनको दरबारमा विद्वान्हरूको निकै सम्मान

हुन्थ्यो । यसो त उनका पुर्खा राजा राम शाहले गोरखाबाटै न्यायपूर्ण शासनको बीजारोपण गरेबाट पनि गोरखामा निकै पहिलेदेखि नै शैक्षिक सजगता कायम

^{१४} सडक विभाग तथा सम्बन्धित जिल्ला कार्यालयबाट प्राप्त जानकारी ।

रहुँदै आएको बुझिन्छ । नेपालको एकीकरणपछि, राणाशासनको समयबधिमा गोरखाको शैक्षिक परम्परा त्यति विकास भएन । २००७ सालपूर्व यस जिल्लामा शिक्षाको ज्योति छर्ने संस्कृत पाठशालाका रूपमा बक्राडमा सञ्चालित पं. गायत्री गणेश अर्ज्यालको संस्कृत पाठशाला र मनकामनास्थित संस्कृत पाठशालाको नाम लिन सकिन्छ । त्यस्तै गोरखाका लिगलिग, लप्सीबोट र तान्द्राडमा रहेका संस्कृत विद्यालयले पनि गोरखाका शैक्षिक विकासमा महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेका छन् ।

२००७ साल फागुन १० गते स्थापित हाल पृथ्वीनारायण न.पा. ७ कट्टेल डाँडास्थित सूर्योदय प्रा.वि. गोरखाको पहिलो औपचारिक रूपमा स्थापित विद्यालय हो । त्यसपछि लगतै सदरमुकाममा २००९ मा शक्ति मा.वि.को स्थापना भयो । त्यसपछि लुङ्गटेल, आरुघाट, लप्सीबोट, घ्याम्पेसाल आदि ठाउँमा पनि विद्यालय स्थापित गरिए । हाल गोरखामा ७० वटा मा.वि., ४३ वटा नि.मा.वि. र ३८२ वटा प्रा.वि. रहेका छन् । यी विद्यालयहरूमा हाल ९२,९३५ जना छात्रछात्राहरू अध्ययन गरिरहेका छन् । यसैगरी यी विद्यालयहरूमा जम्मा २,०२३ शिक्षकशिक्षिकाहरू अध्यापन कार्यमा संलग्न रहेका छन् ।

गोरखा जिल्लाका २०४५ सालदेखि त्रिभुवन विश्वविद्यालय, शिक्षाशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत स्थापित प्रमाणपत्र तहको कक्षा सुरु भयो । यस क्याम्पसमा हाल स्नातक तहसम्म पढाइ हुन्छ । त्यस्तै वि.सं. २०४० देखि यता यस जिल्लामा जनस्तरमा स्नातक तहसम्मको पढाइ हुने क्याम्पस पनि सञ्चालन हुँदै आएको छ । यस जिल्लामा हाल मानविकी र व्यवस्थापन विषयहरूमा स्नातक तहसम्मको पढाइ हुन्छ । वि.सं. २०४० देखि २०५८ सम्ममा गोरखाका विभिन्न स्थानमा १०+२ कक्षाहरू पनि सञ्चालन हुँदै आएका छन् ।

यसरी गोरखा शैक्षिक जागरणका दृष्टिले अघि बढेका कारणले यस जिल्लाबाट राष्ट्रिय स्तरका राजनैतिक कार्यकर्ताहरू, कूटनीतिज्ञहरू, चिकित्सकहरू र प्रशासनिक व्यक्तिहरू उल्लेख्य रूपमा देखा परेका छन् ।

शैक्षिक जागरणका कारणले यस क्षेत्रबाट सिर्जनशील व्यक्तिहरू पनि प्रशस्त देखापरका छन्।^{१६}

२.१२ लोकसाहित्यको अवस्था

नेपाल एकीकरणभन्दा अघिदेखि नै गोरखा मूलतः नेपाली भाषाभाषिकै क्षेत्र हो । नेपाली भाषाको लोकसाहित्य नै यहाँको लोकसाहित्य पनि हो । यस जिल्लामा नेपालीबाहेक अन्य भाषाभाषीहरू पनि छन् तापनि यहाँ नेपाली भाषाभाषी समाजमा प्रचलित लोकसाहित्यका बारेमा मात्र चर्चा गरिएको छ ।

गोरखामा नेपाली भाषाभाषीहरू हालका कर्णाली अञ्चलको सिंजा प्रदेशबाट आएका हुन् भन्ने भनाइ रहेको छ । सिंजाको राज्यस्थापना गर्ने खसहरूनै थिए । विक्रमको सोह्रौँ शताब्दीतिर खारी प्रदेशका नाग राजाले जुम्लामा अधिकार जमाई जुम्लालाई ग्रीष्मकालीन राजधानी र दुल्लुलाई शीतकालीन राजधानी बनाए । यिनै खस राज्यका उत्तराधिकारीहरू क्राचल्ल र अशोक चल्ल हुँदै आदित्य मल्लका पालासम्म आइपुग्दा सिंजा राज्य उत्तरमा ताघवाइ गुम्बा र दक्षिणमा खारी प्रदेश तथा पूर्वमा गोरखा र दक्षिणमा कुमाउ र गढवालसम्म फैलिएको थियो।^{१७} भौगोलिक दृष्टिले विस्तारित सिंजा राज्यका प्रमुख दुई भाग थिए:- जडान र खसान । जडानमा भोटे भाषा र खसानमा खस भाषा बोलिन्थ्यो । पछि पन्ध्रौँ शताब्दीतिर अभय मल्लका पालामा यो सिंजा राज्यका टुक्रिएर बाइसे चौबीसे राज्यहरूको निर्माण भयो । यही प्राचीन सिंजा राज्यका खसहरूले बोल्ने भाषा नै नेपालको पूर्वी क्षेत्रमा विस्तारित हुँदै गयो । श्री ५ पृथ्वीनारायण शाहको शासनकालमा नेपाल-एकीकरण प्रक्रिया थालिएपछि एकीकृत आधुनिक नेपालको राष्ट्रभाषाका रूपमा खसभाषा वा नेपाली भाषाको विस्तारको क्रम व्यापक हुँदै गयो । हाल गोरखामा बोलिने

^{१६} नेपाल सरकार, जिल्ला शिक्षा कार्यालय, गोरखाबाट प्राप्त जानकारी ।

^{१७} पूर्ववत्, पृ. ४० ।

नेपाली भाषा नेपालको पूर्वेली भाषिका अन्तर्गत पर्दछ । यसको विस्तार पूर्वमा दार्जिलिङ, आसाम र सिक्किमसम्म भएको छ ।^{१८}

नेपाली भाषाको साहित्य प्रथमतः मौखिक परम्पराद्वारा कथ्य स्तरमा विकसित हुँदै आएको हो । विक्रमको एघारौँ शताब्दीदेखिका नेपाली भाषामा लेखिएका अभिलेख- शिलालेखजस्ता पुराना सामग्रीहरू फेला परेका छन् । तापनि नेपाली भाषाका प्राचीन लेख्य साहित्य सामग्री भने विक्रमको एघारौँ शताब्दीपछिका मात्र फेला परेका छन् । यस अघि विक्रमको एघारौँदेखि अठारौँ शताब्दीसम्मका अवधिमा नेपाली लोकजीवनका कथ्य स्तरमा साहित्यिक परम्परा विकसित भएको पाइन्छ । परापूर्वकालदेखि नै नेपाली समाजमा प्रचलित लोकसाहित्यलाई पनि प्रादेशिकताका आधारमा तीनभागमा बाँड्न सकिन्छ : (क) कर्णाली प्रदेशको लोकसाहित्य, (ख) डोटी प्रदेशको लोकसाहित्य, (ग) पूर्वी नेपालको लोकसाहित्य ।^{१९}

नेपाल-एकीकरण अघिदेखि नै गोरखा नेपाली भाषा-भाषीको क्षेत्र हो । त्यसैले यस क्षेत्रमा परम्परादेखि नेपाली लोकसाहित्यको समृद्ध भण्डार कायम रहि आएको छ । यस जिल्लामा प्राप्त गर्न सकिने लोकसाहित्यका मुख्य सामग्रीहरू छन्: खाँडो, जुवारी, घाँसे गीत, तीजे गीत, ठाडो भाका, भजन, साँगिनी असार, मालश्री, गोडेलो, भदौरे, मंसिरे, देउसी, भैलो, कर्खा, सवाई, लहरी, सोरठी, घाँटु, बालुन, चुड्का, रत्यौली, महाल, गाउँखाने कथा, लाखे नाच, हनुमान नाच, बाँदरे नाच, कोइले नाच, सरस्वती नाच, उखान टुक्का आदि ।

गोरखाको लोकजीवनसँग सम्बन्धित उपर्युक्त लोकसाहित्यिक सामग्रीलाई निम्नानुसार वर्गीकरण गरेर विवेचना गर्न सकिन्छ:-

^{१८} पूर्ववत्, पृ. ४७ ।

^{१९} बासुदेव त्रिपाठी र अन्य (सम्पा.) नेपाली कविता भाग ४, (काठमाडौँ: साभा प्रकाशन, २०४६), पृ. १०४ ।

२.१२.१ लोकगीत

लोकसाहित्यका विभिन्न विधाहरूमध्ये ज्यादै चर्चित र प्रिय विधाको रूपमा लोकगीतलाई लिन सकिन्छ । भाषाको उत्पत्तिसँगै लोकगीतको पनि उत्पत्ति भएको मान्न सकिन्छ । लोकगीत लोकजीवनको अभिन्न अङ्ग हो । लोकगीत लोकमा गाइने साङ्गीतिक अभिव्यक्ति हो । लोकगीतको सुरिलो भाकाले ग्रामीण भेगका डाँडा-पाखा, खोला-नाला, अनि गुफा कन्दरा घन्काइरहेको हुन्छ । मानवजीवनका दुःख-सुख अनि हाँसो-आँसु पनि लोकगीतबाट नै अभिव्यक्त भएका हुन्छन् । गाउँका मानिसहरू घाँस काट्न जाँदा होस् वा पँधेरा जाँदा होस् अनि उकाली चढ्दा होस् वा ओराली भर्दा आङ्गना मनका बहहरू लोकगीतका भाकामा पोख्दै हिँडिरहेका हुन्छन् यस्ता लोकगीतहरू समाजमा पुस्तौँपुस्तादेखि हस्तान्तरित हुँदै आएका छन् । लय वा भाका मिलाएर गाइने यस्ता गीतहरूले मानिसको मुटु नै छोएको हुन्छ । यस्ता लोकगीतहरू बाह्रै महिना गाएर मनोरञ्जन लिने गरिन्छ । गोरखाली जनजीवनमा संस्कारगीत, कर्मगीत, पर्वगीत, बाह्रमासेगीत आदि विभिन्न प्रकारका लोकगीतहरू पाइन्छन् ।

२.१२.२ लोककथा

लोकसाहित्यको अर्को प्रमुख विधा लोककथा हो । लोकले सजिलै बुझ्न सक्ने सरल सम्प्रेष्य भाषामा भनिने कथाहरू नै लोककथाहरू हुन् । लोककथाको प्राचीनता खोज्दै जाँदा भाषाको उत्पत्तिसम्म पुग्नुपर्ने हुन्छ । त्यसैले लोककथा प्राचीनकालदेखि नै एक पुस्ताबाट अर्को पुस्ता हुँदै मौखिक रूपमा हस्तान्तरित हुँदै आएको विधा हो । लोककथाले मानिसलाई थकित अवस्थामा पनि मनोरञ्जन प्रदान गर्दछ । मानव र मानवेतर दुबै खालका पात्र हुने यस्ता कथाहरू पनि स्थान र समयअनुसार फरक-फरक हुने गरेको पाइन्छ । त्यस्ता केही लोककथाहरूमा चङ्ख बुहारीको कथा, भुर् महाराज ! भुर् महाराज, ढल्के चौरातो आदि हुन् ।

२.१२.३ लोकगाथा

लोकसाहित्यका विभिन्न विधाहरूमध्ये लोकगाथा पनि एउटा विधा हो । लोकगाथा परम्परादेखि चल्दै आएको श्रुतिपरम्परामा बाँधिएको कथात्मक गीत हो । यस्ता गाथाहरू भाका हालेर गाउने गरिन्छ । यस्ता गाथामा आख्यान प्रस्तुत गरिन्छ । समाजमा यस्ता लोकगाथाको आङ्गनै महत्त्व रहेको हुन्छ । लोकगाथाहरू पनि विभिन्न प्रकारका पाइन्छन् । लोकगाथाहरू पूर्वमेची देखि पश्चिम महाकालीसम्म नै प्रचलनमा रहेका छन् । लोकगाथाहरू छोटो र लामा दुवै खालका हुन्छन् ।

२.१२.४ लोकनाटक

लोकनाटक लोकसाहित्यको अभिनयमूलक विधा हो । लोकमा प्रचलित लोकगीत र लोकसङ्गीतसँग अभिनय गरिने विधा नै लोकनाटक हो । लोकनाटकमा लोकभावनाको अभिव्यक्ति हुन्छ । लोकनाटक परम्परा र रूढिमा आधारित हुन्छ । यसमा शास्त्रीय नियमहरूको आवश्यकता पर्दैन र नाटक देखाउने मञ्च पनि लोकशैलीकै हुन्छ । मञ्चमा कुनै साजसज्जा हुँदैन । त्यसैले गाउँघरका पाटी-पौवा, चौतारी र सहरका चोक आदि ठाउँमा यस्ता लोकनाटकहरू देखाउने गरिन्छ । वैदिक साहित्यदेखि सुरु भएको नाटकलाई पञ्चम वेद पनि भन्ने गरिएको पाइन्छ । आङ्गिक प्रदर्शनबाट मनोरञ्जन प्राप्त गरिने यस्ता नाटकहरू स्थान र समयअनुसार फरकफरक पाइन्छन् । गोरखा जिल्लामा परम्परादेखि बालुन, घाँटुजस्ता लोकनाटकहरू प्रचलित रहेका छन् । गोरखाको उत्तरी क्षेत्रमा बसोबास गर्ने गुरुङ जातिका बीच घाँटु नाँच विशेष लोकप्रिय रहेको छ ।

२.१२.५ उखान-टुक्का

उखान-टुक्का लोकसाहित्यका एउटा प्रमुख विधा हो । कथनलाई तीव्रतर र प्रभावोत्पादक बनाउन उखानले प्रमुख भूमिका खेल्दछ । पुस्तौपुस्तौदेखि मौखिक रूपमा हस्तान्तरित हुँदै आएका उखानहरू अनुभवले खारिएका

मानिसका वाणी हुन् । जस्तै: तैं रानी मै रानी कसले भर्छ कुवाको पानी, बाँदरको हातमा नरिवल । त्यस्तै टुक्काहरू प्रायः अनुभवले खारिएका बूढापाकाका मुखबाट नै सुन्ने गरिन्छ । जस्तै: नाक काट्नु, आँखा तर्नु, हाम फाल्नु आदि । उखानले भैं टुक्काले पनि सीधा अर्थलाई छाडेर लक्ष्यार्थ प्रदान गर्दछ ।

२.१२.६ गाउँखाने कथा

गोरखा जिल्लामा प्रचलित लोकसाहित्यका विभिन्न विधामध्ये गाउँखाने कथा पनि एउटा मनोरञ्जनात्मक विधा हो । मानिसले गाउँखाने कथाहरू प्राचीन समयदेखि नै सुख-दुःखका क्षणमा जिज्ञासा र मनोरञ्जन व्यक्त गर्ने अनि समय बिताउने साधनका रूपमा प्रयोग गर्दै आएको पाइन्छ । गाउँखाने कथालाई अड्को थाप्नु पनि भनिन्छ । यसले मानिसको बुद्धिको परीक्षण पनि गर्छ । मनोरञ्जनको रूपमा सुरु भएको गाउँखाने कथामा प्रश्नकर्ताले प्रश्न सोधेर उत्तरको अपेक्षा गर्दछ । श्रोताले उत्तरदिन नसकेमा प्रश्नकर्तालाई गाउँ दिनुपर्दछ, तब मात्र प्रश्नकर्ताले उत्तर बताइदिन्छ । जस्तै-

सानी नानीको मीठो भान्सा के हो ? (मह र मौरी)

मैले हेरे त्यसले हेर्छ, जे जे गयो त्यही गर्छ, के हो ? (ऐना)

२.१३ निष्कर्ष

गोरखा एक जिल्ला मात्रै नभएर नेपाल एकीकरणको केन्द्रविन्दु राष्ट्रिय एकताको प्रतीक तथा चार जात छत्तीस वर्णको साभा फूलवारीको ब्याड नै हो । यो प्रजातान्त्रिक तथा न्यायिक राजाहरूको राज्य, अदम्य साहसी योद्धा एवम् राष्ट्रिय विभूति कालु पाँडे, भीमसेन थापा र असरसिंह थापाहरूको जन्मभूमि हो । यसको ऐतिहासिक, धार्मिक राजनैतिक एवम् पर्यटकीय महत्व रहेको छ । हामी नेपालीहरूको ढुकढुकीले देशविदेशमा यसको गौरव गीत गाएको छ । यस्तै गौरवमय र ऐतिहासिक जिल्लाको रूपमा गोरखा रहेको छ ।

यस जिल्लामा लोकनाटक, लोककथा, लोकगाथा, उखान, टुक्का, लोकगीत आदि लोकसाहित्यका विभिन्न विधा प्रचलित रहेका छन् । तसर्थ: यो जिल्ला लोकसाहित्यका दृष्टिले समेत धनी छ ।

तेस्रो परिच्छेद

टुक्काको सैद्धान्तिक अध्ययन र नेपाली टुक्का

३.१ परिचय

लोकसाहित्य युगौंदेखि लोकविश्वासमा जीवित लोककै सोपानमा आउने साहित्य हो । लोकसाहित्यका विधामा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, उखान-टुक्का र गाउँखाने कथा पर्दछन् । यी मध्ये टुक्का लोकोक्तिका रूपमा आउने एक महत्वपूर्ण विधा हो । 'टुक्का' शब्द 'टुक' शब्दबाट आएको हो र यसको अर्थ वाच्यार्थलाई हेर्दै लक्ष्यार्थ हुँदै व्यङ्ग्यार्थ ध्वनित भन्ने हो ।^{२०} बोलीमा लाक्षणिक तथा विशेष अर्थ प्रयोग हुने वाक्यको एउटा अंश वा पदसमूहलाई 'टुक्का' भनिन्छ । पदसमूह खास-खास क्रियामा त्यस्तै किसिमका शब्दहरू लागेर निर्मित हुने गर्छन् र तिनले विशेष अर्थ वहन गरी अभिव्यक्तिको रूप लिन्छन् । 'टुक्का' शब्द भरौं नेपाली शब्द हो । विभिन्न भाषामा यो भिन्नभिन्न नामले चिनिन्छ । हिन्दी भाषामा टुक्कालाई 'मुहावरा' भनिन्छ । यसलाई उर्दूमा 'मुहाबरा', संस्कृतमा वाक्पद्धति, वाग्रीति, वाग्धारा र रमणीयार्थ भनिन्छ भने अंग्रेजी भाषामा यसलाई 'इडियम' भनिन्छ । लोकसाहित्यका विभिन्न विधाहरूमध्ये 'टुक्का' लोकोक्तिका क्रममा आउने एक महत्वपूर्ण विधा हो । यसले भाषालाई परिपक्व, समृद्ध र ओजपूर्ण बनाएको हुन्छ । लेख्य भाषा होस् या कथ्य भाषा होस् टुक्काको प्रयोगबाट स्वादिलो बन्न पुग्दछ । त्यसैले 'टुक्का' भाषाको महत्वपूर्ण आधार हो ।

'टुक्का' भाषा वा वाक्यमा बोलिने अपूर्ण वाक्यखण्ड वा अपूर्ण पदावली हो । टुक्काले वाक्यसंरचनालाई ओजपूर्ण र अर्थलाई गहन एवं गम्भीर

^{२०} कृष्णप्रसाद, पराजुली, नेपाली लोकगीतको आलोक (काठमाडौं: वीणा प्रकाशन, २०५७), पृ. ५७ ।

बनाएको हुन्छ । टुक्काको प्रयोग बिना वाक्य निरसिलो र निरर्थक बन्दछ, भने टुक्का एकलै अपूर्ण नै रहन्छ । वाक्यले टुक्काको अपेक्षा राख्दछ, भने टुक्का वाक्यमा प्रयोग नभएसम्म आङ्गनो अर्थ पदान गर्न सक्दैन । त्यसैले भाषामा आउने वाक्य र टुक्का एक-आपसमा परिपूरक हुन् । टुक्कालाई भाषाको ओज र शरीर माने हुन्छ । वाक्यमा हुने प्रयोग र अनुभवबाट आर्जित ज्ञान यिनको पृष्ठभूमिमा रहन्छ । यसैकारणले यिनको प्रयोगले भाषा मार्मिक, सरस र सजीव हुनाका साथै प्रवाहपूर्ण पनि हुन्छ । उखान-टुक्काले सम्पन्न नभएको भाषा कहिल्यै पनि फस्टाउन सक्दैन । यसकारण रचनामा यी दुवैको महत्वपूर्ण स्थान रहेको हुन्छ ।^{१९} त्यसैले टुक्का भाषाको आत्मा हो जो लोकजनविश्वासबाट वर्षौंदेखि खारिएर आएका हुन् ।

टुक्काले साधारण र विशेष गरी दुवै अर्थ लिन्छन् । जस्तै: 'माटो खानु' को सामान्य अर्थ माटो खानु भन्ने बुझिन्छ, तर यसको विशेष अर्थ मर्नु हो । टुक्काले विशेष गरी लाक्षणिक अर्थ प्रदान गर्दछ । टुक्काले आफू एकलैले विशेष अर्थ दिन सक्दैन । यसले विशेष अर्थ ग्रहण गर्नाका लागि वाक्यमा अनिवार्य रूपमा प्रयोग हुनै पर्दछ ।

“वाक्यका स्तरमा निहित लाक्षणिक र व्यञ्जनात्मक अर्थका सम्भावनाहरूलाई टुक्काले प्रस्तुत गर्दछ । टुक्का आख्यानात्मक विम्ब ग्रहण गर्न लघुत्तम वाक्यांशहरूमा अभिव्यक्त हुने लोकोक्ति विशेष हो । सूक्ष्मातिसूक्ष्म लोकाख्यान विशेष पनि हो भनिन्छ ।”^{२०} टुक्काहरू पदगत र वाक्यांशगत भएर पनि वाक्यभन्दा साना हुन्छन्; पदावलीभन्दा ठूला वाक्यहरूका अंशका रूपमा रहने गर्दछन् । टुक्का कुनै भाषा व्यक्ति बोलीमा लाक्षणिक अथवा विशेष अर्थमा प्रयोग हुने पदसमूह हो । त्यस्तो पदसमूह प्रायः खास-खास शब्दहरूमा खास-खास क्रियाको मेल भई निर्मित हुन्छन् र तिनले विशेष अर्थ व्यक्त गर्दछन् । टुक्काहरूभन्दा बाहेक अन्य ठाउँमा टुक्काको अङ्ग भएर रहेका शब्द र क्रियाका

^{१९} कृष्णप्रसाद पराजुली, **राम्रो रचना मीठो नेपाली**, एक्काइसौं संस्करण, (काठमाडौं : सहयोगी प्रेस २०५५), पृ. १८१ ।

^{२०} राजेन्द्र सुवेदी, **प्राथमिक र माध्यमिक नेपाली साहित्यको रूपरेखा** (काठमाडौं: पाठ्यसामग्री प्रकाशन २०५५), पृ. ३ ।

आ-आङ्गनै छुट्टाछुट्टै अर्थ हुन्छन् । ती दुवै एकै ठाउँमा उनिएपछि भने टुक्काले विशेष अर्थ ग्रहण गर्दछ ।^{२३}

टुक्काहरूको आविष्कार र निर्माण अशिक्षित, निरक्षर तर अनुभवी व्यक्तिहरूबाट भएको मान्न सकिन्छ । टुक्काहरू पुराना लोकसम्पत्तिहरू हुन् । “लोकप्रसिद्ध उक्ति नै लोकोक्ति वा उखान हो जो वाक्यमा प्रयोग नभए पनि स्पष्ट चिनिन्छ । टुक्का लोकप्रसिद्ध भए पनि, विशेष अर्थ लाग्ने भए पनि वाक्यमा प्रयोग गरिनुपर्छ अनि मात्र ती पूर्ण हुन्छन्, स्पष्ट हुन्छन् । टुक्का उखानभन्दा भिन्न हुन्छ । उखान आफैमा पूर्ण पुरानो घटना वा कथा कथनबाट सम्झाउनी रूपमा रहेको एक महत्वपूर्ण शिक्षाप्रद उद्गार वा अंश हो । टुक्का कुनै पद, पदसमूह वा वाक्यांश हो, जो वाच्यार्थ प्रधान नभएर विशेष अर्थ वा लाक्षणिक अर्थमा रुढ भएको हुन्छ जसलाई वाक्यमा प्रयोग गर्नु आवश्यक

छ ।”^{२४}

टुक्काको प्रयोग प्रसङ्गानुसार हुन्छ । एउटै टुक्का पनि अनेक ठाउँमा प्रयोग हुन सक्दछ र यसले सामान्य अर्थभन्दा विशेष अर्थ नै बहन गरेको हुन्छ । जस्तै : ‘गम खानु’ टुक्काको सामान्य अर्थ निस्कन सक्दैन र निकाल्न खोजे पनि ‘गम’ खाने वस्तु होइन । यो भावनात्मक कुरा हो । यसको विशेष अर्थ खोज्दा दुःख वा पीडा हुन्छ र ‘खानु’ को अर्थ भोग्नु हुन्छ । यस टुक्काको विशेष अर्थ खोज्दा दुःख सहनु भन्ने हुन्छ । यसलाई पनि वाक्यमा प्रयोग नगरीकन विशेष अर्थ स्पष्ट हुनसक्दैन । यसलाई वाक्यमा प्रयोग गर्दा “कयौं नेपालीहरू विदेशमा ‘गम खाएर’ बाँच्न विवश छन्” भन्ने वाक्यमा प्रयोग भएपछि यस टुक्काको अर्थ स्पष्ट हुन्छ । अतः टुक्काहरू भाषाका महत्वपूर्ण अङ्ग हुन्, जसलाई परिपक्व र समृद्ध बनाएका हुन्छन् । तिनले अर्थमा चमत्कार, सरलता र सरसता थपेका हुन्छन् ।

^{२३} कृष्णप्रसाद पराजुली, **भाषाको माया** (काठमाडौं: रत्न पुस्तक भण्डार, २०४४), पृ. ९८ ।

^{२४} चूडामणि रेग्मी, **नेपाली टुक्काको अध्ययन** (भापा : चन्द्रगढी, २०४१), पृ. २१ ।

३.२ टुक्काको परिभाषा

मानव जातिको विकाससँगै लोकसाहित्यको विकास भए तापनि यसको अध्ययनको परम्परा निकै पछि मात्र आएर सुरु भएको हो । लोकसाहित्यको अध्ययन-परम्पराको थालनी भएपछि मात्र लोकसाहित्यका विभिन्न पक्षहरूलाई विभाजन गरेर नाम र परिभाषा दिन थालिएको हो । लोकसाहित्यको एउटा विधा टुक्काका बारेमा पनि विभिन्न विद्वान्हरूले आ-आङ्गना मान्यताहरू अधि सारेका छन् ।

पुष्करशमशेर ज.ब.रा.ले वाक्पद्धति (टुक्का) को परिभाषा दिँदै भनेका छन्- “दुई टुक्का पर्यो भने अर्थात् एउटा काम हुँदा अर्को काम भयो भने उखान; एक टुक्का मात्र छ भने अर्थात् संलग्न एउटै काम दर्शाउँछ भने वाक्पद्धति ।”^{२५} यो परिभाषा त्यति स्पष्ट नभए तापनि यसको आशय बुझ्दा एउटा समग्र भनाइ उखान हो र अपूर्ण भनाइ वा वाक्यको अंश टुक्का हो भन्ने सङ्केत मिल्दछ । यसमा उखान र टुक्काको बीचको स्पष्ट भिन्नता छुट्टिएको पाइँदैन ।

“अनिवार्य नेपाली शिक्षण” (वि.सं. २०३६) मा टुक्काको परिभाषा यस्तो पाइन्छ : “टुक्का भनेको खासखास क्रियासँग खास-खास शब्द मिली विशेष अर्थ धारण गर्ने विशेष अभिव्यक्ति हो ।”^{२६} यो परिभाषा पनि त्यति उचित देखिँदैन किनभने विशेष अर्थधारणा गर्ने विशेष अभिव्यक्तिलाई टुक्का भन्ने सङ्केत गरियो तर अभिव्यक्ति टुक्का होइनन् । टुक्कालाई त वाक्यमा प्रयोग गरेपछि वाक्य वा अभिव्यक्ति बन्दछ । वास्तवमा टुक्काहरू स्वतन्त्ररूपमा रहेका पदसमूह वा कच्चा माल हुन् । अर्को कुरा यसमा खासखास क्रियामा शब्द मिली टुक्का बन्ने जुन सङ्केत छ त्यो पनि तर्कसङ्गत छैन । यसले क्रियायुक्त मात्रै टुक्का हुन्छन् भन्ने धारणा व्यक्त गरेको छ जुन त्यति उचित देखिँदैन ।

^{२५} पुष्कर शमशेर ज.ब.रा., **उखान-टुक्का कोष** (काठमाडौं : ने.भा.प्र.स., १९९८), भूमिका खण्ड ।

^{२६} चूडामणि रेग्मी, पूर्ववत्, पृ. २२ ।

टुक्काहरू क्रियायुक्त मात्रै नभएर विशेषण, नाम आदिबाट मात्र निर्मित र क्रियामुक्त पनि हुन्छन् ।

लोकसाहित्यका अध्येता थापा र सुवेदीले टुक्काको परिभाषा दिँदै के भनेका छन् भने भाषागत योगको रूढि र अवस्थाअनुसार कुनै पद, पदसमूह वा वाक्यांशहरू आङ्गनो खास अर्थलाई छोडी विशेष अभिव्यक्ति दिन पुग्छन त्यस्ता विशेष अर्थ बुझाउने पद, पदसमूह वा वाक्यांशलाई टुक्का भनिन्छ ।”^{२७} यस परिभाषामा विशेष अर्थ बुझाउने पद, पदसमूह वा वाक्यांशलाई टुक्का भनिन्छ भन्ने कुरामा जोड दिइएको छ ।

चूडामणि रेग्मीले टुक्काको चर्चा गर्दै टुक्काको परिभाषा यसरी दिएका छन्:- “वाक्याभिन्न प्रयुक्त हुँदाका घडी पद, पदावली, वाक्यांश यदि विशेष अर्थमा रूढ छन् भने ती टुक्का हुन् ।”^{२८} यस परिभाषामा टुक्कालाई चिनाउन वाक्यभिन्न प्रयोग हुँदाको विशेष अर्थमा जोड दिएको पाइन्छ ।

भाषाशास्त्री बालकृष्ण पोखरेलले टुक्काको परिभाषा यसरी दिएका छन्:- “यदि कुनै वाक्यांश पद वा पदसमूहले कुनै अर्ती, उपदेश, सूक्ति अथवा परम्परा उद्गार प्रकट नगरीकनै वाच्यार्थमा बाधा तेस्यार्यो र लक्ष्यार्थ जाहेर गयो भने यो टुक्का अथवा तुक्का कहलाउँछ ।”^{२९} यस परिभाषामा स्पष्ट रूपमा उखान र टुक्काबीच भेद छुट्टयाइएको पाइन्छ ।

कृष्णप्रसाद पराजुलीले टुक्काको परिभाषा यसरी दिएका छन् :- “भाषामा वाक्यांशहरू साधारण अर्थबाहेक वाच्यार्थ नै छाडेर नयाँ अर्थमा आउँछन् । यसरी जुन वाक्यांश सारगर्भित अर्थमा प्रयोग हुन्छन् ती टुक्का हुन् ।”^{३०} यस परिभाषामा साधारण अर्थ छाडेर नयाँ अर्थ र सारगर्भित अर्थमा प्रयोग हुने वाक्यांशहरू टुक्का हुन् भन्ने आशय भेट्न सकिन्छ ।

^{२७} -----, पूर्ववत् पृ. २७ ।

^{२८} बालकृष्ण पोखरेल, **राष्ट्रभाषा**, छैटौँ संस्करण (काठमाडौँ : साभा प्रकाशन, २०४२), पृ. १२८ ।

^{२९} कृष्णप्रसाद पराजुली, **राम्रो रचना: मीठो नेपाली**, पूर्ववत्, पृ. १८६ ।

^{३०} धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदी, **नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना** (काठमाडौँ : त्रि.वि.पा.वि.के.; २०४१), पृ. ४१५ ।

मोतीलाल पराजुलीले टुक्काको परिभाषा यसरी दिएका छन् :- “भाषिक अभिव्यक्तिका क्रममा भाषिक मिठास तथा कलात्मक प्रस्तुतिका निमित्त प्रयोग गरिने भाषिक सौन्दर्य टुक्का अथवा तुक्का हुन् ।”^{३१} यस परिभाषामा मिठास तथा कलात्मसँगको टुक्काको सम्बन्धलाई हेरिएको छ । यो परिभाषा महत्वपूर्ण भए पनि यसमा अझै थप व्याख्या आवश्यक देखिन्छ किनभने भाषामा मिठास र कलात्मकता टुक्काले मात्र होइन अरुले पनि ल्याउन सक्छन् ।

अर्का विद्वान् मोहनराज शर्माले टुक्काको परिभाषा यसरी दिएका छन् :- “क्रियासँग खास-खास शब्दको सङ्गठित संरचना भएको त्यस्तो पदसमूहलाई टुक्का भनिन्छ, जो अविधेय नभएर विशिष्ट अर्थमा रुढ हुन्छ ।”^{३२} यस परिभाषामा क्रियासँग खास-खास शब्दको मेल खाएर विशिष्ट अर्थ बुझाउने पदसमूहलाई टुक्का भनिन्छ भन्ने आशय प्रकट भएको छ ।

यस प्रकार विभिन्न विद्वान्ले टुक्काको परिभाषा दिने क्रममा आङ्गना धारणा व्यक्त गरेको पाइन्छ । उल्लिखित सबै परिभाषालाई हेर्दा के भन्न सकिन्छ भने खासखास शब्दसँग खासखास क्रियाको मेलभई बनेका, अभिधेयार्थ एवं वाच्यार्थलाई छोडेर लक्ष्यार्थ जाहेर गर्ने कुनै पनि पद वा पदसमूहलाई ‘टुक्का’ अथवा ‘तुक्का’ भनिन्छ । यसको प्रयोगले भाषा सबल, रोचक, सजीव र प्रवाहपूर्ण हुन्छ ।

३.३ टुक्काका संरचनागत तत्त्व

टुक्का एक वा एकभन्दा बढी मुक्त रूपको सङ्गठित संरचना हो । यसको संरचनामा रहेका शब्दहरू एक-अर्कासँग कसिलो गरी गाँसिएको हुन्छन् । टुक्काको संरचनामा रहेका शब्दको छुट्टा-छुट्टै प्रयोग गर्दा कुनै एक शब्दलाई भिकेर त्यस ठाउँमा त्यस्तै अर्को शब्द राख्दा संरचना भताभुङ्ग भई अर्थमा फरक पर्न जान्छ । जस्तै: “पेट काट्नु” को अर्थ ‘कम खाना खानु’ र

^{३१} मोतीलाल पराजुली, **नेपाली लोकगाथा** (पोखरा : तारा पराजुली, २०४९), पृ. १४ ।

^{३२} मोहनराज शर्मा, **शब्द रचना र वर्णविन्यास**, चौथो संस्करण (काठमाडौं : नेपाल बुक हाउस, २०५०), पृ. १५६ ।

‘असाध्यै दुःख पाउनु’ पनि हो । यसलाई वाक्यमा प्रयोग गर्दा मैले पेट काटेर दाजुलाई पठाएको हुँ । ‘पेट’ को ठाउँमा ‘भुँडी’, ‘उदर’ शब्द राखियो भने त्यो टुक्का बन्दैन । टुक्काको वाच्यार्थभन्दा लक्ष्यार्थ प्रधान हुन्छ । पदसमूहअन्तर्गत जुन शब्द पायो त्यही शब्द राखेर टुक्का बन्दैन ।^{३३} टुक्काहरूको निर्माण खासखास शब्दका साथ खासखास क्रियाको मेल भएपछि मात्र हुन्छ र त्यस्ता टुक्काहरूले विशेष अर्थ दिन्छन् । स्वतन्त्र अस्ति□व र अर्थ भएका दुई वा दुईभन्दा बढी शब्दहरूको परस्पर मेल भई तिनले दिने अर्थको चोतन हुँदा मात्र टुक्काको निर्माण हुन्छ । टुक्काभन्दा बाहिर अन्य ठाउँमा त्यस्ता शब्दको आ-आङ्गनो स्वतन्त्र अर्थ र अस्ति□व रहेको हुन्छ । जस्तै : ‘आँखा लाग्नु’ टुक्कामा आँखा इन्द्रियविशेष हो भने ‘लाग्नु’ कुनै ठाउँमा प्रयोग हुनु हो । यी दुवै मिलेर आउँदा टुक्काको निर्माण हुन्छ र विशिष्ट अर्थ निस्कन्छ । नेपाली लोकजीवनमा प्रचलित टुक्काहरूको निर्माण तीन किसिमले भएको पाइन्छ ।

३.३.१ खास पद र खास क्रियाको संयोजन

टुक्काको संरचनामा भूमिका खेल्ने मह□वपूर्ण कारक त□व हुन् । पद तथा पदसमूह र तिनका साथ मिल्ने खासखास क्रिया । तिनले वाच्यार्थ त्यागी लक्ष्यार्थ दिने शब्दहरूलाई आधार दिएको देखिन्छ । अझ टुक्का-निर्माणको खासखास आधार भनेको नै खासखास शब्दका साथ खासखास क्रिया मिल्नसक्ने संयोजन हो ।

भाषिक भण्डारका सबै शब्दहरूबाट टुक्का बन्न सक्दैन । खास-खास शब्दबाट मात्रै बन्दछ । ती खास-खास शब्दको अभावमा टुक्का बन्न नसक्ने हुँदा त्यहाँ सीमित शब्दको मात्र प्रयोग हुन्छ । शब्दवर्गका नाम, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया र अव्यय सबैले यसमा प्रयुक्त हुन सक्छन् ।^{३४} अझ भनौं भने टुक्काहरूको निर्माण लोकप्रचलित अर्थपूर्ण पदहरूको मेलबाट हुन्छ । यिनमा पनि खासगरी क्रियाहरूको विशेष भूमिका हुन्छ । क्रियाको अभावमा टुक्काको

^{३३} लक्ष्मी पन्थी, गुल्मी जिल्लाका टुक्काहरूको अध्ययन (त्रि.वि. मा प्रस्तुत नेपाली स्नातकोत्तर शोधपत्र, २०५६), पृ. ८७ ।

^{३४} बल्लभमणि दाहाल र अन्य, अनिवार्य नेपाली शिक्षण निर्देशिका खण्ड २ (त्रि.वि. पा.वि.के., २०३६), पृ. १०८ ।

अस्ति□व छैन । टुक्काको निर्माणमा प्रयोग हुने शब्दहरू सरल हुन्छन् र दैनिक जीवनका प्रयोगबाट त्यस्ता शब्दहरूको छनोट हुन्छ । शरीरका अङ्ग, घरेलु वस्तु, प्रकृति, पशुपक्षी आदि लगायत समाजका विभिन्न वस्तु, भाव र कार्यहरूलाई जनाउने शब्दको मेलबाट टुक्काहरू बन्दछन् ।^{३४} टुक्काको निर्माण खासखास क्रियासँग खासखास शब्द मिलेर भएको हुन्छ । (जस्तै : आँखा तर्नु, मन दुख्नु आदि) । यसको तात्पर्य हो 'तर्नु' क्रियासँग जुनसुकै शब्द आएर टुक्का बन्न सक्दैन । खासखास क्रियाका साथ खासखास शब्द मिलेको अवस्थामा टुक्का निर्माण भई तिनले विशेष अर्थ धारण गरेका हुन्छन् । टुक्कामा सामान्य अर्थका सट्टामा विशेष अर्थ आउँछ ।^{३५}

३.३.२ अर्थगत विशिष्टता

सामान्य कथनभन्दा टुक्काले दिने अर्थ विशिष्ट किसिमको हुन्छ । त्यसैले भाषिक चमत्कार र सौन्दर्यका निम्ति टुक्काको प्रयोग गरिन्छ । टुक्काले वाच्यार्थ त्याग गरी लक्ष्यार्थ प्रदान गर्दछ । लक्ष्यार्थ विनाको टुक्का बन्दैन र त्यसमा भावतीक्ष्णता पनि हुँदैन । लोकप्रचलित अर्थपूर्ण पदहरूको मेलबाट टुक्काहरूको निर्माण भएको हुन्छ ।^{३६} वस्तुतः भाषामा टुक्काहरूको उद्भव बोलचालमा शब्दहरूको प्रयोग गर्दै जाँदा विशेष किसिमको अभिव्यक्तिका निम्ति हुन जान्छ । खास-खास शब्दहरू परस्परमा घटित भई विशेष अर्थ ग्रहण गर्न थाली कालान्तर ती-ती शब्द मिलेर मात्र विशेष अर्थको द्योतन गर्न समर्थ हुन जाने प्रक्रियाअन्तर्गत टुक्का आएको हो र त्यो अर्थ ती-ती शब्द सँगसँगै आउँदा रुढ भएर आएका हुन् । उदाहरणका रूपमा 'मन पाक्नु' भन्ने टुक्कालाई लिऔं । कुनै चिन्तावश मनमा अनेक तर्क-वितर्क उठेको अनुभूतिलाई व्यक्त गर्न 'मन' का साथ 'पाक्नु' क्रियाको प्रयोग गरियो र प्रचलन हुँदै जाँदा यसै

^{३४} एकनारायण पौड्याल, "नेपाली टुक्काको परिचय", कुञ्जिनी (वर्ष ९, अङ्क ६, २०५८), पृ. ९६ ।

^{३५} बल्लभर्मणि दाहाल र अन्य, पूर्ववत्, पृ. १०८-१०९ ।

^{३६} चूडामणि बन्धु, नेपाली लोकसाहित्य (काठमाडौं : एकता प्रकाशन, २०५८), पृ. ३५३ ।

अर्थमा रुढ हुनगयो भन्ने बुझिन्छ । वास्तवमा टुक्काहरूमा स्थूल अर्थ देखि लिएर सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावसम्मलाई प्रकट गर्ने सामर्थ्य हुन्छ ।^{३६}

कुन टुक्का हो, कुन टुक्का होइन भन्ने छुट्टयाउने मूल आधार त्यसको अर्थगत विशिष्टता नै हो । जस्तै : हावा खानु, आलु खानु, कान खानु, आँखा मारुनुजस्ता पदसमूहले आङ्गनो वाच्यार्थ त्यागेर लक्ष्यार्थ दिन्छन् । त्यसैले यिनलाई टुक्का भनिन्छ भने- भात खानु, पानी दिनु, किताब पढनुजस्ता पदसमूह टुक्का होइनन् किनभने यिनले लक्ष्यार्थ दिँदैनन् केवल वाच्यार्थमात्र प्रकट गर्छन् । यसबाट के कुरा बुझिन्छ भने टुक्कामा विशेषार्थ प्रकट हुन्छ । टुक्का बन्नु र अर्थ निस्कनुको मतबल हो विशेष अर्थ दिनु । फेरि विशेष अर्थ भनेको लक्ष्यार्थ निस्कनु हो । जस्तै: क्रमशः 'हावा खानु' । हुन त यी शब्दको सामान्य अर्थपनि लाग्छ तर प्रयोग-सन्दर्भले लक्ष्यार्थ निस्कन्छ । यही लक्ष्यार्थ वा विशेष अर्थ नै टुक्कागत अर्थ हो ।^{३७} टुक्काको निर्माणमा विशेष अर्थको द्योतन हुन्छ । विशेष अर्थको द्योतन भएन भने त्यो टुक्का होइन, सामान्य कथन मात्र हो भन्ने बुझनुपर्ने हुन्छ । वास्तवमा वाक्यभित्र प्रयुक्त हुने ती रुढ, लाक्षणिक प्रयोगमात्र टुक्का हुन् भन्ने कुरा उल्लेखनीय छ । 'पाखे मान्छेसँग सकिँदैन' यहाँ 'पाखे' शब्दमा लक्ष्यार्थ विद्यमान छ । 'ऊ कसैको निन्दा सुन्दा सधैं कान थुन्छ' भन्ने वाक्यमा 'कान थुनु' टुक्का हो । यस टुक्कामा कान र थुनुको संयुक्त रूपको एक विशेष अर्थ रुढ छ- कुरा नसुनु । 'ऊ सम्साँभै तीन भुँडी देख्छ' यस वाक्यमा 'तीन भुँडी देख्नु' तीन शब्दको संयुक्त रूपको एक विशेष अर्थ हो- खूब निदाउनु ।^{३८}

यसरी हेर्दा के देखिन्छ भने टुक्काको वाच्यार्थसँग कुनै सम्बन्ध हुँदैन । लक्ष्यार्थबाट नै टुक्काको अभीष्ट अर्थको सिद्धि हुन्छ । उदाहरणका रूपमा हामी 'घाउ कोट्टयाउनु' लाई लिऔं । यसमा 'घाउ कोट्टयाउनु' को टुक्कार्थ काटेको

^{३६} बल्लभमणि दाहाल र अन्य, पूर्ववत्, पृ. १०८-१०९ ।

^{३७} एकनारायण पौड्याल, पूर्ववत्, पृ. ९६ ।

^{३८} चूडामणि रेग्मी, नेपाली टुक्काहरूको अध्ययन, दोस्रो संस्करण (भाषा : जुही प्रकाशन, २०५७), पृ. ४ ।

घाउलाई कोट्ट्याएर देखाउनु भन्ने नभई, पुरानो पीडादायक घटनालाई खोतल्नु भन्ने हो ।

३.३.३ टुक्काको सन्दर्भ-प्रयोग

टुक्काको सार्थकता त्यति बेला देखिन्छ जब भाषिक अभिव्यक्तिमा उचित ठाउँमा तिनलाई सन्दर्भ मिल्ने गरी प्रयोग गरिन्छ । वाक्यमा प्रयोग बिना टुक्काको कुनै प्रयोजन नै हुँदैन । वाक्यमा प्रयोग भए पछि मात्र टुक्काको अर्थगत चमत्कार र भाषिक सौन्दर्य देखिन्छ । लोकजीवनमा टुक्काको प्रयोग विभिन्न भाषिक अभिव्यक्तिमा भएको देखिन्छ ।

टुक्काहरूको प्रयोग छुट्टै हुँदैन । वाक्यभित्र नै यिनीहरूको प्रयोग हुन्छ । जस्तै : 'मुख लाग्नु' एउटा टुक्का हो तर यसको अर्थ त्यस समयमा स्पष्ट हुन्छ जब यसलाई 'आफूभन्दा ठूलाको मुख लाग्नु हुँदैन' भनी वाक्यमा प्रयोग गर्छौं । सन्दर्भमा प्रयुक्त वाक्यले प्रसङ्ग निर्धारित गर्छ र टुक्काको अर्थ स्पष्ट हुन्छ ।^{४१} जस्तै : "हरिले यसपालिको जाँचमा पनि आलु खाएछ ।" यहाँ 'आलु खानु' ले जाँच दिने बेलामा 'आलु खानु' नभई लक्ष्यार्थमा 'फेल हुनु' भन्ने बुझाउँछ । 'आलु खानु' लाई आलुको तरकारी खाने अर्थमा लिँदा टुक्काको अर्थ बन्दैन र लक्ष्यार्थ पनि आउँदैन । 'बल्ल शारदाका घैंटामा घाम लाग्यो' भन्दा 'घैंटामा घाम लाग्नु' को अर्थ 'होस् पाउनु' भन्ने हुन्छ । स्वतन्त्र रूपमा त्यस्ता टुक्काले लक्ष्यार्थ नदिई वाच्यार्थमात्रै दिन पुग्छन् । पद-पदावली मात्र आफैमा टुक्का होइनन् ती प्रयोग-सन्दर्भले मात्र टुक्का बन्दछन् ।^{४२}

३.४ नेपाली टुक्काको अध्ययनपरम्परा

नेपाली टुक्काको अध्ययन परम्परालाई केलाउने क्रममा वि.सं. १९९८ लाई सिरानमा राखेर वा आरम्भ विन्दु मानेर अध्ययन गर्न सकिन्छ । वि.सं. १९९८ मा पुष्कर शमशेरले 'उखान-टुक्काको वर्णाक्रमानुसारी सूची वा वाक्यांश, वाक्पद्धति इत्यादि कोष' तयार पारेर पहिलो महत्वपूर्ण कार्य थालनी

^{४१} चूडामणि बन्धु, पूर्ववत्, पृ. ३५० ।

^{४२} एक नारायण पौड्याल, पूर्ववत्., पृ. ९६ ।

गरेको मान्न सकिन्छ । उक्त कार्यमा उखान र टुक्काका बीचको भिन्नताका स्पष्ट सङ्केत भने देखा परेका छन् । यसबाट पछिका अध्ययनहरूलाई ठूलो मार्ग निर्देशन र सहयोग पुगेको देखिन्छ । यसपछि वि.सं. २००० मा गोपाल पाँडेले 'रचना केशर' मा टुक्का, वाक्यांश र वाक्पद्धतिका बारेमा चर्चा गरेका छन् तर टुक्काको विस्तृत अध्ययन र विश्लेषण यसमा पनि हुन सकेको देखिँदैन । यसलाई पारसमणि प्रधानले नेपाली 'मुहावरा' (२०११) मा नेपाली टुक्कालाई हिन्दी भाषाको सापेक्षतामा हेर्दै नेपाली टुक्कालाई 'मुहावरा' नाम दिएर चर्चा गरेका छन् । यस्तै बालचन्द्र शर्माले 'नेपाली शब्दकोश' (२०१९) मा टुक्काको अर्थ दिए तापनि उखान र टुक्कामा भिन्नता देखाउन सकेका छैनन् र उखान र टुक्कालाई एउटै मानेका छन् । लक्ष्मण शास्त्रीको 'नेपाली राष्ट्रिय मुहावरा' (२०१५) टुक्कासम्बन्धी राम्रो कार्य मानिए तापनि उखान र टुक्का बीचको भिन्नतामा स्पष्टता देखिएको छैन । यस्तै पुष्कर शमशेरको मूलग्रन्थको सङ्क्षिप्त संस्करण 'उखान र टुक्काको कोष' (२०२४) लाई अर्को महत्त्वपूर्ण कार्य मान्न सकिन्छ तर पनि यो पुरानो ग्रन्थको नयाँ संस्करणका रूपमा मात्र प्रकाशित भयो र यसमा नयाँ कुराहरू आउन सकेका छैनन् । बालकृष्ण सुवेदीले आङ्गनो 'राप्ती अञ्चलका केही प्रसिद्ध उखान-टुक्का' (२०२५) शीर्षकको लेखमा त्यस क्षेत्रमा टुक्काबारे चर्चा गरेको पाइन्छ । यस्तै चूडामणि बन्धुको 'भाषा विज्ञान' (२०३०) मा टुक्कालाई भाषिक दृष्टिकोणबाट हेर्दै टुक्कालाई 'मुहावर' भन्ने चर्चा गरिएको छ । कृष्णप्रसाद पराजुलीले 'राम्रो रचना: मीठो नेपाली' (२०२३) मा पनि टुक्कालाई भाषिक दृष्टिले हेर्दै चर्चा गरेको पाइन्छ । यहाँसम्म आइपुग्दा नेपाली टुक्कालाई उखानसँग नै जोडेर अध्ययन र चर्चा गरेको पाइन्छ र हिन्दीमा प्रचलित मुहावराको आधारमा नेपाली टुक्कालाई हेर्ने प्रचलन रहेको देखिन्छ ।

नेपाली टुक्काहरूको चर्चा गर्ने क्रममा भाषाशास्त्री बालकृष्ण पोखरेलले 'राष्ट्रभाषा' (२०३१) मा टुक्काको व्याख्या गरेका छन् र प्रथम पटक टुक्कालाई एकपदीय र अनेकपदीय गरेर छुट्टयाएका छन् । यसै क्रममा अर्को महत्त्वपूर्ण

उपलब्धि चूडामणि रेग्मीको 'नेपाली टुक्काको अध्ययन' (२०४१) हो । यस कृतिमा पूर्वकार्यको समीक्षासमेत दिँदै परिचय, परिभाषा र वर्गीकरण गरेर बाइससय टुक्काको सूची समेत दिइएको छ । यस कार्यलाई नेपाली टुक्काको अध्ययन-परम्पराको महत्वपूर्ण कडी मान्न सकिन्छ । यस्तै हीरामणि शर्मा पौडेलको 'पर्वती भाषिकाको स्वरूप र संरचना' (२०४४) नामक पुस्तकमा पर्वत क्षेत्रमा बोलिने भाषिकाको स्वरूप र संरचनालाई प्रस्ट पार्दै त्यस क्षेत्रमा प्रचलित केही टुक्काको सङ्कलन सूची दिएका छन् । टुक्काको सानातिना चर्चा भएका अन्य कृतिहरूमा तुलसीप्रसाद ढुङ्गेलको 'नेपाली रचना शिल्प' (२०२५), नेरन्द्र चापागाईंको 'शब्द, वाक्य र अभिव्यक्ति' (२०३२), रोहिणीप्रसाद भट्टराईको 'बृहत नेपाली व्याकरण' (२०३३), मोहनराज शर्माको 'शब्द रचना र वर्णविन्यास भाषा वैज्ञानिक पद्धति' (२०३६), धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदीको 'नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना' (२०४१), शम्भुप्रसाद कोइरालाको 'लोकसाहित्य सिद्धान्त र विश्लेषण' (२०४४), कृष्णप्रसाद पराजुलीको 'भाषाको माया' (२०४४), मोतीलाल पराजुलीको 'नेपाली लोकगाथा' (२०४९), कृष्णप्रसाद पराजुली कै 'लोकगीतको आलोक' (२०५७), जीवेन्द्रदेव गिरीको 'लोकसाहित्यको अवलोकन' (२०५७) र चूडामणि बन्धुको 'नेपाली लोकसाहित्य' (२०५८) आदि पुस्तकहरूको नाम लिन सकिन्छ । हाल आएर नेपाली लोकसाहित्य र यसका विभिन्न विधाहरूमा क्षेत्रीय र राष्ट्रिय स्तरबाट अध्ययन-अनुसन्धान व्यापक रूपमा हुन थालेको पाइन्छ । उक्त कार्यमा त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभागको महत्वपूर्ण योगदान रहेको छ ।

यसरी चल्दै आएको नेपाली टुक्काको अध्ययन-परम्परालाई अझ व्यापक बनाउँदै नेपाली भाषा र लोकसाहित्यका विविध विधाहरूको विकास गर्नु आजको प्रमुख आवश्यकता हो ।

३.४.१ वर्गीकरण

नेपाली लोकसाहित्यका विविध विधा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, उखान, टुक्का र गाउँखाने कथामध्ये टुक्काको अध्ययन अझै पनि

पूर्ण रूपमा भएको छैन । उखानसँगै टुक्कालाई पनि राखेर अध्ययन गर्ने परिपाटी भएकै अवस्थामा केही विद्वान्हरूले यी दुईको अलग-अलग अस्ति-वलाई स्वीकारी अलग-अलग रूपमा चर्चा थालेको पाइए तापनि टुक्काको वर्गीकरणका सम्बन्धमा भने त्यति गहिरो ध्यान दिइएको पाइन्न । भाषाशास्त्री बालकृष्ण पोखरेलले 'राष्ट्रभाषा' नामक पुस्तकमा टुक्काको परिभाषा दिँदै टुक्कालाई एकपदीय (गाईजात्रे, जोइटिङ्गे आदि) र अनेकपदीय (सुनमा सुगन्ध हुनु, मामाको धन, मेख मारु आदि) गरी दुई वर्गमा विभाजन गरेका छन् । त्यसैगरी साहित्यकार कृष्णप्रसाद पराजुलीले 'राम्रो रचना: मीठो नेपाली' मा विशेष वा लाक्षणिक अर्थमा एउटै श्रेणी भई प्रयुक्त हुने वाक्यांशका रूपमा टुक्कालाई लिई एउटै नाम वा क्रियाको मेल भएका आधारमा नाममेल (आँखा जुधाउनु, आँखा खुल्नु, आँखा खानु, आदि) र क्रियामेल (कहर काट्नु, अड्कल काट्नु, कुरा काट्नु आदि) हुने स्थितिबारे उदाहरणबाट स्पष्ट पाउँदा टुक्कालाई क्रियायुक्त र क्रियामुक्त गरी दुई वर्गमा विभाजन गरेको पाइन्छ ।

बालकृष्ण पोखरेल समेतले टुक्कालाई वाक्य वा वाक्यांश सरहको संरचनाका नेपाली बृहत् शब्दकोशमा अर्थात्को सन्दर्भमा टुक्का एकपदीय हुने कुरा खण्डित हुन्छ । अतः नेपाली भाषामा प्रयोग हुँदै आएका टुक्काको मोटामोटी अध्ययन गर्दा र यिनीहरूको संरचना आदिलाई हेर्दा नेपाली टुक्कालाई निम्नानुसार विभाजन गर्न सकिन्छ-

३.४.१.१ विषयात्मक आधारमा वर्गीकरण

नेपाली भाषामा प्रचलित टुक्काले नेपाली समाजका हरेक विषयमा आङ्गनो प्रभुत्व जमाएको हुन्छ । विषयका आधारमा हेर्दा टुक्कालाई पौराणिक, ऐतिहासिक, संस्कारगत, आर्थिक सम्बन्धी, आदिका रूपमा निम्नानुसार वर्गीकरण गर्न सकिन्छ:-

(क) ऐतिहासिक तथा पौराणिक घटनामा आधारित टुक्का

नेपाली भाषामा प्रचलित टुक्काहरू केही यस्ता छन् जसले हाम्रो समाजको ऐतिहासिक तथा पौराणिक घटनासँग सम्बन्ध राखेका हुन्छन् । जस्तै: रावणको राज्य, नारद वन्नु, रामराज्य हुनु, जङ्गे हुनु, पुराण सुनाउनु आदि ।

(ख) संस्कार या परम्परामा आधारित टुक्का

हामीले प्रयोग गर्ने केही टुक्काहरू हाम्रो संस्कार या परम्परासँग समन्वय राख्न सक्ने खालका छन् । तिनलाई संस्कार या परम्परामा आधारित टुक्का भन्न सकिन्छ । जस्तै : भाकल गर्नु, भूत चढ्नु, सराप पर्नु आदि ।

(ग) सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित टुक्का

कुनै टुक्काले सामाजिक अवस्थासँग सम्बन्ध राखेका छन् भने त्यस्ता टुक्कालाई 'सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित टुक्का' भनेर वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । जस्तै: हात मुख जोर्नु, मुखमा पानी आउनु, फलामको चिउरा चपाउनु, कानको कीरा खानु इत्यादि ।

(घ) आर्थिक स्थितिमा आधारित टुक्का

हामीहरूले भाषामा प्रयोग गर्ने कतिपय टुक्काले हाम्रो आर्थिक अवस्थाको झल्को दिएका हुन्छन् । यस्ता टुक्कालाई यसअन्तर्गत राख्न सकिन्छ । जस्तै: थोत्रो थाल ठटाउनु, धोती न टोपी हुनु, टुप्पाबाट पलाउनु, ऋण खानु आदि ।

३.४.१.२ रूपरचनाका आधारमा वर्गीकरण

रूपरचनाको आधारमा हेर्दा नेपाली भाषामा प्रचलित टुक्कालाई क्रियापदयुक्त र क्रियापदमुक्त गरी वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

(क) क्रियापदयुक्त

जुन टुक्कामा क्रियापदको प्रयोग भएका छन् ती टुक्कालाई क्रियापदयुक्त टुक्का भनिन्छ । जस्तै:- कान खानु, गिदी खानु, नाकमा गुहु लाग्नु, माछा मार्नु, टुपी काट्नु, शूलीमा चढाउनु इत्यादि ।

(ख) क्रियामुक्त

नेपाली भाषामा पाइने कतिपय टुक्काहरू क्रियामुक्त छन् । जस्तै: सुनमा सुगन्ध, साँढेको फल, असारको पन्ध्र, अँध्यारोको काम, किताबको किरा, सम्धीको शोक आदि ।

३.४.२ विशेषता

भाषिक अभिव्यक्तिमा सौन्दर्य ल्याइदिने टुक्काहरू भाषाका मौलिक रूप हुन् । लोकानुभवका सारगर्भित सुत्र हुन् । यिनमा भाषामा प्राण भरिदिन सक्ने संजीवनी शक्ति हुन्छ । टुक्काहरू अतिसंक्षिप्त भईकन पनि गम्भीर धेरै विस्तृत र भावव्यक्त गर्ने क्षमताका हुन्छन् । लोकसाहित्यमा टुक्काहरूको आङ्गनै प्रयोग र वैशिष्ट्य रहेको छ । लोकजीवनले हाँसो-ठट्टा, माया-प्रेम र घर-व्यवहारमा यिनलाई थाहै नपाई सुटुक्क लिएको हुन्छ र काम चलाएको हुन्छ । यसैले टुक्काहरू लोकजीवनका अमूल्य निधि हुन्, गरिमामय आभूषण हुन् ।^{४३} टुक्का लोकजीवनका महत्वपूर्ण, सारगर्भित र सूत्रात्मक कथन मात्र नभई भाषालाई आकर्षण र सौन्दर्य प्रदान गर्ने आभूषण हुन् । टुक्काहरूमा ज्ञानको हीरा लुकेको हुन्छ । टुक्काको प्रयोगले भाषालाई गतिशील, मीठो, सरस र रोचक बनाउन मद्दत गर्छ । लेख्य वा कथ्यरूपमा नेपाली भाषामा टुक्काको प्रयोग गरेर भाषालाई ओजनदार बनाइएको पाइन्छ । टुक्काको माध्यमबाट थोरै समयमा धेरै कुरा विशिष्ट अर्थका रूपमा व्यक्त हुन पुग्दछ । टुक्काले लोकजीवनका महत्वपूर्ण र गूढ तत्वलाई सरल र सहज रूपमा जनसमक्ष ल्याउँछ । यही टुक्काबाट नै महत्वपूर्ण सिद्धान्तको प्रतिपादन सरल रूपमा हुन्छ । टुक्काका छोटोछोटा पदहरूमा मानव इतिहास र सत्यताका रहस्यमय कुराहरू लुकेर रहेका भेटिन्छन् । भाषाको अर्थबाहक शक्तिका लागि टुक्काहरूको विशिष्ट स्थान रहिआएको छ ।^{४४}

^{४३} धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदी, **नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना** (काठमाडौं: त्रि.वि. पा.वि.के., २०४१), पृ. ४१६ ।

^{४४} कृष्णप्रसाद न्यौपाने, 'टुक्का र उखान' **व्याकरण कुसुम** (स्याङ्जा : २०४१, पृ. १२८) ।

टुक्का वा मुहावराका विशेषता के हुन् भन्ने विषयमा विभिन्न विदेशी र स्वदेशी विद्वान्हरूले त्यसका लक्षण, चमत्कार, अर्थ, रूप आदिका आधारमा बयान गरेका छन् । यसै क्रममा शरतेन्दुले प्रचलित मुहावराका विशेषता देखाउँदै निम्नलिखित बुँदाहरू दिएका छन्-

- (१) टुक्का कुनै वाक्यमा प्रयोग भए पछि मात्रै तिनले लाक्षणिक अर्थ दिन्छन् तर स्वतन्त्र रूपमा तिनले त्यस्तो अर्थ दिन सक्दैनन् ।
- (२) टुक्काहरू आङ्गनै मूल रूपमा बनेका हुन्छन् । तिनको न त अनुवाद नै गर्न सकिन्छ न त पर्यायवाची शब्द नै राखेर त्यसको अर्थ लिन सकिन्छ ।
- (३) टुक्काको अर्थ प्रसङ्ग अनुसार हुन्छ ।
- (४) टुक्कामा शब्दार्थको कुनै महत्त्व हुँदैन, बरु शब्दार्थभिन्न अर्थ हुन्छ ।
- (५) टुक्का भाषाको समृद्धि र सभ्यताको विकासका मापन हुन् ।
- (६) समय, समाज र देशअनुसार टुक्काहरू बदलिन्छन् ।^{४५}

त्यस्तै कृष्णदेव उपाध्यायका अनुसार टुक्का विशेषता यस प्रकार छन्-

- (१) टुक्काको सबैभन्दा ठूलो विशेषता के हो भने ती कुनै पनि वाक्यमा अङ्गीभूत भएर रहेका हुन्छन् ।
- (२) टुक्काहरू आङ्गनो मूल रूपमा नै सदैव प्रयुक्त हुन्छन् । यदि यिनमा आएका शब्दहरूको ठाउँमा कुनै पर्यायवाची शब्दको प्रयोग गरियो भने टुक्काको तात्पर्य नै नष्ट हुन्छ । जस्तै- 'हात धुनु' टुक्का हो । यसको ठाउँमा 'हस्त प्रक्षालन' को प्रयोग गरियो भने त्यसको अभीष्ट अर्थ हामीलाई प्राप्त हुन सक्दैन ।
- (३) टुक्काको वाच्यार्थसँग विशेष सम्बन्ध हुँदैन । लक्ष्यार्थद्वारा नै अभीष्ट अर्थ प्राप्त हुन्छ । जस्तै- 'लडाइँमा काम आउनु' को अर्थ लड्दालड्दै मर्नु हो न

^{४५} शरतेन्दु, लोकसाहित्यकी रूपरेखा, इलाहाबाद, साहित्य सिर्जना संस्थान, १९९८ ई. पृ. १३४-१३५ ।

कि लडाईँको काममा उपयोग हुनु ।^{४६} सन्दर्भमा प्रयुक्त प्रसङ्ग निर्धारित गर्छ र टुक्काको अर्थ स्पष्ट हुन्छ ।

(४) टुक्कामा प्रयुक्त हुने पदहरूले आ-आङ्गना वाच्यार्थ छोडी लक्ष्यार्थ दिन्छन् । कुनै वाक्यमा रहेका त्यस्ता पदहरूले वाच्यार्थ मात्रै दिएको खण्डमा तिनलाई टुक्का भन्न सकिन्छ । जस्तै-

क) रामले साँभसम्म साथीको बाटो हेर्‍यो ।

ख) गोपलले नयाँ बनेको बाटो हेर्‍यो ।

यी वाक्यहरूमा प्रयुक्त 'बाटो हेर्‍यो' मध्ये (क) टुक्का हो तर (ख) होइन । कुनै पनि भाषामा टुक्काहरूको प्रयोग रुढ अर्थमा हुन्छ ।^{४७}

त्यस्तै अर्को विद्वान् भोजराज ढुङ्गेलको अनुसार टुक्काका विशेषता यस प्रकार छन्-

- (१) टुक्काको निर्माण खासखास क्रियासँग खासखास शब्द मिलेर भएको हुन्छ ।
- (२) टुक्काहरू लक्षणा र व्यञ्जनाआश्रित हुन्छन् ।
- (३) टुक्काहरू मुख्यतः क्षणिकतायुक्त हुन्छन् ।
- (४) टुक्का एक वा सो भन्दा बढी पदहरूबाट निर्माण हुन सक्छ तर अर्थमा लाक्षणिकता अनिवार्य हुन्छ । जस्तै- राम मर्‍यो (सामान्य अभिव्यक्ति) । राम कहाँ मर्‍यो हँ (जानु अर्थमा लाक्षणिक अभिव्यक्ति) । रामले पोलेको आलु खायो (सामान्य अभिव्यक्ति) । रामले जाँचमा आलु खायो (लाक्षणिक अभिव्यक्ति) ।
- (५) वाक्यमा प्रयोग हुँदा मात्र टुक्काले आङ्गनो विशिष्ट अर्थको बोध गराउँछ ।
- (६) टुक्काले प्रयोगका क्रममा आङ्गनो रूपपरिवर्तन गर्न सक्छ ।
- (७) टुक्काहरू स्वदेशीय र स्वभाषीय हुन्छन् ।

^{४६} कृष्णदेव उपाध्याय, लोकसाहित्यकी भूमिका, सा.सं. (इलाहाबाद: साहित्य भवन (प्रा.लि.) १९९८ ई.), पृ. १६४-१६५ ।

^{४७} चूडामणि बन्धु, पूर्ववत्, पृ. ३५० ।

- (८) टुक्काको प्रयोगले उक्तिलाई प्रभावशाली बनाउँछ ।
- (९) टुक्काको प्रयोगले अभिव्यक्ति कौशल बढाउँछ ।
- (१०) टुक्काको प्रयोगले भाषागत वैशिष्ट्यको बोध गराउँछ ।^{४६}

टुक्काको विशेषताका विषयमा विभिन्न विद्वान्हरूले आ-आङ्गनै दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् । जो-जसले जे-जसरी प्रस्तुत गरे तापनि नेपाली टुक्काहरूलाई केलाउँदा तिनका विशेषता निम्नानुसार देखा परेका छन्-

^{४६} भोजराज, दुङ्गेल, **उखान टुक्का शिक्षण**, वृष्टि लोकसाहित्य प्रधान, अङ्क १, वर्ष १ आश्विन २०५१, पृ. ३४-३५ ।

३.४.२.१ लोकजीवनको चित्रण

टुक्काहरूमा लोकजीवनका सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक आदि विविध पक्षको चित्रण हुन्छ । जस्तै- श्री गणेश गर्नु, सिन्दुर पुछिनु, दिनदशा लाग्नु, पोथी बास्नु, हात चिलाउनु आदि लोकजीवनको चित्रण गर्ने टुक्काहरूले प्रतीकात्मक रूपमा अर्थ दिएका हुन्छन् । कुनै पनि समाजको आङ्गनो धर्म, संस्कृति र जीवनशैलीलाई त्यस्ता कुराले चित्रण गरिरहेका हुन्छन् ।

३.४.२.२ सङ्क्षिप्तता र लोकप्रियता हुनु

टुक्काहरू सङ्क्षिप्त वा छोट्टा हुन्छन् । यिनीहरूको प्रयोग स्वतः स्फूर्त रूपमा र सचेत रूपमा हरेक मानिसले गर्छ । छोट्टा भएर नै यिनीहरू भाषामा बढी प्रयोग हुन्छन् र मीठो र गहन अर्थ प्रदान गर्ने भएकाले हरेक व्यक्तिले अत्यन्तै रुचाएका हुन्छन् । त्यसैले सङ्क्षिप्त र लोकप्रिय हुनु टुक्काको अर्को महत्वपूर्ण विशेषता हो ।

३.४.२.३ सरल र सरसता हुनु

सरल र सरस हुनु टुक्काको अर्को विशेषता हो । टुक्काहरू लक्ष्यार्थ र व्याङ्ग्यार्थका लागि प्रयोग भए तापनि यिनीहरूमा सरलता हुन्छ । शिक्षित व्यक्तिहरूदेखि लिएर अशिक्षित व्यक्तिहरूसम्मले टुक्का बुझ्न र प्रयोग गर्न सक्छन् । त्यसैले सरलता टुक्काको सार्वजनिक विशेषता हो । सरसता पनि टुक्काको महत्वपूर्ण विशेषता हो । जब टुक्का वाक्यमा वा भाषामा प्रयोग भयो भने भाषा वा वाक्य अत्यन्त मीठो, रसिलो र सजिलै सबैले बुझ्ने खालको बन्दछ ।

३.४.२.४ पदहरू परिवर्तन नहुनु

टुक्काका रूपमा आएका पदहरू सधैं एकै प्रकारका रहन्छन् । यिनमा परिवर्तन गर्न मिल्दैन र यस्ता शब्दहरूको सधैं एक आपसमा सम्बन्ध रहि

रहन्छ । यसरी टुक्काका रूपमा आएका पदहरू परिवर्तन गर्न मिल्दैन । यदि परिवर्तन भयो भने अर्थ खुल्न सक्दैन र अर्थ खुले पनि अनर्थ लाग्न सक्दछ ।

३.४.२.५ अभिधार्थमा प्रयोग नहुनु

टुक्काका रूपमा प्रयोग हुने पदहरूले आ-आङ्गनो वाच्यार्थ छोडी लक्ष्यार्थ हुँदै व्यङ्ग्यार्थ समेत दिन्छन् । यदि लक्ष्यार्थ र व्यङ्ग्यार्थ दिन सकेनन् भने ती टुक्का बन्न सक्दैनन् । यसरी लक्ष्यार्थ र व्यङ्ग्यार्थमा जोड दिनु टुक्काको अर्को विशेषता हो ।

३.४.३ महत्त्व

टुक्काहरू मानव सभ्यता, इतिहास र संस्कृतिका संवाहक हुन् । ती मानव समाज र सभ्यताका प्रतिबिम्ब हुन् । त्यस्ता टुक्काहरूले सिङ्गो मानव सभ्यताको इतिहासलाई प्रतिबिम्ब गरेका हुन्छन् । कुनै पनि समाजको इतिहास, संस्कृति, रीतिस्थिति, परम्परा, विश्वास आदि मान्यताहरू बुझ्न त्यस्ता टुक्काहरू महत्त्वपूर्ण सावित हुन्छन् । तिनबाट कुनैपनि राष्ट्रको विशेषता सहज रूपमा बुझ्न सकिन्छ र त्यस्ता टुक्काहरूले त्यहाँको लोकजीवन र संस्कृतिको जीवन्त चित्र उतारेका हुन्छन् । टुक्काको भाषिक प्रयोगका दृष्टिले पनि उत्तिकै महत्त्व छ । उचित टुक्काको प्रयोगले भाषिक भावलाई थोरै शब्दमा प्रकट गर्नु टुक्काको महत्त्वपूर्ण गुण हो । यिनको प्रयोगले कुनै पनि भाषा सुसंस्कृत भई चमत्कृत हुन्छ । कुनै पनि भाषाको सौन्दर्यमा रोचकता, प्रभावकारिता ल्याउनाका लागि टुक्काहरूको प्रयोग आवश्यक हुन्छ । त्यस्ता टुक्काहरूले भाषालाई प्रभावकारी बनाउन महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेका हुन्छन् । टुक्काको महत्त्वलाई निम्नलिखित बुँदामा अगाडि सार्न सकिन्छ-

- (१) भाषालाई सङ्क्षिप्त, रोचक, प्रभावकारी र सौन्दर्यपूर्ण बनाउनमा टुक्काको महत्त्वपूर्ण भूमिका छ ।

- (२) वर्षोंदेखिका मानव अनुभूतिलाई सुरक्षित राख्नमा यिनको महत्व रहँदै आएको छ ।
- (३) मानव अनुभूतिबाट उत्पन्न भएका कारणले तिनमा सौन्दर्य र मार्मिकता आएको हो ।
- (४) टुक्काहरू मानव सभ्यता, संस्कृति, इतिहास र समाजका प्रतिबिम्ब रूप हुन् ।
- (५) पुरातत्वको ज्ञानप्राप्तिका लागि टुक्का महत्वपूर्ण मानिन्छन् ।
- (६) लोकजीवन र संस्कृतिका रहस्यमय कुराहरूलाई सङ्क्षिप्त रूपमा जनसमक्ष ल्याउन टुक्काको उल्लेखनीय भूमिका रहन्छ ।
- (७) कुनै पनि राष्ट्रको निजी पहिचानका सूत्रहरू टुक्का हुन् ।
- (८) टुक्काहरू लाक्षणिक र चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्तिका निम्ति भाषामा जीवन्त शक्ति ल्याउने साधन हुन् ।

३.५ नेपाली टुक्का र लोकसाहित्यका अन्य विधाबीच भिन्नता र समानता

नेपाली लोकसाहित्यका विभिन्न विधाका रूपमा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, उखान, गाउँखाने कथा र टुक्का चर्चित छन् । यी विभिन्न लोकसाहित्यिक विधाको टुक्कासितको एक-आपसको समानता र भिन्नता सूक्ष्म रूपमा केलाउँदै जाँदा केही न केही समानता र भिन्नता पाइन्छ ।

उखान र टुक्काको भिन्नतालाई देखाउँदै पुष्कर शमशेरले भनेका छन्- “दुई टुक्का पाच्यो भने, एउटा मात्र काम हुँदा अर्को काम भयो भने उखान र एकटुक्का मात्र छ भने अर्थात् संलग्न एउटै काम दर्शाउँछ भने वाक्यद्विति हुन्छ।^{४९} यस्तै उखान र टुक्काबीचको भिन्नतालाई देखाउँदै चूडामणि रेग्मीले के भनेका छन् भने लोकप्रसिद्ध उक्ति-लोकोक्ति उखान हो, जो वाक्यमा प्रयोग

^{४९} पुष्कर शमशेर ज.ब.रा., पूर्ववत्, भूमिका खण्ड ।

नभए पनि स्पष्ट चिनिन्छ र स्वतः पूर्ण हुन्छ भने टुक्का लोकप्रसिद्ध भए पनि र विशेष अर्थ लाग्ने भए पनि वाक्यमा प्रयोग गरिनुपर्छ अनि मात्र त्यो पूर्ण हुन्छ, स्पष्ट हुन्छ।^{५०} भाषामा उखानको भन्दा टुक्काको बढी प्रयोग हुन्छ। उखान वाक्यस्तरको विशिष्ट अभिव्यक्ति हो भने टुक्का भाषाको शब्दभण्डार हो। उखानलाई वाक्यमा प्रयोग गर्नु पर्दैन तर टुक्कालाई वाक्यमा प्रयोग गरेपछि अर्थमा विशिष्टता र चमत्कारिता आउँदछ। यी दुवैको अर्थ विशिष्ट हुन्छ र लोक-अनुभवका आधारमा खारिएर, माँभिएर यी लोक व्यवहारमा प्रचलित भएका हुन्। यी दुवैको भिन्नतालाई बूँदागत रूपमा निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ।

- (१) उखान लघु आकारको हुन्छ भने टुक्का लघुत्तर आकारको हुन्छ।
- (२) टुक्का प्रायः पदावलीगत हुन्छन भने उखान वाक्यगत वा वाक्यांशगत हुन्छन्। त्यसो हुनाले आकारमा टुक्का साना हुन्छन् र उखान ठूला हुन्छन्।
- (३) टुक्का खास-खास शब्दसँग खास-खास क्रियाको मेलभएपछि मात्र बन्दछ भने उखानमा यो नियम लाग्दैन। उखान सूक्ति जस्तै हुन्छ।
- (४) टुक्काको आङ्गनो कथ्य हुँदैन तर कुनै कथ्यलाई प्रकट गर्दा प्रभावकारिताका निमित्त प्रयोग गरिने पदावलीका रूपमा यो रहन्छ। उखानको आङ्गनो छुट्टै कथ्य हुन्छ।
- (५) उखानहरू दृष्टान्तमूलक र व्यञ्जनामूलक हुन्छन् भने टुक्का लक्षणात्मक हुन्छ।
- (६) टुक्कामा प्रायः लक्ष्यार्थ हुन्छ भने उखानमा प्रायः व्यङ्ग्यार्थ हुन्छ।
- (७) उखानमा आख्यानात्मक तत्व हुन्छ भने टुक्कामा हुँदैन।
- (८) टुक्कामा पद्यात्मकता हुँदैन भने उखानमा सो हुन सक्छ।

^{५०} चूडामणि रेग्मी, पूर्ववत्, पृ. २१।

- (९) उखानहरू व्याकरणात्मक कोटिअनुरूप बदलिँदैनन् भने क्रियायुक्त टुक्काहरू व्याकरणात्मक कोटि अनुरूप बदलिन पनि सक्छन् ।
- (१०) एउटै क्रियामूलबाट धेरै टुक्काहरू बन्न सक्छन् तर उखान जथाभावी बन्न सक्दैनन् ।

उखान र टुक्कामा सूक्ष्म रूपमा अध्ययन गर्दा निम्नलिखित बुँदाहरूमा समानता स्पष्ट पार्न सकिन्छ-

- (१) उखान र टुक्का दुबै लोकजीवनमा पुस्तौंपुस्तादेखि चलिआएका लोकोक्तिका रूपमा प्रचलित विधा हुन् ।
- (२) दुबै लोकसाहित्यका अन्य विधाका तुलनामा लघुअभिव्यक्ति हुन् ।
- (३) दुबैले दिने अर्थ सामान्य नभई लक्ष्यार्थमूलक र विशेषार्थप्रधान हुन्छ ।
- (४) दुबै प्रतीकात्मक रूपमा प्रयोग हुन्छन् ।
- (५) दुबै मौखिक र लिखित भाषिक अभिव्यक्तिलाई प्रभावकारी बनाउन प्रयोग हुन्छन् ।
- (६) दुबै लोकजीवनको सामाजिक, सांस्कृतिक र ऐतिहासिक चित्र प्रतिबिम्बित भएको भेटिन्छ ।
- (७) उखान र टुक्का युगौंदेखि मौखिक परम्परामा जीवित हुँदै आएका लोकसाहित्यिक विधा हुन् ।
- (८) उखान र टुक्का दुबैमा अर्थगत ध्वन्यात्मकता, सरलता र सरसता जस्ता विशिष्ट गुण पाइन्छ ।

यसरी हेर्दा उखानसँग टुक्काको सम्बन्ध कुनै न कुनै रूपमा रहेको भेटिन्छ । त्यसैले पनि टुक्का र उखानको निर्माणमा केही न केही तालमेल छ । उखानको टुक्काका रूपमा टुक्कालाई हेर्ने गरिएको पनि पाइन्छ । टुक्काशब्द यही उखानको टुक्काबाट भएको हो र उखानलाई टुक्कासँग जोडेर उखान-

टुक्का भन्ने गरिएको हो भन्ने तर्क पनि रहेको छ । यति हुँदाहुँदै पनि टुक्का र उखानको अलग-अलग अस्तिव सर्वस्वीकृत छ ।

३.६ निष्कर्ष

भाषामा टुक्का उक्तिका रूपमा आउने महवपूर्ण तव हो भन्ने कुरामा दुई मत छैन । नेपाली लोकसाहित्यका विविध विधामध्ये एउटा महवपूर्ण विधाका रूपमा टुक्का रहेको छ । भाषालाई छरितो, मीठो, रसिलो र सारपूर्ण बनाउने टुक्काको प्रयोग नेपाली लोकसाहित्य र लिखित साहित्य दुवैमा हुँदै आएको छ । बोलीचालीमा पनि यसको व्यापक प्रयोग गरिन्छ । नेपाली भाषा बोलिने विभिन्न क्षेत्रका टुक्काहरूको अध्ययनबाट नेपाली भाषा र लोकसाहित्यको अध्ययनमा पूर्णता ल्याउन ठूलो योगदान पुग्ने कुरा स्वतः स्पष्ट छ ।

चौथो परिच्छेद

गोरखाली टुक्काको वर्गीकरण र विश्लेषण

४.१ गोरखाली टुक्काको वर्गीकरण

लोकसाहित्यका हिसाबले धनी गोरखा जिल्ला टुक्काको क्षेत्रमा पनि धनी नै छ । यस क्षेत्रका सम्पूर्ण व्यक्ति शिक्षित - अशिक्षित, बालक-वृद्ध, पुरुष-महिला सबैले प्रशस्त मात्रामा टुक्काको प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

यहाँ प्रचलित टुक्काको संरचना, प्रयोग निम्नानुसार गरिएको छः

४.१.१ समाजविषयक टुक्काहरू

व्यक्ति-व्यक्तिको समूह, परिवार-परिवारको समूह र समाज-समाजको समूह मिलेर राष्ट्र बनेको हुन्छ । यसरी समाजमा बस्ने हरेक व्यक्तिको दैनिक रूपमा एक-आपसमा विविध क्रियाकलाप गर्दछन् । मानिसका सामाजिक दैनिक क्रियाकलापहरूमा माया प्रेम, आँसुहाँसो, मिलनबिछोड, खानपिन, लेनदेन, उठबस, आदि कार्यहरू हुन्छन् । तिनै क्रियाकलापसँग जोडिएका टुक्काहरू गोरखाली भाषामा प्रशस्त भेटिन्छन् । त्यस्ता टुक्काका नमुना यस प्रकार छन् : टुपी काट्नु, मुखमा पानी आउनु, आलु खानु, आँखाको कसिङ्गर हुनु, हगनु न मुत्तु हुनु आदि ।

४.१.२ संस्कृतिविषयक टुक्काहरू

कुनै पनि राष्ट्रको आङ्गनै मौलिक संस्कृति, परम्परा, चाडपर्व, रीतिरिवाज र रहनसहन हुन्छ । त्यहाँको चाडपर्व रीतिस्थितिले आङ्गनोपनको पहिचान गराएको हुन्छ । त्यस्ता चाडपर्व, रीतिथिति र संस्कृतिको अभिन्न सम्बन्ध त्यहाँको जनजीवनसँग रहेको हुन्छ । त्यहाँको संस्कृतिको जनजीवनमा गहिरो प्रभाव पारेको हुन्छ । गोरखा जिल्ला सानै भए पनि यहाँ सांस्कृतिक विविधता छ र त्यसको आङ्गनै छुट्टै पहिचान र विशेषता पनि रहेको छ । गोरखा सांस्कृतिक मान्यताका दृष्टिले निकै धनी छ । त्यसको प्रभाव नेपाली लोकजीवनमा प्रचलित टुक्काहरूमा पनि रहेको देखिन्छ । यहाँ तिनै सांस्कृतिक

परम्परासँग सम्बन्धित टुक्काहरूको नमुना प्रस्तुत गरिएको छ- बाबुको बिहे देख्नु, स्वस्ति शान्ति गर्नु, साइत पर्नु, सराद्ध खानु, चुरा फुट्नु आदि टुक्काले यहाँको स्थानीय संस्कृतिबारे जानकारी दिन्छन् ।

४.१.३ पुराण-इतिहासविषयक टुक्काहरू

गोरखाका टुक्काहरूमा पुराण-इतिहासका घटनाहरू प्रतिबिम्बित भएको पाइन्छ । त्यस्ता पुराण-इतिहासका टुक्काहरूको प्रचलन प्राचीन समयदेखि हुँदै आएको कुरा त्यहाँ प्रचलित टुक्काका नमुनाले बताउँछन् । इतिहास, मानवजातिको भाषा, व्यवहार, परम्परा र रीतिरिवाज कति पुरानो छ ? यिनले जनजीवनलाई के मार्ग निर्देशन गरेका छन् भन्ने कुरा त्यस्ता पुराण-इतिहासका घटनाहरू समेटिएका टुक्काहरूले बताउँछन् । जनजीवनमा व्याप्त इतिहास-पुराणको प्रभाव त्यहाँका टुक्कामा प्रतिबिम्बित छ । पुराण-इतिहाससँग सम्बन्धित गोरखाली टुक्काका नमुना यस प्रकार छन्- रामराज्य, श्रीगणेश गर्नु, पुराण सुनाउनु आदि ।

४.१.४ लोकविश्वासविषयक टुक्काहरू

कुनै पनि समाजका परम्परा, रीतिस्थिति, चाडपर्व, लोकविश्वास आदि आङ्गनै किसिमका हुन्छन् । त्यहाँको लोकजीवनमा प्रचलित लोकोक्तिहरूले तिनै परम्परा, चाडपर्व, धर्म र लोकविश्वासका तीता-मीठा अनुभवलाई साररूपमा अभिव्यक्त गरेका हुन्छन् । लोकजीवनमा प्रचलित लोकोक्तिहरूबाट त्यहाँको जनजीवनको यथार्थ स्थिति बुझ्न मद्दत मिल्छ । कुन ठाउँमा लोकजीवनले के कसरी आङ्गना लोकपरम्परा र विश्वासलाई कुन रूपमा लिएको छ र यसलाई मान्दै जीवित राख्दै आएको छ भन्ने कुराहरू त्यस्ता लोकोक्तिहरूले बताइरहेका हुन्छ । हिन्दूधर्ममा आधारित लोकजीवनमा पनि त्यस्ता परम्परा, चाडपर्व र लोकविश्वास झल्काउने टुक्काहरू प्राचीन कालदेखि नै प्रचलित हुँदै लोकमानसको विश्वास जित्दै आइरहेका भेटिन्छन् । त्यस्ता लोकोक्तिका रूपमा आउने टुक्काहरूले लोकजीवनको यथार्थ गतिविधि र विश्वासलाई जीवित राख्दै आएका छन् । तिनलाई परम्पराका सूत्रका रूपमा लिइन्छ र आङ्गनो दैनिक

व्यावहारिक क्रियाकलापमा उचित ठाउँ र अवसरमा प्रयोग गरिन्छ । तिनले समाजको बारेमा शिक्षा-ज्ञान दिइरहेको हामी पाउँछौं । लोकविश्वासको रूपमा प्रचलित टुक्काहरू, पाप धर्म, चाडपर्व, दिनदशा, भूतप्रेत, धामीभाँक्री, बोक्सी, अपशकुन, भाग्य अदि विविध कुरासँग सम्बद्ध छन् । टुहुराको दिन फर्कनु, चुरा फुट्नु, पोथी बास्नु, बाडुली लाग्नु, हात चिलाउनु आदि टुक्कामा यस प्रकारको प्रयोगलाई देख्न सकिन्छ ।

४.१.५ प्रकृतिविषयक टुक्काहरू

प्राकृतिक जगत्का विविध विषय आगो, हावा, घाम, पानी, आकाशपाताल आदि पक्ष समेटिएका टुक्काहरू गोरखाली भाषामा प्रशस्त भेटिन्छन् । ती प्राकृतिक विविधतासँग मानिसको प्रत्यक्ष सम्बन्ध हुने भएकाले मानिसका दैनिक क्रियाकलापका अनुभूति टुक्कामा समेटिएका हुन्छन् । त्यस्ता टुक्काका केही उदाहरण निम्न लिखित छन्: आगो हुनु, हावाले भेट्टाउनु, हावा खुस्कनु, घाम डुब्नु, पानीपँधेरो हुनु, पानी माथिको ओबानो, आकाशको चरा खसाउनु, आकाश पाताल हाँक्नु आदि ।

४.१.६ आर्थिक तथा कृषिव्यवसायमूलक टुक्काहरू

गोरखाली जनजीवनसँग गरिबी, कृषिव्यवसाय, नोकरी, धनीगरीब, ऋण, साहु, खेतीपाती आदि गाँसिएका छन् । त्यसैले यी विषय समेटिएका टुक्काहरू यहाँ पाइन्छन् । यस्ता टुक्काहरूमा गोरखाली जीवनमा अवस्थाको यथार्थ चित्र प्रतिबिम्बित भएको पाइन्छ । यस्ता टुक्काहरू गोरखाली भाषामा प्रशस्त रहेका छन् । जस्तै: हातमुख जोर्नु, ऋण लाग्नु, टुप्पाबाट पलाउनु, पाउ मल्नु आदि ।

४.१.७ व्यङ्ग्य विषयमूलक टुक्काहरू

गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरूमा व्यङ्ग्यात्मकता पनि पाइन्छ । व्यङ्ग्यात्मकताको मूल पृष्ठभूमि छेडपेच, उडाउनु, होच्याउनु आदिसँग जोडिएको हुन्छ । हाँसोमजाका रूपमा कुनै विषयवस्तु, मानिस, पशुपंक्षी जाति आदिलाई उडाएका, व्यङ्ग्य हानेका र छेडपेच गरेका टुक्काहरू विभिन्न

प्रकारमा यहाँ उपलब्ध छन् । यसरी घोचपेज गरिए पनि यहाँको समाजमा गुणको कदर चाहिँ गरिने कुरा अविस्मरणीय छ । यहाँ- आलु खानु, गाईखाने विद्या, गोरु व्याउनु, तीन कौडीको पनि नहुनु, हान्ने राँगो जस्तो आदि टुक्कामा व्यङ्ग्यात्मकताको अनुभव गर्न सकिन्छ ।

४.१.८ जातिसम्बन्धी टुक्काहरू

गोरखा जिल्ला विभिन्न जात-जाति बसोबास गरेको जिल्ला हो । विभिन्न जात-जातिको सीमाभित्र बाँधिएका निश्चित जात-जातिको स्वभाव, प्रकृति, बानीवेहोरा आदि गुणदोषलाई लिई तिनीहरूको आन्तरिक वास्तविकता प्रकट गर्ने खालका टुक्काहरूलाई यस विभाजन भित्र राख्न सकिन्छ । यहाँका हरेक जातिको बानी र क्रियाकलापलाई आलोचना गरी यहाँ गुणदोष देखाइएको पाइन्छ र तिनको मर्मतर्फ हेरी छ्यान-पहिचान गर्दै मनद्वोग पोखिएको हुन्छ । जस्तै- जाँड खाएको सार्कीजस्तो, छोइछिटो, जेलामा नमिलेको डुम, अघाएको बाहुन आदि ।

४.१.९ स्थानसम्बन्धी टुक्काहरू

गोरखा जिल्ला भौगोलिक दृष्टिले पहाडी जिल्ला हो । यहाँको भू-बनोटमा एकरूपता पाइँदैन । यहाँको स्थानसम्बन्धी लोकोक्तिहरू पनि यहाँ प्रचलित छन् । यहाँका विशेषतालाई अँगाल्दै तिनलाई जनसमक्ष प्रस्तुत गर्ने केही उखानहरू यहाँ छन् । जस्तै डाँडाको जुन । गोरखामा प्रसस्तै डाँडाहरू छन् । त्यसैले यहाँको समाजमा यो अत्यन्त प्रचलित मात्र नभई लोकप्रिय पनि छ ।

४.१.१० विविध विषयवस्तुसम्बन्धी टुक्काहरू

माथि वर्गीकरण गरिएका टुक्काहरूबाहेक अन्य विभिन्न विषयसँग सम्बन्धित टुक्काहरू पनि यहाँ प्रचलित छन् । शिक्षा, नीति-उपदेश, स्त्रीपुरुष, प्रकृति, कृषि, पेसा, पशुपक्षी, इत्यादि प्रसङ्गलाई समेट्ने टुक्काहरूको प्रचलन गोरखामा प्रशस्त छ । जस्तै: गिद्धले छेरेजस्तो अक्षर हुनु, गाई मारी गधा पोस्नु, तरमा पल्केको विरालो, पसिना चुहाउनु, हान्ने राँगो जस्तो हुनु, दुरान फर्काउनु, घाँडो आइलागनु आदि ।

४.२ गोरखाली टुक्काको विश्लेषण

टुक्काको एकभन्दा बढी मुक्त रूपको संगठित संरचना हो । यसको संरचनामा रहेका शब्दहरू एक-अर्कासँग बलियो गरी गाँसिएका हुन्छन् । टुक्काको संरचनामा रहेका शब्दको छुट्टाछुट्टै प्रयोग गर्दा कुनै एक शब्दलाई भिकेर त्यस ठाउँमा त्यस्तै अर्को शब्द राख्दा संरचना भताभुङ्ग भई अर्थमा फरक पर्न जान्छ । जस्तै 'ऋण काढ्नु' को अर्थ फिर्ता गर्नेगरी साहूबाट पैसा लिनु हो । यसलाई वाक्यमा प्रयोग गर्दा "मैले ऋण काढेर छोरालाई पढाएको हुँ" आदि हुन्छ ।

माथि आएको 'ऋण' को ठाउँमा फिर्ता लिने गरी लिएको पैसा वा अन्य शब्द राखियो भने त्यो टुक्का बन्दैन । एक वा एकभन्दा बढी शब्दहरू मिलेर बन्ने टुक्काको अर्थ व्यञ्जनायुक्त भन्दा लाक्षणिक हुन्छ । पदसमूह अन्तर्गत जुन पायो त्यही शब्द राखेर टुक्का बन्दैन । यसर्थ यस्ता वाक्यांशहरू टुक्का हुन्छन् जसले भाषालाई सबल र सरस बनाउनाको साथै लक्ष्यार्थ पनि जाहेर गर्दछन् । गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्का यस प्रकारका नै छन् ।

खास क्रियासँग खास शब्दको मेल हुँदा मात्र टुक्का बन्दछ । जस्तै अर्को उदाहरण: 'पानी-पानी हुनु' । यसको ठाउँमा 'जलजल हुनु' भयो भने त्यो पनि टुक्का हुँदैन । 'पानी-पानी हुनु' पदसमूहले जुन लाक्षणिक अर्थ प्रदान गर्दछ, 'जलजल हुनु' ले त्यस्तो लाक्षणिक अर्थ प्रदान गर्न सक्दैन । गोरखा जिल्लामा प्रचलनमा रहेका टुक्कामा पनि यस किसिमको लाक्षणिकता पाइन्छ र यहाँ भाषालाई चमत्कारपूर्ण बनाउन र भावमा तीक्ष्णता ल्याउनका लागि टुक्काको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यहाँ प्रचलित टुक्काको भाषिक, विषयवस्तुगत र साहित्यिक आधारमा निम्नानुसार विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

४.२.१ भाषिक आधारमा विश्लेषण

भाषिक संरचनाका दृष्टिले गोरखाली टुक्काहरूको बनोट विविध किसिमको देखिन्छ । संरचना तथा बनोटका दृष्टिले गोरखाली टुक्काहरू

दुईपददेखि पाँचपदीय रूपसम्मका देखा पर्छन् । जस्तै 'अधि लाग्नु', 'हाड घोट्नु', 'गल्लीको कुकुर भैं दुःख पाउनु', 'छन्द न बन्दको कुरा गर्नु', आदि । त्यस्तै व्याकरणात्मक र अर्थसम्बन्धी आधारमा पनि तिनको विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

४.२.१.१ नाम र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू

| नाम + क्रियापद | □ | टुक्का |
|----------------|---|----------------|
| नाक काट्नु | | नाक काट्नु |
| खुट्टा घुमाउनु | | खुट्टा घुमाउनु |
| कम्मर कस्नु | | कम्मर कस्नु |
| जोगी हुनु | | जोगी हुनु |

४.२.१.२ अव्यय र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू

| अव्यय + क्रियापद | □ | टुक्का |
|-------------------|---|-------------------|
| उँधोमुन्टो लगाउनु | | उँधोमुन्टो लगाउनु |
| तलमाथि गर्नु | | तलमाथि गर्नु |
| ट्वाल्ल पर्नु | | ट्वाल्ल पर्नु |
| ठ्याक नमिल्नु | | ठ्याक नमिल्नु |

४.२.१.३ विशेषण, विशेष्य र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू

| विशेषण + विशेष्य + क्रियापद | □ | टुक्का |
|-----------------------------|---|--------------------|
| अँध्यारो मुख लाउनु | | अँध्यारो मुख लाउनु |
| लामो हात गर्नु | | लामो हात गर्नु |
| थाड्ने कुरा गर्नु | | थाड्ने कुरा गर्नु |
| आठे जवाफ दिनु | | आठे जवाफ दिनु |

४.२.१.४ भेदक, भेद्य र क्रियापदबाट बनेका टुक्काहरू

| भेदक | + | भेद्य | + | क्रियापद | □ | टुक्का |
|----------|---|-------|---|----------|---|-------------------|
| कुहिराको | | काग | | हुनु | | कुहिराको काम हुनु |
| कागको | | फुल | | चोर्नु | | कागको फुल चोर्नु |

४.२.१.५ क्रियापदविहीन टुक्काहरू

मामाको धन, ऐरेलुजस्तो आदि ।

४.२.१.६ विभिन्न शब्द र शब्दावलीमा एउटै क्रियापद भएका टुक्काहरू

कुनै एउटा क्रियामा विभिन्न खास शब्द घटित हुँदा विशेष अर्थ प्रकट गर्ने खालका टुक्काहरू पनि गोरखा जिल्लामा प्रचलनमा रहेका पाइन्छन् । जस्तै: गर्नु, हुनु, लाग्नु जस्ता क्रियामा विभिन्न शब्द वा शब्दावली लागेर थुप्रै टुक्का बनेका छन् । ती मध्ये केही उदाहरण यसप्रकार दिन सकिन्छ-

गर्नु: लामो हात गर्नु

खुलेर कुरा गर्नु

ओकालत गर्नु

घरजम गर्नु

हुनु: सुनमा सुगन्ध हुनु

घरको न घाटको हुनु

तरमा पल्केको विरालो हुनु

दाहिने हात हुनु

लाग्नु: तर लाग्नु

तह लाग्नु

मुखमा बुझो लाग्नु

हात लाग्नु

४.२.१.७ एउटै शब्दमा विभिन्न क्रियापद लागेर बनेका टुक्काहरू

एउटै शब्दमा विभिन्न क्रियापद लागेर बनेका थुप्रै टुक्काहरू गोरखा जिल्लामा प्रचलित छन् । ती मध्ये केही उदाहरण यस प्रकार छन्:

कुरा: कुरा चपाउनु

कुरा लगाउनु

कुरा मिल्नु

कुरा काट्नु

कुरा खानु

मन: मन चोर्नु

मन मिल्नु

४.२.१.८ पदसमूह र क्रियापद मिलेर बनेका टुक्काहरू

पदसमूह र क्रियापद मिली बनेका टुक्काका उदाहरण यस प्रकार छन्-

बलेको आगो ताप्नु

भालुलाई पुराण सुनाउनु

मामाको घर जानु

मुखमा पानी आउनु

बुद्धिमा डडेलो लाग्नु

४.२.१.९ समस्त शब्द र क्रियापद मिलेर बनेका टुक्काहरू

समस्त शब्द र क्रियापद मिलेर बनेका टुक्काका उदाहरण निम्नानुसार छन् :

उँधोमुन्टो लगाउनु

उल्लीबिल्ली बनाउनु

घरज्वाइँ बस्नु

नालीबेली लाउनु

४.२.१.१० अर्थ एक रूप अनेकका टुक्काहरू

गोरखा जिल्लामा प्रचलित कतिपय टुक्काहरूको एउटै अर्थ भए पनि तिनको रूप संरचना र स्रोत बेग्लै पाइन्छ -

भाग्नु अर्थमा टुक्का

सुईकुच्चा ठोक्नु

बुर्कुसी मार्नु

डाँडो काट्नु

कुलेलम ठोक्नु

टाप कस्नु

मर्नु अर्थमा टुक्का

माटो खानु

जिब्रो टोक्नु

सिलिटमुर खानु

स्वर्ग जानु

मास छर्न जानु

रुनु अर्थमा टुक्का

कुकुरको मुत चुहाउनु

आँसुले बाटो नपाउनु

रिसाउनु अर्थमा टुक्का

आगो हुनु,

रिसको भोंकमा पर्नु

चाकडी गर्नु/सेवा गर्नु अर्थमा टुक्का

पाउ मल्नु

कोरीको पाउ मल्नु

भिँगा धपाउनु

प्रचार गर्नु अर्थमा टुक्का

भ्याली पिट्नु

फुटानी लाउनु

थोत्रो थाल ठटाउनु

४.२.१.११ बिम्बात्मक टुक्काहरू

बिम्ब भन्नाले कुनै पनि वस्तु, दृश्य, घटनाको चित्रमय प्रस्तुती हो । शब्दद्वारा जनमानसमा कुनै वस्तु, दृश्य वा घटनाको चित्र भल्काउने रूप हो । जसलाई शब्दजाल, चित्रात्मक शब्द पनि भनिन्छ । कुनै कुनै शब्दले मात्र त्यस्तो बिम्बात्मक चित्र प्रस्तुत गर्दछ । जुन शब्दले कुनै वस्तुको चित्र, दृश्य, घटना वा छाया प्रस्तुत गर्छ त्यसैलाई मात्र बिम्बात्मक स्पमा लिइन्छ । बिम्बहरू प्रतीकात्मक हुन्छन् । बिम्बहरू सामाजिक जीवनका रहस्यमय घटना, लोकप्रिय वस्तु, दृश्य चित्र, ऐतिहासिक घटना, पौराणिक प्रसङ्गहरू हुन्छन् । अभि तिनमा पनि विशेषगरी प्राकृतिक साधन, वस्तु, दृश्य, चित्रको भल्को दिने रूप नै बिम्ब हुन् । गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरूलाई बिम्बात्मक आधारमा हेर्नका निम्ति तलका टुक्काहरू उदाहरण बन्न सक्तछ ।

आँखा जुधाउनु

आँसुले बाटो नपाउनु

आकाश पाताल हाँक्नु

कुखुरे बैँस

कुहिराको काग

खोरिया फाँड्नु

गिद्धले छेरेजस्तो अक्षर लेख्नु

थुक निल्नु

भालुलाई पुराण सुनाउनु इत्यादि ।

४.२.१.१२ उखान रूपका टुक्काहरू

गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरूमा उखान रूपमा टुक्काहरू पनि पाइएका छन् । संरचनाका दृष्टिले अधिकांश टुक्काहरू उखानभन्दा साना हुन्छन् तर यहाँ कतिपय टुक्काहरू उखानका रूपमा प्रयोग हुँदै आएका छन् । संरचना तथा बनोटका दृष्टिले तिनले उखानका रूप लिएका छन् तर प्रयोगमा भने टुक्काका रूपमा आएका भेटिन्छन् । यस्ता टुक्काहरूका केही नमुनामा निम्नानुसार छन् :

- एक कानले सुन्नु अर्को कानले उडाउनु
- ओठ निचोर्दा दूध निस्कनु
- काशीमा मुख धोएर आउनु
- पश्चिमबाट घाम उदाउनु
- हगनु न मुत्नु हुनु
- बुद्धिमा डढेलो लाग्नु

४.२.१.१३ निषेध रूपका टुक्काहरू

गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरू मध्ये केही निषेध जनाउने खालका पनि छन् । निषेध रूपमा टुक्काहरूले लोकजीवनको मार्गदर्शन गर्नको लागि कुन समय, ठाउँ र परिस्थितिमा के गर्नुपर्ने र के गर्नु नपर्ने सन्देश दिइरहेका हुन्छन् साथै त्यस्ता टुक्काहरूले जीवनलाई महत्वपूर्ण कुराको सङ्केत गर्दै

सही कुरा पहिचान गराउने काम गरिरहेका भेटिन्छन् । तिनले कस्तो अवस्था, समय र परिस्थितिमा काम गर्न नजान्दा के परिणाम निस्कन्छ भन्ने कुराको पनि बोध गराइरहेका हुन्छन् । गोरखाली लोकजीवनमा प्रचलित निषेध रूपमा टुक्काहरूका केही उदाहरण निम्नानुसार छन् ।

- आँसुले बाटो नपाउनु
- खुट्टा टाड्नु
- फुटेको आँखाले पनि नहेर्नु
- मुखमा ठेडी जाक्नु
- काट्टो खानु

४.२.१.१४ द्वित्व शब्दका आधारमा

गोरखा जिल्लामा पाइएका केही टुक्काहरू द्वित्व भएर बनेका शब्द र क्रियादका योगबाट बनेका छन् ।

- आच्छु-आच्छु पार्नु
- ठाकठुक पर्नु
- पानी पानी हुनु
- तोवातोवा पर्नु

४.२.१.१५ पद सङ्ख्याको आधारमा

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूलाई केलाउँदा पद सङ्ख्याको आधारमा पनि विश्लेषण गर्न सकिन्छ-

दुई पदीय टुक्का

- अधि लाग्नु
- आँखा उघ्ननु

- उल्टो आइलागनु
- कुरा मिल्नु
- गोता खानु
- हाड घोदनु
- मन कुँडिनु

तीनपदीय टुक्काहरू

- अर्काको टाड्मुनि छिर्नु
- आँखा ओवानो हुनु
- कागको फुल चोर्नु
- खुट्टी देख्दै पत्याउनु
- गाईमारी गधा पोस्नु
- नाकमा ठेस लाग्नु
- फुटेको आँखाले नहेर्नु
- हातको सफाइ गर्नु

चारपदीय टुक्काहरू

- अक्क न पक्क पर्नु
- अगुल्लाले आङ्गनो पुर्पुरोमा हान्नु
- काशीमा मुख धोएर आउनु
- खेलो हराएको जस्तो हुनु
- तरमा पल्केको बिरालो हुनु

- न्याउरी मारी पछुतो हुनु
- हलो काटी मुङ्गो बनाउनु
- पानीमाथिको ओवानो हुनु

पाँचपदीय टुक्काहरू

- गल्लीको कुकुरले भैं दुःख पाउनु
- छन्द न बन्दको कुरा गर्नु
- दूधको दूध पानीको पानी छुट्टयाउनु

४.२.२ विषयवस्तुका आधारमा विश्लेषण

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूलाई विषयवस्तुका आधारमा पनि विश्लेषण गर्न सकिन्छ । यहाँ पाइने टुक्काहरूलाई लोकजीवनको व्यवहारिक यथार्थ, अनुभूतिका वाक्यांश रूपलाई सामाजिक संस्कार या परम्परा, ऐतिहासिक, पौराणिक, आर्थिक स्थिति, अन्धविश्वास तथा शकुन-अपशकुन, मानवीय प्रवृत्ति, शारीरिक अवयव, लोक विश्वास, पशुपक्षी तथा जीवजन्तु आदिका आधारमा विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

४.२.२.१ सामाजिक संस्कार या परम्परा

गोरखाली जनजीवनमा विभिन्न संस्कार, चाडपर्व रीतिरिवाजहरू विद्यमान छन् । यस्ता संस्कारसँग सम्बन्धित विभिन्न टुक्काहरू यहाँ प्रचलित देखिन्छन् -

चुरा फुट्नु : गोरखाली जनजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग अपशकुनको अर्थमा गरिएको पाइन्छ । खासगरी यस टुक्काले विधवा जीवनको सङ्केत गर्दछ । विधवा जीवन बडो कष्टकर र दुःखदायी हुने हुनाले र संस्कारगत रूपमा पतिको मृत्युपछि चुरा फुटाउने चलन रहेकाले चुरा फुट्नुले पतिको मृत्यु भएको जानकारी दिन्छ ।

सराद्ध खानु : यस टुक्काको प्रयोग गोरखाली जनजीवनमा पितृप्रसाद ग्रहण गर्नुको अर्थमा नलिई कसैको मृत्युपश्चात् उसको सम्भनामा गरिने भोजनका रूपमा लिइए तापनि यो टुक्का प्रयोगका दृष्टिले शुभ नभई अशुभ शब्दको रूपमा लिएको पाइन्छ ।

टपरी टकटक्याउनु: गोरखाली जनजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग निम्नस्तरको पेसाको रूपमा लिइएको छ । यहाँको समाजमा पण्डितहरूले यजमानका घरमा धार्मिक कार्य गर्ने प्रचलन छ । यो परम्परा पहिलेबाट चल्दै आएको हो तापनि आजकल आएर टपरी टकटक्याउने अथवा यजमानको घरमा गई गरिने कामलाई हेयको दृष्टिले हेर्ने गरेको पाइन्छ ।

अपुताली खानु : गोरखाली जनजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग अपूतो हुनु अथवा आङ्गनो उत्तराधिकारी कोही पनि नहुनुको अर्थमा लिइने गरिन्छ ।

काट्टो खानु : यस टुक्काको प्रयोग मृत मान्छेको आकार बनाइएको खोनकुरालाई लिइएको पाइन्छ । काट्टो खानुको अर्थ लोभलालचमा परी अभक्ष खाने कुरालाई ग्रहण गर्नु भन्ने हुन्छ ।

सिँदुर पुछ्छिनु : सिँदुर पुछ्छिनु टुक्काको प्रयोग पति वियोग खप्नुको अर्थमा गर्ने गरिन्छ । सिँदुर सौभाग्यको अर्थमा लिइने र उक्त कुरा पुछ्छिँदा विधवाको रूपमा जीवन भत्किनु वा विग्रनु भन्ने अर्थलाई जोड दिन यस टुक्काको प्रयोग गरिन्छ ।

४.२.२.२ ऐतिहासिक घटना

गोरखाली जनजीवनमा ऐतिहासिक घटनामा आधारित टुक्काहरू पनि पाइन्छन् । इतिहासमा मानव जातिको भाषा, व्यवहार परम्परा र रीतिरिवाज कति पुरानो छ ? तिनले जनजीवनलाईव के मार्ग निर्देशन गरेका छन् भन्ने कुरा त्यस्ता ऐतिहासिक घटनाहरू समेटिएका टुक्काहरूले बताएको पाइन्छ -

बिँडो थाम्नु : गोरखाली जनजीवनमा पनि बिँडो थाम्नु टुक्काको प्रयोग अन्य क्षेत्रमा प्रचलित अर्थ कै रूपमा लिइएको पाइन्छ । आङ्गनो पितापुर्खाले गर्दै

आइरहेको पेसा, व्यवहार आदिलाई ग्रहण गर्नुको अर्थमा यसको प्रयोग गर्ने गरिन्छ ।

राज्य चलाउनु : यस टुक्काको प्रयोग एकाधिकार स्थापना गर्नुको अर्थमा लिइएको पाइन्छ । कसैले कसैमाथि वा समाजमाथि आङ्गनो वर्चस्व वा दबाव राख्न गरेको अर्थमा यस टुक्काको प्रयोग गर्ने गरिन्छ ।

रामराज्य : 'रामराज्य' टुक्काको प्रयोग सुशासन स्थापना गर्नुको अर्थमा प्रयोग गरिएको पाइन्छ । कसैमाथि हैकमवादी चरित्रबिना आङ्गनो प्रभाव देखाउनु भन्ने अर्थमा यसको प्रयोग गरिन्छ ।

४.२.२.३ पौराणिक विषयवस्तु

गोरखाली लोकजीवनमा पुराणसँग सम्बन्धित टुक्काहरू पनि पाइन्छन् । पुराणमा वर्णित पुराना कुराले टुक्काका रूप धारण गरेका पाइन्छन्-

श्रीगणेश गर्नु : गोरखाली लोकसमाजमा श्री गणेश गर्नु टुक्काको प्रयोग कुनै कुराको आरम्भ गर्नु वा सुरुवात गर्नु भन्ने अर्थमा गरिन्छ ।

देवता थाप्नु : यस टुक्काको प्रयोग गोरखाली लोकजीवनमा सर्त राख्नुको अर्थमा प्रयोग गरिन्छ । यस टुक्काले कुनै वस्तुविशेषलाई नचलाउने वा निषेध गर्ने अर्थ बहन गर्दछ ।

भाकल गर्नु : गोरखाली लोकजीवनमा प्रचलित यस टुक्काको प्रयोग कुनै उद्देश्यपूर्तिका लागि ईश्वरसमक्ष गरिने प्रार्थनाको रूपमा गरिएको पाइन्छ ।

पुराण सुनाउनु : पुराण सुनाउनु टुक्काको प्रयोग यस क्षेत्रमा नचाहिने वर्णन गर्ने कामको अर्थमा प्रयोग गर्ने गरिन्छ ।

कुशको बाहुन हुनु : यस टुक्काको प्रयोग गोरखाली जनजीवनमा कुनै ठूलो महत्त्व नभएको थापनाको रूपमा मात्र काम गर्ने कार्यविशेषको अर्थमा गर्ने गरिन्छ ।

४.२.२.४ आर्थिक स्थिति

गोरखाली जनजीवनमा आर्थिक स्थितिसम्बन्धी टुक्काहरू पनि पाइन्छन् । गोरखाली भाषाका टुक्काहरूमा गरिबी, नोकरी, धनी गरिब, साहू-ऋण आदि विषयलाई समेट्ने टुक्का प्रयोग भएको पाइन्छ । यस्ता टुक्काहरूमा गोरखाली जीवनका अवस्थाको यथार्थ चित्र प्रतिबिम्बित भएको पाइन्छ ।

थोत्रो थाल ठटाउनु : यस टुक्काको प्रयोग गोरखाली लोकजीवनमा बिनासित्तिको हल्ला मच्चाउने कार्यको अर्थमा गर्ने गरिन्छ ।

ऋणमा डुब्नु : ऋणमा डुब्नु टुक्काको प्रयोग सबै क्षेत्रमा एकै किसिमले गर्ने गरिएको देखिन्छ । आङ्गनो औकातले नभ्याउने गरी ऋण काढ्नु र तिर्न सक्ने हैसियत नरहेको अवस्थालाई यस टुक्काले सङ्केत गर्छ ।

पसिना चुहाउनु : गोरखाली जनजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग कठिन परिश्रम गर्नु भन्ने अर्थमा गरिन्छ । मिहिनेत गरिएको अर्थमा यस टुक्काको प्रयोग हुन्छ ।

ऋण लाग्नु : यस टुक्काको प्रयोग यस पदावलीमा रहेको अभिधात्मक अर्थकै रूपमा गरिन्छ ।

पसिना बगाउनु : गोरखाली लोकजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग मिहिनेत गर्नु अर्थमा गरिन्छ ।

४.२.२.५ अन्धविश्वास तथा शकुन र अपशकुन

गोरखा जिल्लामा सामाजिक अन्धविश्वास, शकुन-अपशकुन जस्ता विषयसँग सम्बन्धित टुक्काहरूको प्रयोग भएको पाइन्छ । यहाँ रुढीवादी परम्परामा आधारित विभिन्न किसिमका टुक्काको प्रयोग पाइन्छ :-

अगति पर्नु : गोरखाको लोकजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग मुक्ति नपाई मुत्थुपछि दुःख पाउनु वा शकुन प्राप्त नभएर अपशकुनको स्थिति बेहोर्नुपर्ने स्थितिमा पर्नुको अर्थमा गरिएको पाइन्छ ।

आमा-बाबु टोक्नु : यस टुक्काको प्रयोग कुनै बच्चाको जन्मका कारण आमा-बाबु मरेको हो भन्ने अर्थ बुझाउनका गर्ने गरेको पाइन्छ ।

खोटो कर्म : भाग्यवादी लोकपरम्परामा विश्वास गर्ने गोरखाली लोकजीवनमा जीवनमा कुनै किसिमको उन्नति-प्रगति आदि नहुनुमा उसको कर्म (भाग्य) कमसल वा खोटो रहेको हो भन्ने अर्थमा यो टुक्का प्रयोग गरिएको पाइन्छ ।

छोइछिटो हाल्नु : जातीय विभेदसँग सम्बन्धित यस टुक्काको प्रयोगले समाजमा तल्लो जात भनिने व्यक्तिहरूबाट छोइँदा चोखिने प्रवृत्तिलाई देखाउँछ ।

स्वर्ग जानु : यस टुक्काले गोरखाको लोकजीवनमा त्यसले मृत्युपछि स्वर्गप्राप्ति गर्छ जसले जिउँदो हुँदा धर्मकर्म गर्छ भन्ने विश्वासमा आधारित छ । स्वर्ग प्राप्त हुनुलाई ठूलो उपलब्धिका रूपमा लिइएको छ ।

४.२.२.६ मानवीय प्रवृत्ति

गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरूमा मानवीय प्रवृत्तिको यथार्थ चित्रण प्रतिबिम्बित भएको पाइन्छ । यस्ता प्रवृत्तिहरूलाई झल्काउने टुक्काहरूको प्रयोग प्रशस्त रूपमा पाउन सकिन्छ :

धाक लगाउनु : यो टुक्का मानवीय स्वभावप्रति सम्बन्धित छ । कुनै पनि कार्य गर्न नसक्ने वा नभए पनि केही हुँ भन्ने फोस्रो रवाफ देखाउनुलाई धाक लगाउनु भन्ने अर्थमा प्रयोग गरिन्छ ।

जिल खानु : यस टुक्काको प्रयोग छक्क पर्नुको अर्थमा गरिन्छ । सोच भन्दा भिन्न फल प्राप्त हुँदा आश्चर्य चकित अवस्थामा पुग्नु नै जिल खानु हो ।

अल्छी लाग्नु : यस टुक्काको प्रयोग पदावली कै अभिधात्मक अर्थकै रूपमा गरिन्छ । कुनै कार्यप्रति नलाग्नुको स्थिति नै अल्छी लाग्नु हो ।

अँध्यारो मुख लाउनु : यस टुक्काको प्रयोग कुनै पनि व्यक्तिको उदासीन मुखाकृति वा भावसँग सम्बन्धित छ ।

४.२.२.७ शारीरिक अवयवसम्बन्धी वर्णन

गोरखा जिल्लामा शारीरिक अवयव सम्बन्धी टुक्काहरू प्रचलित छन् । मानव शरीरका विभिन्न अङ्ग तिनका क्रियाकलाप र विशेषताका आधारमा थुप्रै टुक्काहरू निर्मित भएका छन् । शारीरिक अवयव झल्काउने त्यस्ता टुक्काहरूमा ती अङ्गहरू प्रतीकका रूपमा आएका हुन्छन् । कुन समयमा के कस्तो क्रियाकलाप गर्ने भन्ने कुरा पनि त्यस्ता टुक्काहरूले देखाउँछन् । मानव शरीरका अवयवहरूमा बाह्य र आन्तरिक अवयवसँग सम्बन्धित दुवै किसिमका टुक्काहरू निर्माण भएका छन् । आँखा बाह्य अवयव हो भने मन भित्री अवयव हो । यस्ता टुक्काका उदाहरणहरू निम्नानुसार छन्:

मन मिल्नु : यस टुक्काको प्रयोग दुई व्यक्तिबीच एक-अर्काको बिचार मिल्नुसँग सम्बन्धित छ । गोरखाको लोकजीवनमा मन मिल्नुलाई विचारबीचकै मेलका अर्थमा लिइन्छ ।

हृदय खोल्नु : हृदय खोल्नुले आङ्गना विचार भावलाई अरु समक्ष पुऱ्याउनुको तात्पर्यमा प्रयोग गर्ने गरिएको छ ।

आँखा उघनु : यस टुक्काको प्रयोग गोरखाली जनजीवनमा होस खुल्नु, चेत आउनुको अर्थमा गरिने गरिन्छ ।

तिघ्रा ठटाउनु : यस टुक्काको प्रयोग खुसी वा उत्साह मनाउनुको अर्थमा गर्ने गरेको देखिन्छ ।

आन्द्रा बटारिनु : यस टुक्काको प्रयोग गोरखाली लोकजीवनमा भोक लाग्नुका अर्थमा नै गरिन्छ ।

४.२.२.८ पशुपक्षी तथा जीवजन्तु

गोरखाली टुक्काहरूमा पशुपक्षीसम्बन्धी विषयका विविध विशेषता समेटिएका टुक्काहरू पाइन्छन् । तिनमा पशुपक्षीका गतिविधिसँग मानव जीवनको प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सम्बन्धगाँसिएको छ । पशुपक्षीका क्रियाकलापबाट प्राप्तानुभूति टुक्काको रूपमा प्रयोग भएको पाइन्छ :

कुखुरे बैस : गोरखाली लोकजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग मोशल प्रेम अथवा विवेकहीन प्रेमको अर्थमा गर्ने गरिएको छ ।

कागको फूल चोर्नु : कागको फूल चोर्नु टुक्कालाई गोरखाली लोकजीवनमा चतुर स्वभाव भएको अर्थमा प्रयोग गरिन्छ ।

उडेको चरा खसाल्नु : गोरखाली लोकजीवनमा यस टुक्काको प्रयोग असम्भवलाई पनि सम्भव तुल्याउनुको अर्थमा गरिन्छ ।

भालुलाई पुराण सुनाउनु : गोरखाली लोकजीवनमा प्रचलित यस टुक्काको प्रयोग विवेकहीन, संवेदनाहीन व्यक्तिलाई असल सरसल्लाह दिँदा कुनै अर्थ रहँदैन भन्ने अर्थमा गरिएको छ ।

कुकुरको मुत चुहाउनु : गोखाली लोकजीवनमा प्रचलित यस टुक्काको प्रयोग नचाहिँदो कुरामा आँसु चुहाउने (खसाल्ने) अर्थमा गरिन्छ ।

गोरु बेचेको साइनो लगाउनु : गोरखाली लोकजीवनमा प्रचलित यस टुक्काको प्रयोग अवसरवादी स्वभाव एवं काम लिनका लागि जसलाई पनि आङ्गनै नातेदार ठान्ने मानवीय स्वभावलाई देखाउन गर्ने गरिन्छ ।

गाई मारी गधा पोस्नु : गोरखाली लोकजीवनमा प्रचलित यस टुक्काले असललाई त्यागी कमसललाई स्वीकार गर्ने अथवा ठीक-बेठीक छुट्टयाउन व्यक्तिचरित्रलाई सङ्केत गर्दछ ।

४.२.२.९ लोकविश्वास

गोरखा जिल्लामा लोकविश्वासमा आधारित टुक्काहरू पनि प्रशस्त मात्रामा पाइन्छन् । कुनै पनि समाजका परम्परा, रीतिरिवाज, चाडपर्व, लोकविश्वास आदि आङ्गनै किसिमका हुन्छन् । यहाँको लोकजीवनमा प्रचलित लोकोक्तिहरूले तिनै परम्परा, चाडपर्व, धर्म, संस्कृति र लोकविश्वासका तीता-मीठा अनुभवलाई सार रूपमा व्यक्त गरेका हुन्छन् :

काग कराउनु : गोरखाली लोकजीवनमा काग कराउनुलाई शुभ र अशुभ दुबै किसिमका समाचार प्राप्त हुने अर्थमा प्रयोग गरिन्छ । काग कराउने समय, स्थान आदिलाई हेरेर शुभ-अशुभको अर्थ छुट्याइन्छ ।

टुपी काट्नु : यस टुक्काको प्रयोग कसैले आङ्गनो इज्जत-मान, मर्यादामा हानि पुऱ्याउनुको अर्थमा लिने गरिन्छ ।

४.२.२.१० आधुनिक परिवेशमा निर्मित टुक्काहरू

गोरखाली लोकजीवनमा प्रचलित कतिपय यस्ता टुक्काहरू छन् जसले प्राचीन समयका रीतिस्थिति, संस्कृति, मान्यता, धारणा, विश्वास जस्ता कुराहरूलाई सुरक्षित राखेका छन् भने कतिपय टुक्काहरू आधुनिक समाजको निर्माण र विकाससँगै बन्दै, लोकजीवनमा प्रचलित हुँदै आएका छन् । यस्ता आधुनिक परिवेशमा निर्मित टुक्काहरूको आधुनिक समाज, समय र परिवर्तनका कुराहरूलाई प्रतिबिम्बित गरिरहेका हुन्छन् । गोरखाली लोकजीवनमा यस्ता टुक्काहरू केही निर्मित हुँदै आएका भेटिन्छन् । आधुनिक परिवेशमा निर्माण भएका टुक्काहरूका नमुना यस्ता छन् । जस्तै:-

ऐना हेर्नु

लेक्चर दिनु

मामाको घर जानु

४.२.२.११ मिथकीय टुक्काहरू

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूमा मिथक पाइन्छ । मिथक भन्नाले पौराणिक आख्यान, लोककथा, दन्त्यकथा र ऐतिहासिक घटना, प्रसङ्ग चरित्र आदिको झलक दिने पद तथा पदावलीलाई भनिन्छ । गोरखा मिथकीय टुक्काहरूले दुई अर्थ दिएका छन्- पहिलो साधारण अर्थ भने दोस्रो लक्षित अर्थ छन् । लक्षित अर्थ दिने पौराणिक आख्यान, लोक कथा, दन्त्य कथा, ऐतिहासिक घटना र चरित्र, प्रसङ्ग आदिको सङ्केत गर्ने टुक्कावत् प्रयोग भई आएका पद तथा पदसमूहलाई मिथकीय टुक्काका रूपमा यहाँ राखिएको छ । क्रियापद

बिहीन अवस्थामा स्वतन्त्र रूपमा देखिए पनि वाक्यको प्रयोगमा तिनमा खास क्रियापदको सहप्रयोग हुन्छ । मिथकीय टुक्काका केही उदाहरण यहाँ प्रस्तुत छन्-

- गायत्रीमन्त्र जप्नु ²एकोहोरो रटन लिइरहनु

गायत्रीको मन्त्र उच्चारण गर्नु टुक्काको प्रसङ्ग बेदका मन्त्रका रूपमा चर्चित छ र यसले पनि पौराणिक आख्यान धारण गरेको छ ।

- चेतबाबा काशी खानु ² होस पुऱ्याउनु

यो टुक्काले लोककथात्मक आख्यानलाई प्रस्तुत गर्दछ ।

- राम राज्य हुनु ² सुख शान्तिको राज्य

यस टुक्काले रामले राज्य गर्दा त्यो राज्यमा सबैलाई सुख शान्ति थियो भन्ने पौराणिक आख्यानको झल्को दिन्छ ।

- साँढेको फल असम्भव वस्तु

साँढेको फल र खरायोको कथा यसमा आउँछ । यसले किंवदन्तीका रूपमा रहेको लोककथाको झल्को दिन्छ । यसलाई दृष्टान्तको रूपमा व्यक्त गरिन्छ ।

आँखा लाग्नु

— चोखे लाग्नु

— दृष्टि पर्नु

— लोभिनु

हात लाग्नु

— चीज प्राप्त हुनु

— नाफा हुनु

सुँगुरको खोर

- सुँगुर पाल्ने ठाउँ
- फोहोर

खरानी घस्नु

- जोगी हुनु
- खरानी दल्नु
- आफूलाई बढी विश्वसनीय तुल्याउनु

जिब्रो टोक्नु

- आश्चर्य प्रकट गर्नु
- मर्नु
- जिब्रो नै टोक्नु

कुलेलम ठोक्नु

- भाग्नु
- छिटो-छिटो दौड्नु
- पोइला जानु

चोर औला ठड्याउनु

- धम्की दिनु
- एकत्व देखाउनु
- औला ठड्याउनु
- अरुलाई दाबी राख्नु

४.२.३ साहित्यिक आधारमा विश्लेषण

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्कालाई भाषिक र विषयवस्तुगत आधारमा विश्लेषण गरेजस्तै साहित्यिक आधारमा पनि विश्लेषण गर्न सकिन्छ । साहित्यका दृष्टिले टुक्काहरूको महत्त्व सर्वोपरि छ । विशेष रूपमा टुक्काको प्रयोग साहित्यिक रचनामा हुन्छ । टुक्का साहित्यको कवितामा भन्दा पनि गद्य लेखहरूमा अझ हास्यव्यङ्ग्य, कथा र निबन्ध सम्बन्धी रचनामा बढी गरिन्छ । तिनमा टुक्काको अति राम्रो प्रयोग गरेर भाषालाई नै धेरै गतिलो र खँदिलो तुल्याइएको पाइन्छ ।

गोरखाली टुक्काहरूले विशेष गरी लाक्षणिक अर्थ दिन्छन् । त्यही लाक्षणिकताले साहित्यमा बढी महत्त्व राख्छ, भने कतै अभिधामूलक टुक्काहरू पनि प्रयोग नहुने चाहिँ होइन ।

यहाँका टुक्काहरू लोकजीवनमा प्रचलित मौखिक परम्परामा जीवित रहँदै आएका छोटामीठा सारगर्भित रूप तथा सूत्र हुन् । यहाँ यस्ता टुक्काहरूलाई आलङ्कारिक र शब्दशक्तिमूलक गरी दुई किसिमले विश्लेषण गरिएको छ ।

४.२.३.१ आलङ्कारिकता

गोरखाली लोकोक्तिमा आलङ्कारिताको चमत्कार प्रशस्त भेटिन्छ । यही आलङ्कारिकताले नै लोकोक्ति र उखानलाई रोचक र प्रभावकारी बनाएको हो । अलङ्कार साहित्यलाई सौन्दर्यप्रदान गर्ने साधन हो । यस्तो सौन्दर्यप्रदान गर्न लोकसाहित्यका विधाहरू पनि सहयोगी बनेका हुन्छन् । आलङ्कारिकताका दृष्टिले लोकोक्तिका रूपमा प्रचलित टुक्काहरूको आफ्नै विशेषता रहेको छ । यस्ता टुक्काका रूप र शब्दालङ्कार र अर्थालङ्कार गरी दुई किसिमका अलङ्कारले युक्त छन् । अत्युक्ति प्रतीकात्मकता, उपमा, रूपक आदिको आलङ्कारिक प्रयोग पाइने गोरखाली टुक्काहरूको सङ्ख्या निकै छ । आलङ्कारिक आधारमा यहाँका टुक्कालाई निम्नानुसार वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

१. अनुप्रासमूलक अलङ्कार

गोरखाली लोकजीवनमा अनुप्रासमूलक अलङ्कारिक टुक्काहरू पनि पाइन्छन् ।

- जस्तै: - आच्छु-आच्छु पानुं
- पानी पानी हुनु
- उल्लीबिल्ली लगाउनु
- इन्तु न चिन्तु हुनु
- उल्टो-सुल्टो सबै देख्नु
- हित्तचित्त मिल्नु आदि ।

२. दृष्टान्तमूलक तथा प्रतीकात्मक अलङ्कार

दृष्टान्तमूलक टुक्काहरूले कुनै वस्तुलाई प्रतीक बनाएर आफ्नो अभिष्टार्थ व्यक्त गरिरहेका हुन्छन् । यस्ता टुक्काहरू कुनै वस्तु, व्यक्ति, प्राणी, पशुको विशेषता देखाउँदै तिनै विशेषताका आधारमा लक्ष्यार्थ व्यक्त गर्दछन् ।
जस्तै:

- भिङ्गा धपाउनु
- गोरु ब्याउनु
- नुन खाएको कुखुरा जस्तो
- पोथी बास्नु ।
- भालुलाई पुराण सुनाउनु
- कुकुरको मुत चुहाउनु

३. रूपकालङ्कार

अर्थ साम्य हुनेगरी व्यक्त टुक्काहरू रूपक हुन् । यिनमा लक्ष्यार्थ र रूपक अर्थ एउटै किसिमको हुन्छ, अर्थात् अभिन्नार्थ हुने गरी एउटै रूपबाट अर्थ व्यक्त गरिएको हुन्छ । जस्तै:

- भयाली पिट्नु
- कम्मर कस्नु
- हावा लाग्नु
- धोती न टोपी हुनु
- कुरा मिल्नु आदि ।

४. अतिशयोक्तिमूलक अलङ्कार

अभिव्यक्तिलाई प्रभावकारी पार्न लोकप्रसिद्ध उक्तिलाई उच्चिन्दै बढाई-चढाईकन कुनै विषयको बर्णन गर्नु अतिशयोक्ति हो । जस्तै:

- आकाश पाताल हाँक्नु
- सुनमा सुगन्ध हुनु
- साँढेको फल
- अर्काको पाए तीनमाना चूक खानु

५. उपमामूलक अलङ्कार

उपमेय र उपमानका बीच रूप, गुण, क्रिया आदिको समानता देखाइएमा उपमा अलङ्कार हुन्छ । उपमामूलक टुक्काहरू गोरखा जिल्लामा पनि पाइन्छन् । जस्तै:

- ऐंसेलु खाएजस्तो हुनु
- गिद्धले छेरेजस्तो अक्षर लेख्नु
- कुहिराको काग जस्तो
- टुप्पाबाट पलाएको
- चैते बाँदरजस्तो हुनु

४.२.३.२ शब्दशक्ति

गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरूलाई शब्दशक्तिका आधारमा पनि विश्लेषण गर्न सकिन्छ । भाषिक, साहित्यिक महत्त्व राख्ने टुक्काहरू गोरखाली जिब्रोमा निकै लोकप्रिय भई भिजेका छन् । यस्ता टुक्काहरूको लाक्षणिक अर्थले भाषालाई चमत्कृत बनाई साहित्यिक रचनामा नयाँ अर्थ प्रदान गर्न समर्थ हुन्छन् । गोरखाली टुक्काहरू विशेष गरी लाक्षणिक रूपमा प्रचलित भएका छन् । तापनि अभिधामूलक टुक्काहरू पनि बिलकुलै नभएका होइनन् । जति आनन्द लाक्षणिक अर्थमा प्राप्त हुन्छ । त्यो अभिधामूलक टुक्कामा कमै मात्रामा पाइन्छ । शब्दशक्तिमूलक आधारमा निम्नानुसार विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

१. अभिधार्थ

गोरखा जिल्लामा पाइने टुक्काहरू अभिधार्थमूलक पनि छन् । सामान्यतया टुक्काहरूको अर्थ लाक्षणिक हुन्छ तापनि कतिपय टुक्काहरू अभिधामूलक हुन्छन् । लोकजीवनमा प्रचलित कतिपय टुक्काहरूको अर्थ भवाद्देर्दा लाक्षणिक नदेखिए पनि तिनको संरचना र प्रक्रियाचाहिं लाक्षणिक जस्तै देखिन्छ । अभिधार्थ टुक्काहरूको अर्थ लाक्षणिक टुक्काहरूको अर्थभन्दा सिधा वाच्यार्थको नजिक रुढार्थमा हुने गर्दछ । गोरखामा प्रचलित अभिधामूलक टुक्काहरूको नमुनाहरू निम्नानुसार छन् । जस्तै:

- अँध्यारोमुख लगाउनु
- अपुताली पर्नु
- गोता खानु
- साइत पर्नु

२. लक्ष्यार्थ

गोरखाली टुक्काहरू अभिधार्थ मात्र नभइ लक्ष्यार्थमूलक पनि छन् । टुक्काको खास पहिचान र विशेषता भन्नु नै लक्ष्यार्थ प्रधान हुनु हो । हुन त

टुक्काहरू अर्थका दृष्टिले अभिधाधर्मी र व्यञ्जनाधर्मी पनि देखिन्छन् तापनि खास शब्दका खास क्रियापद मिलेर लक्ष्यार्थ व्यक्त गर्ने पद वा पदावली समूहलाई नै टुक्का भनिन्छ । यस्ता टुक्काहरूले आफ्नो वाच्यार्थ त्यागी लक्ष्यार्थ देखाउँछन् । जस्तै:

- आँखाको कसिङ्गर हुनु
- घैंटामा घाम लाग्नु
- कागको फुल चोर्नु
- दाँतमा ढुङ्गो लग्नु
- बुर्कुसी मार्नु
- रातो न पिरो हुनु

३. व्यङ्ग्यार्थ

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरू अभिधार्थमूलक, लक्षणामूलक जस्तै व्यञ्जनाधर्मी पनि छन् । सामान्यतया टुक्काहरू लक्षणामूलक देखिए तापनि कतिपय टुक्काहरूमा व्यङ्ग्यार्थको प्रधानता पनि भेटिन्छ । जस्तै:

- नाटक देखाउनु
- गुहु खानु
- ओठ निचोर्दा दूध आउनु
- अर्काको पाए तीनमाना चूक खानु

४.३ गोरखाली टुक्काका विशेषता:

भाषाको प्राणका रूपमा रहेका टुक्कालाई जिल्लागत हिसाबले हेर्दा गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काका विशेषताहरूलाई निम्नलिखित रूपमा प्रस्तुत गर्न सकिन्छ:-

- (क) जनजीवनको चित्रण हुनु ।
- (ख) भाषामा मिठास ल्याउनु ।
- (ग) अर्थ अभिधेय नभएर लक्ष्यार्थ हुनु ।
- (घ) वाक्यमा प्रयोग भई विशेष अर्थ प्रदान गर्नु ।
- (ङ) सङ्क्षिप्त हुनु ।
- (च) सरल र लोकप्रिय हुनु ।

(क) जनजीवनको चित्रण हुनु

यस क्षेत्रमा प्रचलित टुक्कामा त्यहाँको सामाजिक जनजीवनको यथार्थ चित्रण पाउन सकिन्छ । समाजकामे रहनसहन, आर्थिक अवस्था, ऐतिहासिक घटना, परम्परा आदिको चित्रण हुनुलाई यहाँको टुक्काको विशेषताका रूपमा लिन सकिन्छ । जस्तै: ओठ लेप्राउनु, कुकुरको मुत चुहाउनु, तिघ्रा ठटाउनु, भीख माग्नु, धारेहात लगाउनु इत्यादि । टुक्कामा स्थानीय जनजीवनले भोग्ने, अनुभूत गर्ने र अँगाल्ने क्रियाकलापलाई व्यक्त गर्छन् ।

(ख) भाषामा मिठास ल्याउनु

यस जिल्लाको स्थानीय जनमानसमा खारिएका, तिखारिएका वा माभिएका टुक्काहरू अति नै सरल छन् । तिनको प्रयोगले भाषामा मिठास आएको स्पष्ट देखिन्छ । सरस र जीवन्त हुनु टुक्काका विशेषता हुन् जसले भाषा मीठो र राम्रो हुन्छ । जस्तै: अँगालो हाल्नु, थुतुनो जोगाउनु, भयाँइकुटी पार्नु, ओठ टोक्नु इत्यादि टुक्काहरू भाषामा प्रयोग हुँदा भाषा अत्यन्त स्वादिलो बन्दछ ।

(ग) अर्थ अभिधेय नभएसर अक्ष्यार्थ हुनु

सामान्य पदले सोभो अर्थ बताउँछ, तर टुक्काको अर्थ अभिधेय हुन्छ । टुक्काले संरचनामा रहेका शब्दको अर्थभन्दा विलक्षण अर्थ प्रदान गर्दछ । लक्ष्यार्थ जाहेर गरेन भने त्यसलाई टुक्का मानिन्छ । त्यसैले यसलाई विशेषताको रूपमा लिइएको छ । जस्तै: घाँडो आइलाग्नु, उँधोमुन्टो लगाउनु, उपर्तली लाग्नु, आन्द्राभुँडी खोल्नु, खुत्रुक्क हुनु, आदि टुक्काले शब्दको अभिधा

अर्थबाट जे बुझाउँछन् त्यसभन्दा विलक्षण र महत्त्वपूर्ण कुरा लक्ष्यार्थबाट बुझाउँछन् ।

(घ) वाक्यमा प्रयोग भई विशेष अर्थ प्रदान गर्नु

टुक्का स्वयंमा अपूर्ण हुने हुनाले प्रयोगविना यिनीहरूको विशिष्ट अर्थ बुझ्न गाह्रो पर्दछ । जब टुक्का वाक्यमा प्रयोग हुन्छ अनि मात्र यसको अर्थ स्पष्ट हुन्छ । वाक्यबाट टुक्कालाई भिक्दा वाक्यको संरचना मात्र नबिग्री टुक्का पनि अर्थहीन हुन्छ । जस्तै : 'खरानी घस्नु' । यो टुक्काले साधारण अर्थमा खरानी घस्ने भन्ने बुझाउँछ, तर यसको विशिष्ट अर्थ बुझ्नका लागि वाक्यमा प्रयोग गर्दा "सुरेन्द्रका काकाले त खरानी घसेर हिँडेछन्" भन्दा 'जोगी हुनु' भन्ने लक्ष्यार्थ बुझिन्छ ।

(ङ) सङ्क्षिप्त हुनु

सङ्क्षिप्त हुनु टुक्काको अर्को विशेषता हो । गोरखामा प्रचलित टुक्का पनि थोरै शब्दले धेरै कुरा वर्णन गर्न सक्ने छन् । यसरी भनाइलाई छोटो रूपमा व्यक्त गर्न सक्नु यहाँ प्रचलित टुक्काको अर्को विशेषता हो । जस्तै: कुवाको भ्यागुतो (सीमित कुरामा रमाउन प्रवृत्ति), कुखुरे बैस (जवानीको उन्मत्त जोस), दलिन गन्नु, (बेकाममा समय बिताउनु) आदि टुक्कामा थोरैमा धेरै कुरा व्यक्त भएको पाइन्छ ।

(च) सरल र लोकप्रिय हुनु

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरू पनि अन्यत्र भैं स्थानीय समाजमा लोकप्रिय छन् । टुक्काको प्रयोग साधारण मानिसदेखि लिएर शिक्षित मानिससम्मले एकदमै रुचिका साथ गरेका हुन्छन् । खारिएर माभिएर भाषामा प्रचलित भएका टुक्काहरू बोलीव्यवहारमा प्रयोग हुन्छन् । भाषालाई सरल र शैलीलाई मीठो बनाउने भएकाले नै टुक्काहरू लोकप्रिय भएका छन् । जस्तै: डेढ अक्कल लगाउनु, तमासा देखाउनु, पेटमा मुसा दुगुनु, पोथी बास्नु आदि टुक्का सरल छन् र त्यत्तिकै लोकप्रिय पनि छन् ।

पाँचौं परिच्छेद

उपसंहार

५.१ पृष्ठभूमि

कुनै पनि भाषामा टुक्काको प्रशस्त प्रयोग भएको पाइन्छ । नेपाली भाषामा पनि यस्ता टुक्काहरू असङ्ख्य रहेका छन् र प्रयोग पनि प्रशस्त मात्रामा भइरहेको छ । भाषामा यस्ता टुक्काहरूको ठूलो महत्त्व छ । यिनको प्रयोग विना भाषा प्रभावकारी हुँदैन, तसर्थ भाषाका लागि उखान जस्तै: टुक्काहरू पनि उत्तिकै महत्त्वपूर्ण ठहरिन्छन् ।

नेपाल अधिराज्यमा पचहत्तर जिल्ला मध्येको एउटा प्रख्यात जिल्ला गोरखाको जनजिब्रोमा पनि टुक्काहरू प्रशस्त प्रयोग भएका छन् । गोरखाली जनताले भाषिक प्रयोगका क्रममा कथ्य परम्परा होस्, अथवा लेख्य दुबै तहमा टुक्काको प्रयोग गरिरहेका हुन्छन् । यस जिल्लामा शिक्षित-अशिक्षित, युवा-प्रौढ सबैले अनविज्ञ अवस्थामै पनि उत्तिकै रूपमा टुक्काको प्रयोग गरेकै हुन्छन् । यसर्थ के भन्न सकिन्छ भने गोरखा जिल्लामा लोकोक्तिका रूपमा आउने टुक्काहरू निकै लोकप्रिय बनेर रहेका छन् र तिनले भाषालाई रोचक बनाउने काममा सहयोग गरेका छन् ।

यस क्षेत्रमा प्रयोग हुने टुक्काले यहाँको सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक, मानवीय आदि पक्षलाई समेटेका छन् । टुक्का अनगिन्ती हुने र भाषिक प्रसङ्गअनुसार पनि टुक्काको निर्माण हुन सक्ने हुनाले यहाँ प्रचलित टुक्का यिनै र यति नै छन् भनेर किटान गर्न भने गाह्रो पर्दछ । फेरि यो जिल्ला भाषाका प्रमुख प्रवक्ताहरू रहेको ठाउँ भएको र यहाँ अधिकतर पूर्वेली भाषा अर्थात् मानक नेपाली भाषा नै बोलिने भएको हुँदा यस जिल्लामा प्रचलित र सङ्कलित टुक्काहरू मध्ये कतिपय टुक्का सिङ्गो नेपाली भाषामै प्रयोग हुने गरेका टुक्कासँग मेल खाएका छन् ।

टुक्का अति सानो र वाक्यमा प्रयोग नहुँदा आफैँमा अपूर्ण जस्तो लागेपनि यसको सूक्ष्म रूपमा अध्ययन गर्दा यसले भाषामा महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेको हुन्छ । टुक्काको लाक्षणिक अर्थ प्राप्त गर्नका लागि त्यसलाई वाक्यमा उचित रूपमा प्रयोग गर्नुपर्दछ । टुक्काको प्रयोगले भाषालाई ज्युँदो र रोचक बनाउँछ ।

लोकसाहित्यका विविध विधा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, गाउँखाने कथा, उखान, टुक्कामध्ये लोकोक्तिका रूपमा आउने टुक्काको समग्र रूपमा नेपालका विभिन्न क्षेत्रबाट सङ्कलन गरी विस्तृत अध्ययन विश्लेषण गर्न अझै पनि बाँकी नै छ । यस्तो अवस्थामा एउटा जिल्ला विशेषलाई मात्र आधार बनाएर त्यस क्षेत्रमा प्रचलित टुक्काको सङ्कलन गरी वर्गीकरण र विश्लेषण गर्ने काम प्रस्तुत अध्ययनमा गरिएको छ ।

५.२ सारांश

यस शोधपत्रको पहिलो परिच्छेदमा शोधपरिचय प्रस्तुत गरिएको छ । यस शोधपत्रको दोस्रो परिच्छेदमा गोरखा जिल्लाको परिचय दिने क्रममा जिल्लाको पृष्ठभूमिको उल्लेख गर्दै नामाकरणको प्रसङ्गमा धार्मिक तथा ऐतिहासिक घटनाविवरण दिँदै भौगोलिक अवस्थित र साँध सिमाना, जनसङ्ख्याको स्थिति, जाति, हावापानी, प्रसिद्ध ठाउँहरू सामाजिक जनजीवनमा पाइने विविधता, शिक्षा र स्वास्थ्यको अवस्थाको बारेमा जानकारीका साथै लोकसाहित्यिक अवस्थाका बारेमा विवेचना दिइएको छ । यी विभिन्न पक्षको वर्णनबाट गोरखा जिल्ला ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक र पौराणिक दृष्टिकोणले महत्त्वपूर्ण मानिने पहाडी जिल्ला हो भन्ने कुरा छर्लङ्ग हुन्छ ।

टुक्का लोकसाहित्यको एउटा महत्त्वपूर्ण विधा हो । उक्त कुरालाई दृष्टिगत गरी प्रस्तुत शोधपत्रको तेस्रो परिच्छेदमा लोकसाहित्यको परिचय र विधागत वर्गीकरण, परिचय, परिभाषा, उत्पत्ति, विशेषता, संरचनातत्त्व, महत्त्व, अध्ययन परम्परा प्रस्तुत छ । टुक्काजस्ता अभिव्यक्तिले समाजमा सम्पूर्ण

वर्गलाई मनोरञ्जन, शिक्षा र उपदेश दिने हुनाले यसको विषयगत वर्गीकरणमा ज्यादा जोड दिइएको छ ।

यस शोधपत्रको चौथो परिच्छेदमा गोरखा जिल्लामा पाइने सङ्कलित टुक्काको वर्गीकरण र विश्लेषण गरिएको छ । गोरखामा प्रचलित टुक्कालाई भाषिक, विषयवस्तु र साहित्यिक आधारमा त्यसमा विश्लेषण गरिएको छ ।

५.३ निष्कर्ष

जनजिब्रोमा मात्र छरिएर रहेका टुक्कालाई एकत्रित गरी तिनीहरूको व्यवस्थित रूपमा अध्ययन विश्लेषण गरी यो शोधपत्र तयार गरिएको छ । यसरी एउटा जिल्ला विशेषलाई आधार मानी टुक्काको अध्ययन गर्ने परम्पराबाट नेपाल अधिराज्यको अन्य जिल्लाका टुक्काहरूलाई पनि प्रकाशमा ल्याउन सकेमा सिङ्गो नेपाली लोकसाहित्यको अध्ययन-विश्लेषण गर्न मद्दत पुग्नेछ भन्ने कुराको अपेक्षा गरिएको छ । प्रस्तुत अध्ययनले गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काहरूको संरचनागत विविधता, भाषिक एवं साहित्यिक विशेषता र विषयवस्तुगत अनेकताका पक्षमा प्रकाश पार्नाका साथै गोरखाको लोकसाहित्यिक अध्ययनको जग निर्माणमा आफ्नो प्रकारको योगदान गरेको छ ।

५.४ भावी अनुसन्धानका निमित्त सुझाव

गोरखा जिल्ला लोकसाहित्यको भण्डारका रूपमा रहेको छ । यस जिल्लाको लोकसाहित्यलाई निम्न लिखित शीर्षकहरूमा आधारित रहेर भविष्यमा अनुसन्धान गर्न सकिन्छ -

- (क) गोरखा जिल्लामा प्रचलित लोकगीतको अध्ययन ।
- (ख) गोरखा जिल्लामा प्रचलित लोकगाथाको अध्ययन ।
- (ग) गोरखा जिल्लामा प्रचलित उखानको अध्ययन ।
- (घ) गोरखा जिल्लामा प्रचलित गाउँखाने कथाको अध्ययन ।
- (ङ) गोरखा जिल्लामा प्रचलित लोकनाटकको अध्ययन ।

सन्दर्भग्रन्थसूची

पुस्तक

कोइराला, शम्भुप्रसाद,

लोकसाहित्य, सिद्धान्त र विश्लेषण,
विराटनगर: धरणीधर पुरस्कार प्रतिष्ठान,
२०५५ ।

गिरी, जीवेन्द्रदेव,

लोकसाहित्यको अवलोकन, काठमाडौं: एकता
प्रकाशन, २०५७ ।

पराजुली, कृष्णप्रसाद,

नेपाली अध्ययन तथा अभिव्यक्ति, चौ.सं.,
काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार, २०४९ ।

.....,

पूर्व एक नम्बर, दो.सं. प्रकाशन समिति, पूर्व
एक नम्बर २०५० ।

.....,

नेपाली उखान र गाउँखाने कथा, ते.सं.,
काठमाडौं: रत्न पुस्तक भण्डार, २०५४ ।

.....,

नेपाली लोकगीतको आलोक ।

.....,

भाषाको माया, काठमाडौं : रत्न पुस्तक
भण्डार, २०४४ ।

.....,

राम्रो रचना : मीठो नेपाली, एक्काइसौं
संस्करण, काठमाडौं: सहयोगी प्रेस, २०५५ ।

पराजुली, मोतीलाल,

नेपाली लोकगाथा, पोखरा : श्रीमती तारादेवी
पराजुली, २०४९ ।

पोखरेल, बालकृष्ण,

नेपाली बृहत शब्दकोश, काठमाडौं:
ने.रा.प्र.प्र., २०४० ।

अन्य (सम्पा.)

पोखरेल, बालकृष्ण,

राष्ट्रभाषा, आ.सं., काठमाडौं: साभा
प्रकाशन, २०४८ ।

- प्रधान, पारसमणि, नेपाली मुहावरा, कालिमपोडः भाग्यलक्ष्मी प्रकाशन, २०११ ।
- बन्धु, चूडामणि, भाषाविज्ञान, ते.सं., काठमाडौं: साभा प्रकाशन, २०५३ ।
-, नेपाली लोकसाहित्य, काठमाडौं: एकता प्रकाशन, २०५८ ।
- राणा, पुष्करशमशेर, नेपाली उखान र टुक्काको वर्णानुक्रमानुसारी सूची र वाक्यांश, वाक्यपद्धति इत्यादिको कोशः खण्ड १, २, नेपाली भाषा प्रकाशनी समिति, १९९८ ।
- रेग्मी, चूडामणि, नेपाली टुक्काहरूको अध्ययन, दो.सं., भापा: जुही प्रकाशन, २०५७ ।
- शर्मा, मोहनराज, शब्द रचना र वर्णविन्यास, काठमाडौं: त्रि.वि.पा.वि.के., २०३६ ।
- सुवेदी, हंसपुरे र धर्मराज थापा, नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना, काठमाडौं: त्रि.वि.पा.वि.के., २०४१ ।
- अन्य
- लक्ष्मी पन्थी, 'गुल्मी जिल्लाको टुक्काहरूको अध्ययन', (त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभागमा प्रस्तुत अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र), २०५६ ।
- सुनील अर्याल, 'गोरखा जिल्लामा प्रचलित लोककथाको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण, (त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभागमा प्रस्तुत अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र), २०६३ ।

सूचना विभाग,

‘मेचीदेखि महाकालीसम्म, भाग ३, काठमाडौं:
श्री ५ को सरकार सञ्चार मन्त्रालय, सूचना
विभाग ।

परिशिष्ट क

प्रश्नावली

१. तपाईंको परिचय:

२. लिङ्ग:

३. उमेर:

४. पेसा:

५. शिक्षा:

६. गा.वि.स./नपा.:

७. वडा नं. :

८. टोलको नाम:

९. यो टुक्का कसबाट सुन्नु भएको हो ?

प्रश्नहरू

(क) तपाईंले आफ्नो क्षेत्रमा चलेको टुक्का भन्न सक्नुहुन्छ ? सक्छु/सकिदैन

(ख) सक्नुहुन्छ भने भन्नुहोस् ?

(ग) तपाईंको आस-पासमा टुक्का भन्न जान्ने अरु कोही हुनुहुन्छ ?

(घ) छन् भने उहाँलाई कतिखेर भेट्न सकिन्छ ?

बिहान/दिउँसो/बेलुका/राती

(ङ) यो क्षेत्रमा सबैभन्दा बढी टुक्का भन्ने को हुनुहुन्छ ?

हुनुहुन्छ/हुनुहुन्न

(च) हुनुहुन्छ भने उहाँको नाम ठेगाना के होला ?

१. नाम:

२. लिङ्ग:

३. उमेर:

४. गा.वि.स./नपा.:

५. वडा नं. :

६. टोलको नाम:

गोरखा जिल्लामा प्रचलित टुक्काको सङ्कलन

१. गोरखाली टुक्काको सङ्कलन

गोरखा जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोकसाहित्यका विविध विधा-लोकगीत लोकपद्य, लोककथा, लोकनाटक, लोकगाथा, गाउँखाने कथा, उखान, टुक्का आदि विधामध्ये मानिएको टुक्काको प्रयोग गोरखाको जनबोलीमा धेरै पहिलेदेखि हुँदै आएको हो गोरखाली भाषिका नेपाली भाषाको एक प्रमुख भाषिका हो । नेपाली भाषाका वक्ताहरूले ठूलो वक्ताहरूमध्ये धेरैले यस भाषिकाको प्रयोग गर्छ । सोही भाषिकाको मूलथलोले गोरखाले आङ्गनो संस्कृति, परम्परा र लोकसाहित्यका विभिन्न विधाको जगेर्ना र विकास गर्दै आएको छ यद्यपि यहाँ प्रचलित लोकसाहित्यका विभिन्न विधाहरूको अध्ययन-अनुसन्धान अबै राम्रोसाग हुन सकेको छैन । त्यसैले यहाँको टुक्काका सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषणसँग सम्बन्धित प्रस्तुत कार्यको आवश्यकता अनुभव गरिएको हो ।

यहाँ स्थानीय रूपमा प्रयोग हुने थुप्रै टुक्का रहेका छन् जुन अधिकांश रूपमा मानक नेपाली भाषामा पनि प्रयोग भएको पाइन्छ । त्यस्ता टुक्काहरूलाई यथाशक्य सङ्कलन गरी निम्नप्रकार प्रस्तुत गरिएको छ ।

अ

१. आध्यारोको काग भेउ नपाइने स्थिति
२. आध्यारोको काम केही सोचविचार नगरी गरिएको काम
३. अँध्यारो मुख लगाउनु असन्तोष प्रदर्शन गर्नु, रिसाउनु
४. अँगालो मार्नु छातीमा टाँस्नु
५. अँगालो हाल्नु माया देखाउनु, सहयोग गर्नु
६. अक्क न पक्क पर्नु बोल्नै नसक्नु

७. अक्करमा पर्नु अफ्योरोमा पर्नु
८. अकालमा मर्नु असमयमा मृत्यु हुनु
९. अर्काको टाडमुनि छिर्नु आङ्गनो स्वाभिमान गुमाई अरुको अधीन स्वीकार्नु
१०. अखनी गर्नु हुक्कसंग बस्न नदिनु
११. अगति पर्नु नराम्रो हुनु
१२. अगुल्टाले आङ्गनै पुर्पुरोमा हान्नु आफैले समस्या उब्जाउनु
१३. अघि लाउनु आफूभन्दा अगि मृत्यु हुनु
१४. अड्को पर्नु नराम्रो हुनु
१५. अड्कल काट्नु शड्का गर्नु
१६. अड्को फुकाउनु समस्या सुल्झाउनु
१७. अडेस लाग्नु कुनै कुराको आड लिनु
१८. अत्तोपत्तो हराउनु केही थाहा-सुद्धि नहुनु
१९. अनुहारमा हिलो पोतिनु बेइज्जती हुनु
२०. अन्त हुनु सकिनु
२१. अपजस पाउनु दोष आइपर्नु
२२. अपुताली पर्नु सन्तान नहुनु
२३. अफवाह फैलाउनु गलत हल्ला चलाउनु
२४. अवगाल पर्नु व्यर्थको गाली खानु
२५. अलमलमा पर्नु अन्योल हुनु
२६. अल्ल्छी लाग्नु आलस्य बढ्नु, कुनै कामतिर मन नलाग्नु
२७. असारको पन्ध्र कामले असाध्यै चापेको स्थिति

२८. अस्तु हुनु मर्नु, समाप्त हुनु

आ

१. आँखा ओवानु हुनु रुवाइ बन्द हुनु, समस्या घट्नु
२. आँखा उघ्ननु कुरा बुझ्नु
३. आँखाको पुतली हुनु प्यारो हुनु
४. आँखाको कसिङ्गर हुनु मन नपर्ने हुनु
५. आँखा खुल्नु सचेत हुनु
६. आँ गर्दा अलङ्कार बुझ्नु थोरै भनाइले धेरै बुझ्नु
७. आँखा भिम्क्याउनु इसारा गर्नु
८. आँखा गाड्नु लोभ गर्नु
९. आँखा जुधाउनु मुखामुख गर्नु
१०. आँखा टट्टाउनु आँखा थाक्नु
११. आँखामा राखेपनि नबिभाउनु ज्यादै मनपर्ने हुनु
१२. आँसुले बाटो नपाउनु बेसरी रोइरहनु
१३. आकाशको चरा खसाल्नु असम्भव काम गरी देखाउनु
१४. आकाश पाताल हाँक्नु भए नभएको धाक दिनु
१५. आगो जोर्नु आगो बाल्नु
१६. आगामा घिउ हाल्नु भन् उत्तेजित तुल्याउनु
१७. आगो सल्काउनु समस्या सिर्जना गराउनु
१८. आगो हुनु रिसाउनु
१९. अधिअधि सर्नु प्रगति गर्नु, नेतृत्व लिनु
२०. आड ढाक्नु कपडाले शरीर छोप्नु
२१. आच्छु-आच्छु खेलाउनु मुस्किल-मुस्किल पार्नु

२२. आच्छु-आच्छु पार्नु एकदमै आत्तिने तुल्याउनु
२३. आज कि भोलि हुनु मर्न लागेको अवस्था हुनु
२४. आधा मासु हुनु ज्यादै पीरले दुब्लाउनु
२५. आधिपत्य जमाउनु आङ्गनो अधिकार जमाउन खोज्नु
२६. आनन्दको सास फेर्नु शान्ति मिल्नु
२७. आन्द्रा बटारिनु ज्यादै भोकाउनु
२८. आन्द्रा-भुँडी खोल्नु भित्री मनका सारा कुरा अरुलाई बताउनु
२९. आङ्गनो-आङ्गनो मानो खानु आ-आङ्गनो भाग खानु
३०. आङ्गनो आड कन्याएर आङ्गनै आडमा छारो उडाउनु आङ्गनो कमजोरी आफै देखाउनु
३१. आङ्गनो खुट्टामा आफैले बन्चरो हान्नु आङ्गनो नोक्सान आफैले गर्नु
३२. आङ्गनो कुरा माथि पर्नु आफूले भनेकै कुरा हुनु
३३. आङ्गनो खुट्टामा उभिनु स्वाबलम्बी हुनु
३४. आङ्गनो टाउको जोगाउनु आफू सुरक्षित हुनु
३५. आफूलाई पुर्ने खाडल आफैले खन्नु आङ्गनो अहित आफैले गर्नु
३६. आङ्गनो थुक आफैले चाट्नु आङ्गनो गल्ती आफैले सच्याउनु
३७. आङ्गनो लिँडे ढिपी नछोड्नु आङ्गनो अड्डी नछोड्नु
३८. आत्मा बेच्नु इच्चतमा धक्का लाग्ने काम गर्नु
३९. आमा-बाबु टोक्नु सन्तान जन्मेर आमा-बाबु मरे भने आमा-बाबु त्यही सन्तानको कारण मरेको विश्वास गर्नु
४०. आलटाल गर्नु काम गर्न ढिलो गर्नु
४१. आलु खानु असफल हुनु

४२. आसन जमाउनु आङ्गनो प्रभुत्व देखाउनु

४३. आस मार्नु भरोसा नगर्नु

इ

१. इज्जत नरहनु इज्जत गुम्नु

२. इज्जत फाल्नु बेइज्जती उठाउनु

३. इज्जन रहनु प्रतिष्ठा/मान रहनु

४. इन्तु न चिन्नु हुनु के गरुँ के नगरुँ हुनु

५. इबी लिनु मनमा प्रतिशोधको भावना लिइराख्नु

६. इल्लीबिल्ली पार्नु कसैलाई होच्याउने गरी जिस्क्याउनु

उ

१. उँधोमुन्टो लगाउनु टाउको भुकाउनु

२. उठेको जाँगर मरेर आउनु फूर्ति सेलाउनु

३. उडेको चरा खसाल्नु चतुऱ्याइँपूर्वक काम गर्नु

४. उत्पात मच्चाउनु भाँडमैलो सिर्जना गर्नु

५. उपर्तली लाग्नु बमन हुनु

६. उमेर छिप्पिनु उमेर बढी हुनु

७. उम्रदैका तीन पात हुनु मूर्ख हुनु

८. उराठ लाग्नु न्यास्रो हुनु

९. उल्टो आइलाग्नु राम्रो गर्दागर्दा नराम्रो आइलाग्नु

१०. उल्टो-सुल्टो सबै देख्नु लाभहानि सबै देख्नु

११. उल्लीबिल्ली बनाउनु होच्याएर होसहवास उडाउन जिस्क्याउनु

१२. उही ड्याडको मुला हनु उस्तै क्रियाकलाप देखाउनु

ऋ

१. ऋण काढनु साहूबाट पैसा लिनु

२. ऋण खानु रिन नतिर्नु

३. ऋणमा डुब्नु जायजेथाभन्दा बढी खर्च भई तिर्न नसक्ने हुनु ।

४. ऋण लाग्नु कसैको गुन लाग्नु

ए/ऐ

१. एउटा आँखाले पनि नहेर्नु नरुचाउनु

२. एउटा मट्याङ्गाले दुइटा चरा मार्नु एउटा काममा लागि पर्दा अरु-अरु काम पनि बन्नु ।

३. एउटै ड्याडका मूला सबै उस्तैउस्ता

४. एक-एक गरी ऐँ गन्नु एक-एक गरेर हिसाब गरी देखाउनु

५. एक कानले सुन्नु अर्को कानले उडाउनु बेवास्ता गर्नु

६. एक गाँस पार्नु सजिलै सिध्याउनु

७. एकबित्ता लामो जिब्रो भिक्नु अचम्म पर्नु

८. एक भन्दा गर्नु छिटो काम फत्ते गर्नु

९. एकान्त गर्नु गोप्य कुरा गर्नु

१०. ऐना हेर्नु तास खेल्नु

११. ऐरेलु खाएजस्तो हुनु ज्यादै तीतो, नमीठो हुनु

ओ

१. ओइरो लाग्नु धेरै आर्जन हुनु

२. ओछ्याउन कुनु बिरामी पर्नु
३. ओभेल पर्नु छायाँमा पर्नु
४. ओठ टोक्नु आश्चर्य प्रकट गर्नु
५. ओठ निर्चार्दा दूध निस्कनु कलिलो बालकको स्थिति हुनु
६. ओठ लेप्राउनु अरुले भनेको कुरा विश्वास नगरी विरोध जनाउनु
७. ओठे जबाफ दिनु तुरुन्त जबाफ फर्काउनु
८. ओकालत गर्नु न्याय-अन्याय छुट्याउनु

औ

१. औला गन्नु हिसाब गर्नु
२. औला थिच्नु कडा काम गर्नु
३. औला भाँच्नु संयोगको दिन कहिले आउला भनी अन्जाम गर्नु
४. औलामा नचाउनु इसारामा खेलाउनु
५. औलो दिँदा डुडुल्लो निल्लु थोरै सहारा दिँदा धेरै लिन खोज्नु
६. औसीको जून हुनु नहुने कुरा देख्नु
७. औसी-पूर्ण लाग्नु काम बन्द हुनु, कहिलेकाहीं मात्र काम हुनु

क

१. कर्कलाको पातको पानी हुनु अस्थिर बस्नु
२. कन्सरी तान्नु रिस उठ्नु
३. कपाल फुल्नु बृद्ध हुनु
४. कपाल मुड्नु कपालको रौं झ्याँक्नु, जोगी हुनु
५. कम्मर कस्नु आँट गर्नु

६. कष्ट काट्नु दुःख भेल्नु
७. काखी च्याप्नु आश्रय दिनु
८. काग कराउनु नयाँ खबर मिल्नु
९. काट्टो खानु मृत व्यक्तिको आकार बनाइएको खाने कुरा खानु
१०. कात्तिके कुकुर ज्यादै उन्मत्त भएको व्यक्ति
११. कान उखेल्नु कसुरको सजाय दिनु
१२. कान काट्नु किरिया खानु
१३. कान खानु आवाजले सताउनु
१४. कान ठाडा हुनु कुनै कुरा ध्यान दिएर सुन्न तयार हुनु
१५. कान तान्नु ध्यान आकर्षित गर्नु
१६. कान पवित्र पार्नु असल कुरा कानमा परेर आनन्दको अनुभव गर्नु
१७. कानमा बतास पस्नु बुद्धि फर्कनु
१८. कान समाउनु चेतनु
१९. कानेखुसी गर्नु गोप्यकुरा भन्नु, सुटुक्क
२०. काम उतार्नु काम सफल गराउनु
२१. कालले कुतकुत्याउनु मृत्युको नजिक पुग्नु
२२. काल काट्नु कष्टकर समय गुजार्नु
२३. किताबको कीरो किताबी ज्ञान मात्र लिने व्यक्ति
२४. किनारा लाग्नु पन्छ्नु
२५. किरिया खानु कसम खानु
२६. किसिम-किसिमका कुरा गर्नु अनेक तरहका क्रियाकलाप गर्नु
२७. कुकुरको मूत चुहाउनु आँसु भार्नु

२८. कुखुराको डाँको उज्यालाको सङ्केत
२९. कुखुरे बैस जवानीको उन्मत्त जोस
३०. कुजात आउनु इज्जत गुम्ने स्थिति आउनु
३१. कुतकुती लाग्नु खुलदुली लाग्नु
३२. कुदिन आउनु नराम्रा दिन आउनु
३३. कुरा काट्नु कसैका बारेमा नचाहिँदा कुरा गर्नु, भनाइको खण्डन गर्नु
३४. कुरा चपाउनु भन्न खोजेको कुरा स्पष्ट नहुने गरी बोल्नु
३५. कुरा चोर्नु अर्कोको मनको कुरा बुझ्नु
३६. कुरा मिल्नु विचार मिल्नु
३७. कानमा तेल हाल्नु सुनेको नसुने भैं गर्नु
३८. कुरो लगाउनु चुक्कली लगाउनु
३९. कुरा मिलाउनु विचार एउटै बनाउनु
४०. कुशको बाहुन हुनु केही काम नगर्नु
४१. कुवाको भ्यागुतो सीमित कुरामा रमाउने व्यक्ति
४२. कुहिराको काग अन्योलमा परेको व्यक्ति
४३. कुलेलम ठोक्नु भाग्नु
४४. कैद काट्नु दुःख भोग्नु
४५. कोल्टो फेर्नु अवस्था बदल्नु
४६. कानमा भिरले घोच्नु चुप्प लागेको व्यक्तिलाई जगाउनु
४७. काशीमा मुख धोएर आउनु पापमुक्त भएर आउनु

ख

१. खर्च कटाउनु खर्च कम गर्नु

२. खनीखोस्री गर्नु खेतीकिसानी गर्नु
३. खप्पर फुट्नु भाग्य विग्रनु
४. खरानी घस्नु जोगी बन्नु
५. खल्लो लाग्नु नरमाइलो लाग्नु
६. खसी पार्नु तह लगाउनु
७. खाग पार्नु कण्ठस्थ गर्नु
८. खानाको काल खान मात्र जन्मिएको
९. खिचडी पकाउनु मनमा अनेक तर्कहरू उब्जाउनु
१०. खिल्ली उडाउनु उपहास गर्नु
११. खिसी गर्नु उपहास गर्नु
१२. खुकुरीको दाउ अचानोमा पर्नु निर्दोषमाथि मार गर्नु
१३. खुट्टा घुमाउनु यात्रा अन्तै मोड्नु
१४. खुट्टा छाड्नु आङ्गनो बाटो भुल्नु
१५. खुट्टा टाड्नु खुट्टा उभ्याउनु
१६. खुट्टा मल्नु चाकडी गर्नु
१७. खुट्टामा उभिनु स्वाबलम्बी हुनु
१८. खुट्टा लाग्नु हिँड्न थाल्नु
१९. खुट्टा लगाइदिनु आश्रय दिनु
२०. खुलेर कुरा गर्नु स्पष्ट कुरा गर्नु
२१. खुट्टा हाल्नु कामको थालनी गर्नु
२२. खुट्टी देख्दै पत्याउनु विश्वास लिन खोज्नु तर पत्याउने आधार नहुनु
२३. खुत्रुक्क हुनु मर्नु

२४. खुन चुस्नु शोषण गर्नु
२५. खेदो गर्नु अरुलाई शान्तिसँग बस्न नदिने गरी हैरान पार्नु
२६. खेल खत्तम हुनु काम सकिनु
२७. खेलो हराएको जस्तो हुनु काम नभएको व्यक्ति जस्तो हुनु
२८. खोटो कर्म हुनु भाग्य बिग्रनु
२९. खोते थाप्नु उल्टो कुरा गर्नु/निहुँ खोज्नु
३०. खोरिया फाँट्नु जङ्गल फाँडेर बारी बनाउनु

ग

१. गर्ज टर्नु समस्या हलहुनु
२. गडबड गर्नु काम बिगार्नु
३. गमक्क पर्नु नबोली सान देखाएर बस्नु
४. गल्लीको कुकुरले भैं दुःख पाउनु भौँतारिने क्रममा हैरानी भोग्नु
५. गलाको पासो हुनु बन्धन हुनु
६. गर्व गर्नु घमण्ड गर्नु
७. गहतको भोलमा जात फाल्नु तुच्छ कुरामा इज्जत गुमाउनु
८. गाईखाने विद्या अङ्ग्रेजी शिक्षा
९. गाईजात्रा देखाउनु अस्तव्यस्तको तमासा देखाउनु
१०. गाई मारी गधा पोस्नु असललाई नोक्सान पुऱ्याई खराबलाई फाइदा पुऱ्याउनु
११. गायत्री मन्त्र जप्नु एकोहोरो नाम लिइरहने काम गर्नु
१२. गिद्धले छेरेजस्तो अक्षर लेख्नु नराम्रा अक्षर लेख्नु
१३. गुन तिर्नु उपकारको बदला उपकार गर्नु

१४. गुहु खानु नीच काम गर्नु
 १५. गोता खानु दुःख पाउनु
 १६. गोबर गणेश कुनै ज्ञान नभएको
 १७. गोरु बेचेको साइनु लगाउनु साधारण कुरामा सम्बन्ध जोड्नु
 १८. गोरु ब्याउनु भाग्यले साथ दिनु

घ

१. घरको न घाटको हुनु कतैको पनि नहुनु
 २. घरखर्च चलनु घरव्यवहार चलनु
 ३. घरजाम गर्नु व्यवस्था मिलाएर गृहस्थ बन्नु
 ४. घरज्वाइँ बस्नु अर्काको आर्जन खानेगरी काम नगरी खानु
 ५. घाउमा नुनचुक छर्नु समस्यालाई अझ बढी चर्काउनु
 ६. घमासान पर्नु ठूलो लडाइँ हुनु
 ७. घाँटी निचोर्नु ^२ आफ्नो आहार कम गरी अरुलाई सहयोग गर्नु
 ८. घाँडो लाग्नु ^२ भन्फट लाग्नु
 ९. घाम डुब्नु ^२ उज्यालो हराउनु
 १०. घानमा पर्नु ^२ मिचाइमा पर्नु
 ११. घिरौँलाजत्रो नाक फुलाउनु ^२ गर्वले दङ्ग पर्नु
 १२. घुस खानु ^२ नियम विपरीत कसैको काम गर्नु, नगदी वा जिन्सी लिनु
 १३. घैँटोमा घाम लाग्नु ^२ होस आउनु
 १४. घोसेमुन्टो लाउनु ^२ गल्ती स्वीकार गर्नु

च

१. चन्द्रमा दाहिने हुनु भाग्यले साथ दिनु
२. चन्द्रा उठाउनु चन्द्रा सङ्कलन गर्नु
३. चङ्कन चिउरा दिनु बेसरी पिट्नु
४. चाकको पिलो हुनु कसैका निम्ति समस्या बन्नु
५. चिल्ली-बिल्ली उडाउनु सबै कुरा हराउनु
६. चिल्लो घस्नु चाकडी गर्नु
७. चुरा फुट्नु विधवा बन्नु
८. चूलो उतार्नु भोज भतेरको काम सिछ्याउनु
९. चेत पाउनु होस आउनु
१०. चेत बाबा काशी खानु एकचोटी समस्यामा परेर चेतको हुनु
११. चैते बाँदर ज्यादै मात्तिको व्यक्ति
१२. चोर औंला ठड्याउनु अरुलाई खबरदारी गर्नु
१३. चोरको खल्टी हुनु = बदमासले सजिलै दुरूपयोग गर्न सक्ने बन्नु
१४. चोरको बाबु चण्डाल चोरीमा ज्यादै नाम चलेको
१५. चौरासी काट्नु ठूलो यातना भोग्नु

छ

१. छाँटकाँट मिल्नु सबै तरिका मिल्नु
२. छाँद हाल्नु घोप्टो परेर बेस्सरी रुनु
३. छक्क पर्नु आश्चर्यमा पर्नु
४. छन्द न बन्दको कुरा गर्नु प्रसङ्ग नमिले कुरा गर्नु
५. छल गर्नु छल कपट गर्नु
६. छाक टार्नु जेनतेन खाने समस्या हल गर्नु

७. छाक भोकै हुनु दुःख पाउनु
८. छात्ती छाम्नु अरुको बलको जोखना गर्नु
९. छात्ती पिट्नु जोरी खोज्नु
१०. छि-छि र दूददूर गर्नु घृणा गर्नु
११. छारस्ट गर्नु रोएर भगडा बबाल गर्नु
१२. छुच्चो मुख गर्नु लाज नमानी माग्नु
१३. छेपाराको उखानजस्तो काम भोलि-भोलि भन्दै पर सार्ने छाँटको
१४. छेड हान्नु व्यङ्ग्य गर्नु
१५. छोइछिटो हाल्नु चोखिनु

ज

१. जाँगर मरेर आउनु फुर्ती सेलाउनु
२. जाँड खाएको सार्की जस्तो जथाभावी बोल्दै हिँड्ने
३. जुँगा हेरी भाग लगाउनु पक्षपातपूर्ण व्यवहार गर्नु
४. जगल्टा उखेल्नु कपालमा समाएर लुछ्नु
५. जगल्टा केलाउनु कपालमा समाएर यातना दिनु
६. जता भन्यो उतै नचाउनु आङ्गनो अधीनमा राख्नु
७. जदौ गर्नु तल्लो वर्गले माथिल्लो वर्गलाई मान गर्नु
८. जनै भिक्नु ब्राह्मणत्व गुमाउनु
९. जनजालमा फस्नु बन्धनमा पर्नु
१०. जरो उखेल्नु फेददेखि उखेलेर नामेट पार्नु
११. जात जानु इज्जत झ्याक्नु
१२. जिउँदो मान्छेको फेला पर्नु ठूलो समस्या पर्नु

१३. जिउनार गर्नु खाना खानु
१४. जिब्रो काढ्नु आश्चर्य प्रकट गर्नु
१५. जिब्रो चलनु नसोची प्वाक्क बोल्नु
१६. जिब्रो सम्हाल्नु नबोल्नु
१७. जिल खानु आश्चर्य चकित हुनु
१८. जीविका चलनु गुजारा चलनु
१९. जुनी फेर्नु नयाँ रूप फेर्नु
२०. जेलामा नमिलेको डुम भगडा गरिरहने व्यक्ति
२१. जोगी हुनु घरबार त्याग्नु
२२. जोडी फुट्नु मित्रता बिग्रनु
२३. जोर जुलुम गर्नु अनेक प्रयत्न गर्नु
२४. जोरी खोज्नु निहुँ खोज्नु

भ

१. भाँको भार्नु हकार्नु
२. भोंक चलनु रिस उठ्नु
३. भिंगा धपाउनु दुःख दिनु
४. भिंगो दाउ लाग्नु दुःख भेल्लु
५. भयाँइ पार्नु बिहे गर्नु
६. भयाउँकुटी पार्नु कुनै चीजको फेद र टुप्पो दुबैतिर समातेर हल्लाउँदै हिँड्नु
७. भिंगा धपाउनु चाकडी गर्नु
८. भन्कट लाउनु दुःख

९. भ्रमेला गर्नु समस्या उत्पन्न गर्नु
१०. भापड दिनु बेस्सरी पिट्नु
११. भारा टार्नु लटरपटर काम गर्नु
१२. भोलीतुम्बा लिएर हिँड्ने हुनु जोगी बनेर हिँड्ने अवस्था हुनु
१३. भुम्नाको पुतली बनाउनु हातको इसारामा नाच्ने तुल्याउनु
१४. भोलीको देवता नजिकको मान्नुपर्ने व्यक्ति

ट

१. ट्वाल्ल पर्नु जिल्ल पर्नु (एकनासले हेर्नु)
२. टपरी टक्टकाउनु श्राद्ध गरी चामल दक्षिणा ल्याउनु
३. टाउकाले टेक्नु बढी मात्नु
४. टाउको खानु कराएर दिक्क बनाउनु
५. टाउको ठोक्नु खतरा वा दुःख निम्त्याउनु
६. टाउको थाप्नु पिटाइ खानु
७. टोपी भिक्नु टुहुरो हुनु
८. टिल पर्नु नशा लाग्नु
९. टुप्पाबाट पलाएको एकैचोटी हुनेखाने भएको
१०. टुपी काट्नु जोगी हुनु
११. टुहुराको दिन फर्कनु असहायको भाग्य चम्कनु
१२. टेक्ने हाँगो नसमाउने डालो हुनु बेसहारा हुनु
१३. टेरपुच्छर लाउन छोड्नु भनेको नमान्नु
१४. टेवा दिनु आड दिनु
१५. टोपी भिक्नु टुहुरो हुनु

ठ

१. ठ्याक नमिल्लु कुरो नमिल्लु
२. ठाउँ पाउनु अवसर पाउनु
३. ठाउँमा राख्नु उचित ठाउँमा स्थान दिनु
४. ठाकठुक पर्नु भगडा हुनु
५. ठाडाठाडा कान पार्नु चासो लिएर कुरा सुन्नु
६. ठाडो घाँटी लाउनु पानी पिउनु
७. ठाडो पुच्छर लाउनु भाग्नु
८. ठेक्का लिनु कामको बोझ उठाउनु
९. ठेडी हाल्नु नसुन्ने अवस्था ल्याउनु
१०. ठेस लाग्नु समस्या भोग्ने अवस्था आउनु

ड

१. डाँको छोड्नु चिच्याएर ठूला स्वरमा रुनु
२. डाँडो काट्नु भाग्नु
३. डाँडाको जून हुनु मर्न लागेको अवस्थामा पुग्नु
४. डरले छेर्नु ज्यादै भयभीत हुनु
५. डाइलक दिनु व्यङ्ग्य प्रहार गर्नु
६. डाढुमा पानी तताएर मर्नु लाछी हुनु
७. डुबुक्ली मार्नु पौडी खेल्नु
८. डेढ अक्कल लगाउनु नजानीकन जान्ने हुन खोज्नु
९. डोरो लाउनु बशमा पार्नु
१०. डोली चढ्नु केटीको विवाह हुनु

त

१. तगारो हाल्नु समस्या सिर्जना गर्नु, बाधा पार्नु
२. तथानाम गर्नु भन्नु नभन्नु भन्नु
३. तनमन दिनु दिल लगाएर काम गर्नु
४. तमासा देखाउनु अनौठो क्रियाकलाप गरी देखाउनु
५. तरमा पल्केको बिरालो हुनु बारम्बार पल्किने अवस्थाको हुनु
६. तर लाग्नु प्रयोगमा आउनु
७. तल पर्नु प्रतिष्ठा कम हुनु
८. तलमाथि गर्नु उकालोओरालो गर्नु
९. तलमाथि पार्नु फरक पार्नु
१०. तह लाग्नु कामको प्रयोग हुनु
११. ताते गर्नु डोय्याउनु
१२. तातो लाग्नु चासो बढ्नु
१३. ताल्चा मार्नु बाटो रोक्नु
१४. ताली मार्नु प्रशंसा गर्नु
१५. तिघ्रा ठटाउनु खुशी प्रकट गर्नु
१६. तीन कौडीको पनि नहुनु कुनै कामको नहुनु
१७. तीनछक पर्नु आश्चर्यचकित हुनु
१८. तीन थाल मासु ठटाउनु पेटभरि खानु
१९. तीन सहर घुमाउनु बेइज्जती गराउनु
२०. तुक्का जोड्नु मिल्ने प्रसङ्ग ल्याउनु
२१. तोवातोवा पार्नु हायलकायल बनाउनु

थ

१. थकाइ मान्नु थकाइ मेट्नु
२. थप्पड मान्नु प्रशंसा/निन्दा गर्नु
३. थला बस्नु बेसरी बिरामी पर्नु
४. थाङ्नामा सुताउनु छक्याउनु
५. थाङ्ने कुरा गर्नु काम नलाग्ने कुरा भिक्नु
६. थाती राख्नु जोगाएर राख्नु
७. थापना गर्नु कुनै वस्तु केही कामका लागि राखिरहनु
८. थाल खाम कि भात खामभैँ हुनु भोकाउनु
९. थाहा पाउनु ज्ञान हुनु
१०. थिति नबितीको हुनु कुनै ठेगानको नहुनु
११. थुक निल्नु लोभिनु
१२. थुकेको थुक चाट्नु दिएका चीज फिर्ता लिनु
१३. थुतुनो जोगाउनु सोचविचार गरेर बोल्नु
१४. थैली कस्नु धन जम्मा गर्नु
१५. थोत्रो थाल ठटाउनु अनावश्यक हल्ला फैलाउनु

द

१. दाँत देखाउनु लाचारी प्रकट गर्नु
२. दाँत फुस्कनु बूढो हुनु
३. दाँतबाट पसिना आउनु अत्यन्त कठिन महसुस गर्नु
४. दाँतमा ढुङ्गो लाग्नु समस्या पर्नु

५. दम्पच पार्नु लुकाउनु
६. दलिन गन्नु बेकाममा समय बिताउनु
७. दाग लाग्नु दोष लाग्नु
८. दाहिने हात हुनु नजिकको सहयोगी हुनु
९. दिक्क पार्नु हैरान पार्नु
१०. दिन काट्ने समय बिताउनु
११. दिन चढ्नु दिन लम्बिनु
१२. दिन फर्कनु परिस्थितिमा सुधार हुनु
१३. दिन लाग्नु समस्या आइपर्नु
१४. दुइटा खुट्टा हाल्नु दुबैतिर काम थाल्नु
१५. दुनो सोभ्याउनु आङ्गनो स्वार्थपूर्ति गर्नु
१६. दुबै हातमा लड्नु हुनु जता पनि फाइदा हुनु
१७. दुरान फर्काउनु द्विरागमन गर्नु (विवाहको भोलिल्ट श्रीमान/श्रीमती फर्कनु)
१८. दूधको दूध पानीको पानी छुट्याउनु साँचो र भुटो फरक देख्नु
१९. देउता थाप्नु शर्त राख्नु
२०. देश कटाउनु देश निकाला गर्नु
२१. देश पस्नु विदेश जानु
२२. दैवदशा लाग्नु दैवी विपत्ति बढ्नु
२३. दैवको फेला पर्नु दृष्टको सङ्गतमा पर्नु
२४. दृष्टि पर्नु ध्यान जानु

ध

१. ध्वाँस दिनु धाकधम्की दिनु
२. धुँइपत्ताल लाउनु विशेष किसिमले खोज्नु
३. धक्का लाउनु आघात पुऱ्याउनु
४. धर्ना हाल्नु अड्डी लिनु
५. धुप हाल्नु सराप्नु
६. धर्म भाक्नु धर्मलाई साक्षी राख्नु
७. धराप थाप्नु अफ्यारोमा पार्नु
८. धाक दिनु फूर्ती लाउनु
९. धानीको बिसौली हुनु मात्रा घट्नु
१०. धाप मार्नु स्वाबासी दिनु
११. धारेहात लाउनु सराप्नु
१२. धीत मार्नु धोको फेर्नु
१३. धोती खुस्कनु कुरा फुत्केको चाल नपाउनु
१४. धोती न टोपी हुनु सर्वस्व गुमाउनु

न

१. न्याउरी मारी पछुतो हुनु पश्चाताप हुनु
२. नरक जानु दुःख भोग्नु
३. नाइँ-नास्ति नगर्नु खुरुखुरु भनेको मान्नु
४. नाउँ चोर्नु नाम लिनु
५. नाकका चालले गर्नु बाध्य भएर काम गर्नु

६. नाक काट्नु इज्जत फाल्नु
७. नाक ठाडो पार्नु गौरव गर्नु
८. नाकमा गुहु लाउनु बेइज्जती हुनु
९. नाकमा ठेस लाग्नु इज्जतमा धक्का पुग्नु
१०. नाटक गर्नु बनावटीपन देखाउनु
११. नाटक देखाउनु अरुलाई भ्रममा पार्नु
१२. नाम जानु बदनाम हुनु
१३. नालीबेली लाउनु बयान गर्नु
१४. निर्णय लिनु टुङ्गोमा पुग्नु
१५. नीलोकालो हुनु भयभीत हुनु
१६. निम्ता मान्नु निमन्त्रणा स्वीकार गर्नु
१७. नीच मार्नु अल्ल्छी गर्नु
१८. नुन खाएको कुखुरा भैं हुनु शक्तिहीन हुनु
१९. नुनको सोभो गर्नु इमान्दार हुनु
२०. नेटो काट्नु भाग्नु

प

१. पक्क पर्नु बोल्न नसक्नु
२. पखेटा फिँजाउनु आङ्गनो प्रभुत्व फैलाउनु
३. पसिना चुस्नु अरुको परिश्रम खानु
४. पसिना बहाउनु परिश्रम गर्नु
५. पश्चिमबाट घाम उदाउनु नपत्याउने व्यक्ति आइपुग्नु
६. पाउ मल्नु चाकरी गर्नु

७. पाखा लाग्नु किनारा लाग्नु
८. पाता फर्काउनु दुबै पाखुरालाई पछ्छाडिपट्टि फर्काइ बाँध्नु
९. पाथी भात खानु ज्यादै आनन्द हुनु
१०. पानीपँधरो हुनु बढी आवतजावत हुनु
११. पानी पानी हुनु लज्जित हुनु
१२. पानीमाथिको ओबानो हुनु निर्दोष बन्न खोज्नु
१३. पिँडुलाको मासु भर्नु बेसरी पिट्नु
१४. पुच्छर लाग्नु पछि लाग्नु
१५. पीपलको पात कामेभैं काम्नु साह्रै डराउनु
१६. पुर्पुरो सपार्नु भाग्य राम्रो हुनु
१७. पूजा गरेर राख्नु सम्मान गरेर राख्नु
१८. पुराण सुनाउनु भए नभएका कुरा गर्नु
१९. पेट काट्नु दिसा लागि रहनु
२०. पेट मिल्नु ज्यादै नजिकको हुनु
२१. पेटमा मुसा दगुर्नु ज्यादै भोकाउनु
२२. पोइला जानु नयाँ पोइ खोजेर जानु
२३. पोको पर्नु एकै ठाउँमा जम्मा हुनु
२४. पोथी बास्नु महिलाको बढी हुकुम चल्नु
२५. पोलेको घाउमा नुन छर्नु भन् पीडा दिनु

फ

१. फड्को मार्नु अगाडि बढ्नु
२. फत्ते गर्नु जिम्मेवारी पूरा गर्नु

३. फरियाको नाता लाउनु स्त्रीसम्बन्धी नाता बढाउनु
४. फल पाउनु परिणाम भोग्नु
५. फलामको चिउरा चपाउनु कडा परिश्रम गर्नु
६. फाल हाल्नु काममा हात हाल्नु
७. फुटानी लाउनु गफ हाँक्नु
८. फुटेको आँखाले पनि नहेर्नु एकदम मन नपराउनु
९. फुल पार्नु भए नभएका कुरा बनाउनु
१०. फेरो मार्नु चक्कर लगाउनु

ब

१. बत्ती बाल्नु उज्यालो मिल्नु
२. बन्धन फुकाउनु मायाजाल तोड्नु
३. बलेको आगो ताप्नु हुनेखानेको पछि लाग्नु
४. बाघ मार्नु ठूलो पुरुषार्थ गर्नु
५. बाटो तताउनु भाग्नु
६. बाटो राख्नु आउनेजाने बाटो तयार गर्नु
७. बाटो हेर्नु प्रतीक्षा गर्नु
८. बाजा बजाउनु हल्ला फैलाउनु
९. बात लाग्नु दोष लाग्नु
१०. बान्की मिल्नु ढाँचा मिल्नु
११. बाडुली लाउनु सम्झ्नु
१२. बाबुको बिहे देख्नु ठूलो आपत्तिमा पर्नु
१३. बिँडो थाम्नु बाबुको पेसा र इज्जतलाई कायम राख्नु

१४. बिलखबन्दमा पर्नु सङ्कटमा पर्नु
 १५. बुर्कुसी मार्नु उफ्रिएर भाग्नु
 १६. बुद्धिमा डढेलो लाग्नु बुद्धि भ्रष्ट हुनु
 १७. बैना मार्नु बैना पचाउनु
 १८. बोर लाग्नु दिक्क मान्नु
 १९. बोली फुट्नु बोली निस्कनु
 २०. बोसो लाग्नु मात्तिनु

भ

१. भङ्खालमा पर्नु खाडलमा जाकिनु
 २. भरोसा लिनु आडआधार मान्नु
 ३. भाइ मार्नु भाइलाई मर्कामा पार्नु
 ४. भाउ बिगार्नु मूल्य बढाउनु
 ५. भाउँतो लाउनु उपाय देखाउनु
 ६. भाउन्न हुनु रिंगटा लाग्नु
 ७. भात पचाउनु भात खाएपछि सोही अनुरूप काम गर्नु
 ८. भातभान्सा गर्नु खाना खानु
 ९. भात लाग्नु मात्तिनु
 १०. भात हटक गर्नु समाजमा भात नचल्ने गराउनु
 ११. भार लिनु समस्या बोक्नु
 १२. भार पर्नु बोभ उठाउनु
 १३. भाले बास्नु उज्यालो हुनु
 १४. भाकल गर्नु देवी-देवताको नाममा चढाउने इच्छा राख्नु

१५. भालुलाई पुराण सुनाउनु सुनेको नसुनेभै गर्नु
१६. भीख माग्नु दयनीय देखाउनु
१७. भुईमा खुट्टा नहुनु घमण्ड गर्नु
१८. भुँग्रामा पर्नु ठूलो चोटमा पर्नु
१९. भेउ पाउनु अड्कल गर्नु
२०. भोटो फटाउनु बढी उमेरको हुनु

म

१. मनखत लाग्नु माया लाग्नु
२. मन कुँडिनु चित्त दुख्नु
३. मक्ख पर्नु खुसी हुनु
४. मनपेट दिनु आन्तरिक भेउ बताउनु
५. मनपरि गर्नु मनोमानी काम गर्नु
६. मनको लड्डु धिउसित खानु कोरो कल्पनामा रमाउनु
७. मनमा जौतिल पाक्नु भित्रभित्रै छट्पटिनु
८. मनमा चिसो पस्नु शड्का लाग्नु
९. मन चोर्नु भित्री विचार बुझ्नु
१०. मरेको बाघको जुँगा उखेल्नु हुतिहारा काम गर्नु
११. माछा मार्नु लड्नु
१२. माटो खानु मर्नु
१३. मान घट्नु प्रतिष्ठा घट्नु
१४. मामाको घर जानु जेल जानु
१५. माया मार्नु विर्सनु

१६. माया पलाउनु माया लाग्नु
१७. मुख छाड्नु प्याच्च बोली हाल्नु
१८. मुख ताक्नु अरुको भर पर्नु
१९. मुख चिलाउनु प्याच्चप्याच्च बोल्नु
२०. मुख बार्नु परहेजमा रहनु
२१. मुख पर्नु अगाडि भेटिनु
२२. मुख फोर्नु दबिएको कुरा निकाल्नु
२३. मुख सिउनु चुप लाग्नु
२४. मुखमा पानी आउनु लोभिनु
२५. मुखभरिको जवाफ दिनु ठाडो जवाफ दिनु
२६. मुटुमा गाँठो पर्नु ठूलो पीर पर्नु
२७. मुख हेरेर भाग लाउनु पक्षपात गर्नु
२८. मुट्टी कस्नु कन्जुस्याइँ गर्नु
२९. मुटु ढुक-ढुक गर्नु अनिष्टका शङ्काले डराउनु
३०. मुन्टो ठाडो गर्नु विरामी स्वस्थ हुँदै जानु
३१. मुख च्याल्नु दुःख दिनु
३२. मुटु छाम्नु मर्मबोध गर्नु
३३. मुखमा ठेडी जाक्नु बोल्न नदिनु
३४. मुट्टा छिन्नु मुट्टाको फैसला गर्नु
३५. मुखमा माड लाग्नु खाना खाने अवस्था जुटाउनु
३६. मुखमा बुजो लाग्नु बोल्न नसक्ने बनाउनु
३७. मुखमुखै लाग्नु प्याच्च प्याच्च बोल्नु

३८. मुटु हल्लनु डराउनु
३९. मुखमा पानी हाल्नु हतार हुनु
४०. मुखमा जुठो पार्नु थोरै खानु
४१. मुख टाल्नु बोल्न नदिनु
४२. मुख ताक्नु आशा गर्नु
४३. मुख बिगार्नु अनुहारको भाव फेर्नु
४४. मुख सुँघ्नु विचार बुझ्नु
४५. मुखमा भुण्डनु कण्ठस्थ हुनु
४६. मूल पर्नु मूल भन्ने नराम्रो नक्षत्रमा जन्मनु
४७. मुतको न्यानो क्षणिक आनन्द
४८. मेख मार्नु लज्जित पार्नु
४९. मेला लाग्नु रमिता देखाउनु
५०. मन मिल्नु मित्रता हुनु

र

१. रगत चढ्नु प्रभाव पर्नु
२. रङ्ग न ढङ्गको कुरा गर्नु नमिल्दो कुरा गर्नु
३. रजाई गर्नु मनपरि गर्नु
४. रवाफ देखाउनु फुर्ति देखाउनु
५. रनवन डुल्नु चारैतिर घुम्नु
६. रनभुल्लमा पर्नु छक्क पर्नु
७. रगतको खोलो बगाउनु काटमार हुनु
८. राजकाज चलाउनु प्रशासनिक काम गर्नु

९. रातो मुख लाउनु रिसाउनु, लज्जित हुनु
१०. रामराज्य सुख-शान्तिको राज्य
११. राँडीको राज्य चलाउनु जथाभावी काम गर्नु
१२. राजाको राँगो फुक्नु स्वतन्त्र हुनु
१३. रातो न पिरो हुनु मोटाउनु
१४. रित्तो हात हुनु केही नहुनु
१५. रिन लगाउनु ऋणमा पर्नु
१६. रिसका भोंकमा पर्नु रिसको आवेगमा उपस्थित हुनु
१७. रिस उठ्नु रिस उब्जनु
१८. रुद्रघण्टी नभएको कुरा पचाउन नसक्ने
१९. रुवाबासी चल्नु दुःखद घटना घट्नु

ल

१. लखतरान हुनु थाक्नु
२. लहरो तान्दा पहरो गर्जनु सानो कुराको निहुँमा ठूलो बस्तुको नोक्सान हुनु
३. लगाम लगाउनु नियन्त्रण गर्नु
४. लछारपछार पार्नु भुत्ल्याउनु
५. लट्टीपट्टी पार्नु सम्पूर्ण कुरा स्याहार्नु
६. लत बस्नु बानी बस्नु
७. लाटीको म्वाँइ खानु स्वाद नहुनु
८. लात मार्नु वास्ता नगर्नु
९. लात हान्नु उपेक्षा गर्नु, त्याग्नु

१०. लामो हात गर्नु चोर्नु
 ११. लुगा हाल्नु नयाँ कपडा लिनु
 १२. लुरुक्क पर्नु भुक्नु
 १३. लेक्चर दिनु एकोहोरो भाषण गर्नु
 १४. लोप्पा खुवाउनु विश्वासघात गर्नु
 १५. लोभ लाग्नु अरुको सम्पत्तिमा मोह जाग्नु

श

१. शरण पर्नु साहारा माग्नु
 २. शिर भुक्नु इज्जत जानु
 ३. शिर ठाडो गर्नु गौरव हुनु
 ४. शुलीमा चढाउनु सजाय दिनु
 ५. श्रीगणेश गर्नु आरम्भ गर्नु

स

१. स्वास्नीको मुतमा बग्नु स्वास्नीको हुकुममा चलनु
 २. स्वस्ति-शान्ति गर्नु ग्रहपूजा गर्नु
 ३. स्वर्ग जानु मर्नु
 ४. सखाप पार्नु नष्ट गर्नु
 ५. सन्यास लिनु जोगी हुनु
 ६. सपनाकी रानी पाउन नसकिने आनन्ददायक कुरा
 ७. सतीत्व लुट्नु इज्जत लुट्नु
 ८. समय काट्नु बिताउनु

९. साँढेको फल व्यर्थको आशा
१०. सातो उडाउनु कायल हुने गरी हप्काउनु
११. सार मिलाउनु उसैउसै गर्नु
१२. सातकोश पर भाग्नु टाढा भाग्नु
१३. साइत पर्नु शुभ हुनु
१४. साटो फेर्नु बदला लिनु
१५. सातो उड्नु डराउनु
१६. सान्त्वना दिनु ढाडस दिनु
१७. साथ दिनु सहायता गर्नु
१८. सातो आउनु होस ठेगानामा आउनु
१९. सास आउनु बल वा हिम्मत बढ्नु
२०. सिन्दुर पुछिनु विधवा हुनु
२१. सिल्लिमुर् खानु मर्नु
२२. सित्तैमा पाए तीन माना चूक खानु अर्काको सम्पत्ति उडाउनु
२३. सुदिन आउनु समयअनुकूल बन्नु
२४. सिल टिमुर् खानु मर्नु
२५. सिलो खोज्नु छुटपुट सामान खोज्नु
२६. सिउसिउ गर्नु जाडोको अनुभव हुनु
२७. सुईकुच्चा ठोक्नु भाग्नु
२८. सुनमा सुगन्ध हुनु अति राम्रो हुनु
२९. सुँइको पाउनु थाहा पाउनु
३०. सुगा रटाइ गर्नु एकोहोरो रटाइ गर्नु

३१. सूर्य पश्चिमबाट उदाउनु धेरै दिनपछि देखिनु
३२. सुँगुरको खोरजस्तो हुनु साह्रै फोहर हुनु
३३. सुखको दिन उदाउनु समयअनुकूल हुनु
३४. सुरसार कस्नु तयार हुनु
३५. सुख काट्नु सुख भोग्नु
३६. सोत्तर पार्नु सबैई नास गर्नु
३७. सिङ्जुरो आउनु अनौठो हुनु
३८. श्राद्ध खानु मरेको व्यक्तिको पुण्य तिथिमा भोजन गर्नु
३९. सास्ती खानु दुःख पाउनु

ह

१. हग्नु न मुत्नु कुनै उपाय नपाउनु
२. हत्केला चिलाउनु पैसा मिल्ने सङ्केत देखिनु
३. हलो काटी मुंग्रो बनाउनु मह वपूर्ण वस्तु बिगार्नु
४. हल न चल हुनु थला पर्नु
५. हरेस खानु हत्तोत्साही हुनु
६. हलचल मच्चाउनु तहल्का मच्चाउनु
७. हत्केलामा ज्यान राख्नु खतरासँग खेल्नु
८. हंसले ठाउँ छोड्नु असाध्यै डराउनु
९. हात चलाउनु पिट्नु
१०. हातको मयल हुनु क्षणिक वस्तु हुनु
११. हात्तीको मुखमा जिरा ठूलो आवश्यकतामा ज्यादै कम पूर्ति
१२. हात हेर्नु भाग्यरेखा हेर्नु

१३. हात जोड्नु बिन्ती गर्नु
१४. हातमा दही जमाउनु शान्त भई बस्नु
१५. हातगोडा लाग्नु हिँडडुल गर्न सक्ने हुनु
१६. हात लाग्नु नाफा हुनु
१७. हात मिलाउनु सम्झौता गर्नु
१८. हातमुख जोर्नु खाना खाने समस्या समाधान गर्नु
१९. हात माथि पर्नु आङ्गनो बाजी हुनु
२०. हातपात गर्नु भगडा गर्नु
२१. हात पर्सार्नु माग्नु
२२. हातेमालो गर्नु परस्पर सहयोगको भावना अधि बढाउनु
२३. हात भिक्नु कुनै कामबाट अलग हुनु
२४. हाड घोट्नु ज्यादै परिश्रम गर्नु
२५. हावा खुस्कनु दिमाग बिग्रनु
२६. हावाले भेटाउनु सङ्गतले प्रभाव पार्नु
२७. हान्ने राँगोजस्ता ज्यादै रिसाहा
२८. हात भाँचिनु खाँचो पर्नु
२९. हाड नभएको जिब्रो हुनु बोलीको कुनै ठेगाना नहुनु
३०. हातमा नचाउनु अधीनमा राख्नु
३१. हाहा लाउनु लहलहै लाउनु
३२. हिम्मत हार्नु साहस गुमाउनु
३३. हित्तचित्त मिल्नु मिलोमतो हुनु
३४. होस हवास उड्नु डराउनु

३५. हेलचक्रयाइँ गर्नु बेवास्ता गर्नु
३६. हेला गर्नु उपेक्षा गर्नु
३७. हृदय पगलनु हृदय आकर्षित हुनु
३८. हृदय खोल्नु मनको कुरा भन्नु
३९. हातको सफाइ गर्नु जादु देखाउनु

परिशिष्ट : ग

गोरखा जिल्लामा प्रचलित केही टुक्काको वाक्यमा प्रयोग

जुनसुकै समाजमा पनि टुक्काको प्रयोग विशेष गरेर भनाइमा लाक्षणिक अर्थ प्रदान गरी भाषालाई रोचक र प्रभावकारी बनाउनका लागि प्रयोग गरिन्छ । टुक्का आफैँमा अपूर्ण र सूक्ष्म हुने हुनाले यसको अर्थ स्पष्ट हुनाको लागि वाक्यमा प्रयोग हुने गर्दछ । वाक्यमा प्रयोग नभई टुक्काको विशिष्ट अर्थ खुल्न सक्दैन । यस प्रकार टुक्काको अर्थ वाक्य प्रयोगमा नै खुल्ने हुँदा यसको उचित प्रयोग हुनुपर्दछ । यस प्रसङ्गमा गोरखा जिल्लामा प्रचलित केही टुक्कालाई वाक्यमा प्रयोग गरेर तिनीहरूको अर्थ प्रस्ट्याउने प्रयास यहाँ गरिएको छ-

अँगालो हाल्नु : आजकालका केटाकेटीहरू बाटामा अँगालो हालेर हिँड्न लाज मान्दैनन् ।

अँध्यारोमा ढुङ्गाले हान्नु : यो कुरा कसैलाई थाहा छैन । सबैले अँध्यारोमा ढुङ्गाले हान्ने न हुन् ।

अघिलाग्नु : राम सधैं अघि लाग्ने काम गर्दछ ।

अक्क न पक्क पर्नु : राम खुब बाठो बनेर गम्किरहेको थियो । उताबाट हर्के आएपछि ऊ अक्क न पक्क पच्यो ।

अड्को फुकाउनु : आज त ढुक्कसँग बसौला भनेको त भन् कस्तो अल्भो आइलाग्यो ?

अपहत्ते गर्नु : डल्लेले म पनि विद्यालय जान्छु भनी अपहत्ते गर्नु ।

अर्काको टाडमुनि छिर्नु : आङ्गनो खुट्टामा उभिन सक्ने भएको श्याम पानी मरुवा भएर सहदेवको टाडमुनि पो छिर्न पुगेछ ।

अलप हुनु : आज भात खानेबित्तिकै सुमन अलप भयो ।

आँखा ओभानो नहुनु : कठैबरा ! पुत्रशोककले होला विमलाको आँखा ओभानो छैन ।

आलु खानु : पढ्ने समयमा राजनीति गरेर हिँड्ने दिनेशले परीक्षामा त आलु खाएछ ।

आँ गर्दा अलङ्कार बुझ्नु : पुन्टेलाई कसैले ढाँटुला, छलुँला, भुक्क्याउँला भन्नै पर्दैन, ऊ आँ गर्दा अलङ्कार बुझिहाल्छ ।

आड ढाक्नु : कठै ! रामेलाई आड ढाक्न पनि कति गाह्रो भएको छ ।

आकाशको चरो खसाउनु : हरिलाई त्यो काम गरेर देखाउन त आकाशको चरो खसाउनु जस्तै छ ।

इन्तु न चिन्तु हुनु : रमेशलाई प्रहरीले चुटेको देखेर म त एकछिन इन्तु न चिन्तु भएँ ।

उपर्तली लाग्नु : अर्काको पाएँ भन्दैमा तीन माना चुक खानेलाई उपर्तली नलागे कसलाई लाग्छ त नि ?

उमेर छिप्पिनु : जीउडाल हेर्दा त रमाको उमेर निकै छिप्पिएजस्तो छ ।

उठेको जाँगर मरेर आउनु : यो घरको चाला देख्दा त उठेको जाँगर पनि मरेर आउँछ ।

ऋण काढ्नु : ऋण काढेर भने पनि राँडलाई एकपेट खान दिएकै थिएँ ।

एक कानले सुनेर अर्को कानले उडाउनु : आजकालका बच्चालाई जति भने पनि लाग्दैन । तिनीहरू एक कानले सुनेर अर्को कानले उडाइदिन्छन् ।

एक गास पार्नु : गाउँलेको रगत पसिना चुस्न पल्किएको वीरे मुखियालाई आज रमेशले एक गास पायो ।

ऐरेलु खाएजस्तो हुनु : छ्या ! काँक्रो त कति नमीठो ! ऐरेलु खाए जस्तो पो रहेछ ।

ओठ टोक्नु : मेरो कुरा सुनेर सानीले ओठ टोकी ।

ओठे जवाफ दिनु : रमाकी बुहारी जसलाई पनि ओठे जवाफ दिन्छे ।

औलामा नचाउनु : हर्केकी स्वास्नीले आङ्गनो लोग्नेलाई औलामा नचाएकी छे ।

कम्मर कस्नु : परीक्षामा फेल भएपछि सरिता कम्मर कसेर पढ्न थालेकी छे ।

कन्सिरी तात्नु : आफूमाथि नहुँदो आरोप लगाएको सुन्दा हरिको कन्सिरी तातेर आयो ।

कान काट्नु : तैले त्यो काम गरेको भए त म कान काट्न सक्छु ।

कान ठाडो पार्नु : लोकनाथ देख्न मात्र सोभ्यो छ । ऊ अरुका कुरा खुब कान ठाडो पारेर सुन्ने गर्छ ।

किताबको किरा हुनु : सरोज त किताबको कीरा नै हो ।

कुलेलम ठोकनु : हरि पैसा चोरेर कुलेलम ठोक्यो ।

कुरा चोर्नु : अनिषा साथीहरूसँग खुब गफ गर्छे, तर उसको कुरा चोर्ने बानी कसैले पत्तै पाउँदैनन् ।

कान खानु : यी केटाकेटीले मेरो कानै खाइसके, भनेको पनि मान्ने होइनन् ।

कागको फूल चोर्नु : सोमनाथलाई लाटो सम्भेको कि क्या, आङ्गनो काम बनाउन त ऊ कागको फूल चोर्न सक्छ ।

कुरा मिल्नु : मैले वास्तविकता बताएपछि दुबै जनाको कुरा मिल्यो ।

किनारा लगाउनु : यो काम किनारा लगाएर मात्र म अर्को काम गर्छु ।

कानमा तेल हाल्नु : अहिले मेरो कुरा नसुनेर कानमा तेल हालेर बसिस् भने पछि दुःख पाउलास् ।

कानमा बतास पस्नु : जति भने पनि उसको कानमा बतास पस्ने होइन ।

काल काट्नु : नरेशले काल काट्यो ।

कुरा चपाउनु : राम भन्न खोजेको कुरा खुलस्त भन, किन कुरा चपाएको ?

खोचे थाप्नु : खोचे थापेर घूस खाने कर्मचारीहरू देशका शत्रु हुन् ।

खुट्टा लाग्नु : यही भएको किताबको खुट्टा लागे छ कि क्या कहीं भेटिदैन ।

खुट्टा घुमाउनु : खै किन हो, अहिले हाम्रो देशमा अशान्तिले खुट्टो घुमाएको छ ।

खुट्टा मल्नु : गोरे हाकिमको खुट्टा मल्न निकै सिपालु छ ।

खेदो गर्नु : अरुको खेदो गर्ने बानी राम्रो होइन ।

खिस्सी गर्नु : सरिता अरुको खिस्सी मात्र गर्छे ।

खल्लो लाग्नु : रमेश दुर्घटनामा परेको कुरा सुन्दा मलाई खल्लो लाग्यो ।

गाई खाने विद्या : हिजो आजका केटाकेटी गाई खाने विद्या पढ्छन्, केही काम लाग्ने होइन भन्दै हजरबा कराउनु हुन्थ्यो ।

गायत्री मन्त्र जप्नु : वामदेव गौतमले चित्तवनको एउटा कार्यक्रममा भने-
“अहिले जनताहरूले लोकतन्त्रको एकोहोरो गायत्री मन्त्र जपिरहेका छन् ।”

गोरु बेचेको साइनो लगाउनु : त्यस्तो गोरु बेचेको साइनोले पनि के काम चल्थ्यो र ?

गोरु ब्याउनु : हुने बेलामा सन्देशको गोरु पनि ब्याएछ ।

गर्ज टर्नु : रामले जेनतेन आङ्गनो गर्ज टारेको छ ।

गर्व गर्नु : सीता सधैं आङ्गनो कुरामा गर्व गर्छे ।

गलाको पासो हुनु : सङ्गीतालाई आङ्गनै छोरो गलाको पासो भएको छ ।

घैंटामा घाम लाग्नु : मैले सम्झाएपछि मात्र उनको घैंटामा घाम लाग्यो ।

घमासान पर्नु : हिजो चामे र पोडेबीच घमासान भयो ।

घाउमा नुनचुक छर्नु : गजेलाई घरमा कति ठूलो समस्या परेको छ । अब्ब उसको घाउमा नुनचुक छर्ने काम हामीले गर्नुहुँदै ।

घाँडो लाग्नु : आङ्गनो काम त कसरी भ्याउने भएको बेला मलाई फेरी अरुको घाँडो आइलाग्यो ।

घिरौला जत्रो नाक फुलाउनु : हेर-हेर एस.एल.सी पास हुँदैमा घिरौलाजत्रा नाक फुलाएर हिँडेको ।

चन्द्रमा दाहिने हुनु : अहिले भने चन्द्रमा दाहिने भएका छन्, जे काम गरे पनि सफल नै भएको छ ।

चड्कन चिउरा दिनु : बढी चकचक नगर, फेरी म त चड्कन चिउरा दिउंला ।

चुरा फुट्नु : बिचरा ! मालतीको बिहे गरेको वर्षदिन नहुँदै उनको चुरा फुटेछ ।

चोरको बाबु चण्डाल : कालेदेखि नडराउने मानिस कमै होलान्, ऊ त चोरको बाबु चण्डाल नै हो ।

चैते बाँदर : मुकुन्द चैते बाँदरजस्तै भएको छ ।

छाक टार्नु : अर्जुनले कसरी छाक टारेको होला ?

छि छि र दुरदुर गर्नु : कालीकी बुहारीलाई सबैले छि छि र दुरदुर गर्छन् ।

छेड हान्नु : सुन्तली प्रायजसो अरुलाई छेड हानेर बोल्छे ।

छक्क पर्नु : कान्छी नाचेको देखेर म त छक्क परें ।

छेपारोको उखान : राम विदेश जाने कुरा पनि छेपाराको उखानजस्तै भएको छ ।

जोगी हुनु : तेत्रो सम्पत्तिको मालिक भएर पनि दीपेन्द्रे जोगी भयो ।

जगल्टा केलाउनु : पहिलेका सासूहरू बुहारीको जगल्टा केलाउँथे ।

जता भन्यो उतै नचाउनु : मर्द भएर पनि रिठ्ठे स्वास्नीको इसारामा जता भन्यो उतै नाचेको छ ।

जुनी फेरुनु : हाम्रो समाजले जुनी फेरेको छ ।

जाँगर मरेर आउनु : गाउँलेको एकमत नहुँदा आएको जाँगर पनि मरेर जान्छ ।

जिल खानु : आपसी मतभेदका कारण गाउँमा आएको बजेट रोकिँदा गाउँलेले जिल खाए ।

जिब्रो चलाउनु : जथाभावी चलाउनाले मानेले पाउनु दुःख पायो ।

जोर जुलुम गर्नु : जति जोर जुलुम गरेपनि अस्मिता पास हुने भइन ।

भारा टार्नु : भारा टार्ने प्रवृत्ति बसेका ठेकेदारहरू कहिले पो राम्रो काम गर्थे र ।

भापड दिनु : जुवातास खेल्दै गरेको देखेर आङ्गनो छोरालाई श्यामलालले एक भापड दियो ।

भ्याइँ पार्नु : सन्जुको भ्याइँ पार्ने दिन पनि अब त आइपुग्यो ।

भोली तुम्लो लिएर हिँड्ने हुनु : घाँटी हेरी हाड निल्न नजान्दा शङ्करले आज भोलीतुम्ला लिएर हिँड्नु पर्‍यो ।

भिंगा धपाउनु : भिंगा धपाएर नै भए पनि उसले सरकारी जागिर खायो ।

टाउकोमा टेक्नु : छोरालाई सानामा पुल्पुल्याइयो, अहिले टाउकोमा टेक्न आइपुग्यो ।

टुप्पाबाट पलाउनु : त्यो पाजी अहिले पैसा कमाएँ भनेर त्यसै ठूलो हुन्छ । टुप्पाबाट पलाएको भनेको यही हो ।

टेरपुच्छर नलगाउनु : सानामा बहिनीलाई बढी पुल्पुल्याइयो अहिले उसले टेरपुच्छर लगाउन छोडी ।

टुपी काट्नु : गरीखानको अल्छीले बलराम त टुपी काटेर सहर पसेछ ।

टोपी भिक्नु : बिचरा ! पुन्टेले कलिलो उमेरमा नै टोपी भिक्नु पर्‍यो ।

टाउको खानु : भुन्टेकी आमाले मेरो टाउको खाइसकी ।

ठाडो घाँटी लगाउनु : उसलाई ठाडो घाँटी लगाउन पाए हुन्छ, जहान परिवारको के वास्ता ?

ठाडो पुच्छर लगाउनु : खोपी खेलेर बसेको राम लेखनाथ सरलाई देखेबित्तिकै
ठाडो पुच्छर लगाएर दौड्यो ।

डाँको छोड्नु : आमाको मृत्युमा समेत नरोएकी मन्दिराले बिहेमा त डाँकै
छाडिन् ।

तीनछक पर्नु : बेलायतमा पसलको ढोका आफै खुल्छ रे भनेको सुन्दा म त
तीनछक परें ।

तमासा देखाउनु : के तमासा देखाएर बसेको, खुरुक्क नआएर ?

तोवातोवा बताउनु : सन्तोषले आज बाबुलाई तोवातोवा बनायो ।

तनमत दिनु : आफूले चाहिँ उसका लागि तनमत दियो, ऊ भने टेरपुच्छर
लगाउँदैन ।

तथानाम गर्नु : हर्केको रोप्ने बेला भएको बीऊ बिर्खेको गोरुले खाएकाले हर्केले
बिर्खेलाई तथानाम गाली गयो ।

तिघ्रा ठटाउनु : कुलामा पानी आएको देखेर सन्ते थापाले, चौतारामा बसेर
तिघ्रा ठटायो ।

थला बस्नु : अत्यधिक चुरोट पिउने पूर्णमान आजकाल क्यान्सरले थला बसेको
छ ।

थाङ्नामा सुताउनु : यसपालि उसले नराम्रोसँग थाङ्नामा सुतायो तर अर्को
पटक उसलाई कसले विश्वास गर्छ र ?

थुकेको थुक चाट्नु: तिमीजस्तो थुकेको थुक चाट्ने नीच व्यक्ति म होइन ।

थुतुनो जोगाउनु : थुतुनो जोगाएर बोल है, नत्र तेरो खैरिएत छैन ।

थाङ्ने कुरा गर्नु : तिम्रो थाङ्ने कुरा सुन्ने मलाई फूर्सद छैन ।

दिन काट्नु : केटाकेटी घरमा नहुँदा त दिन काट्नै मुस्किल पर्दो रहेछ ।

दैवको फेला पर्नु : दैवको फेला परेपछि कसको बाबुको के लाग्दो रहेछ र ?

दुनो सोभ्याउनु : अहिलेका नेताहरू देशको सेवा गर्ने काम छोडेर आङ्गनो दूनो सोभ्याउन व्यस्त छन् ।

दुरान फर्काउनु : दुरात फर्काउनेबित्तिकै विदेश गएको रामे अझै घर फर्किएको छैन ।

दम्पच पार्नु : धारामा छोडेको घडी निर्मलाले दम्पच पारी ।

दिक्क पार्नु : नरेले सापटी लगेको पैसा नदिएर दिक्क पायो ।

दूधको दूध पानीको पानी : दूधको दूध पानीको पानी छुट्याउने भएकाले नै मुखियाबालाई गाउँमा सबैले मान्छन् ।

धाक दिनु : बीचबीचमा धाक दिन्छस् तँ को होस् भन्ने कुरा तँलाई थाहा छ ?

धीत मार्नु : नेपाल टेलिभिजनमा धीत मारेर नाच्ने मेरो विचार छ ।

धराप थाप्नु : अस्ति मात्र माओवादीले धराप थापेर धेरै प्रहरीको ज्यान गएको थियो ।

धोती न टोपी हुनु : जाँडरक्सीमा सर्वस्व गुमाएको सुरेन्द्र आजभोलि धोती न टोपी भई बसेको छ ।

धीत मार्नु : पुतलीको धीत मारेर नाच्ने धोको पनि पूरा भएन ।

नीच मार्नु : जाडो धेरै बढेकाले मैले लेक जान नीच मारे ।

नाक काट्नु : विदेश घुम्न गएका मन्त्रीसम्मले लागू औषधीको व्यापार गरेर हाम्रो देशको नाकै काटिसके ।

नेटो काट्नु : एउटा सानो कुरामा प्रतिवाद गर्न नसकेर त्यस नाथेले नेटो काट्यो बिचरा ।

नुन खाएको कुखुरो भैं हुनु : रामजीलाल आजभोलि किन हो कुन्नि नुन खाएको कुखुरो भैं भोक्राएर बसीरहन्छ ।

नाकमा गुहु लगाउनु : पण्डितकी छोरी सानेसार्कीसँग पोइला गएर बाबुको नाकमा गुहु लगाइदिई ।

नुनको सोभो गर्नु : गोर्खालीहरू जहाँपनि नुनको सोभो गर्छन् ।

पिँडुलाको मासु भर्नु : नपढेर हिँडेको हुँदा कृष्णले छोरोलाई पिँडुलाको मासु भर्ने गरी पिट्यो ।

पाथी भात खानु : सुनिताले प्रथम श्रेणीमा एस.एल.सी पास गरेको खबर सुन्दा मलाई पाथी भात खाएजस्तै भयो ।

पोइला जानु : घरमा दुईवटा केटाकेटी हुँदाहुँदै डल्ली त पोइला गइछ ।

पसिना चुस्नु : अर्काको पसिना चुस्न पल्लिकाहरू आफू काम गर्दैनन् ।

पानीपँधेरो हुनु : अहिले गोरखा काठमाडौं आफूलाई त पानीपँधेरो जस्तो भइसक्यो ।

पाखा लाग्नु : गाउँका जालीफटाहाहरू अहिले त पाखा लागिसके ।

फुटेको आँखाले पनि नहेर्नु : हरि त गोपाललाई फुटेको आँखाले पनि हेर्न चाहँदैन ।

फुटानी लगाउनु : नवीन खुव फुटानी लगाउँथ्यो आखिर फेल पो भएछ ।

बात लाग्नु : कवितालाई धुबको बात लागेछ ।

बाटो हेर्नु : म दिनभरी तिम्रो बाटो हेरेर बसें तर तिमी आउँदै आइनाँ ।

बचन लाउनु : बुहारीले सासूससुरालाई बचन लगाउन हुन्न भन्ने विर्सेर आज जसोदाले ससुरासँग भगडा गरी ।

बाबुको बिहे देख्नु : स्वास्नीले छाडेर हिँडेपछि भने अनुपले बाबुको बिहे देखेको छ ।

बिँडो थाप्नु : गोर्खालीहरूले अहिलेसम्म पुर्खाको बिँडो थामेकै छन् ।

बलेको आगो ताप्नु : समाजमा सबै बलकै आगो ताप्ने त हुन् नि ।

बिलखबन्दनमा पर्नु : कार्यकर्ताले विरोध गरेपछि नेता बिलखबन्दनमा परेछन् ।

भुईँमा खुट्टा नहुनु : रामले एस.एल.सी. प्रथम श्रेणीमा पास गरेको, त्यसैले उसको भुईँमा खुट्टै छैन ।

भालुलाई पुराण सुनाउनु : उसलाई मैले कति पटक सम्झाएँ तर के गर्नु भालुलाई पुराण सुनाए भैं हुन्छ ।

भेउ पाउनु : गाउँमा घट्ने घटनाको बारेमा गाउँमा मुखियाले अधि नै भेउ काटेका थिए ।

भात लाग्नु : लक्ष्मणको नोकरलाई आजभोलि भात लाग्यो जस्तो छ ।

मुख छाड्नु : आफूभन्दा ठूलालाई मुख छाड्नु महामूर्खता हो ।

मन चोर्नु : तिमिले त मेरो चोरी सक्यौ, के पो ढाँट्नु छ र !

मन मिल्नु : राम र रमाको त खुब मन मिल्छ भन्छन् नि !

मेख मार्नु : सुबोधले आज मेख मर्ने गरी रक्सी पियो ।

मनमा चिसो पस्नु : आजभोलि साँगिताको व्यवहार देखेर मेरो मनमा चिसो पस्न थालेको हो ।

मनको लड्डु घिउसित खानु : मनको लड्डु घिउसित खाएर बस्नाले प्रमोदले केही प्रगति गर्न सकेन ।

रुद्रघण्टी नभएको : विश्वले केही कुरो मनमा राख्न सक्दैन । त्यसको त रुद्रघण्टी नै छैन क्यार !

रामराज्य : नेपालमा कहिले रामराज्य आउला खै ?

रातो न पिरो हुनु : वाचस्पति त मन्त्री भएपछि रातो न पिरो भएछन् ।

लुगा हाल्नु : फूलमतीले लुगा हालिदिनुहोस् भनेर हैरान गरेकी छ ।

लामो हात गर्नु : लामो हात गर्नाले सन्ते जेलमा पुग्यो ।

लुरुक्क पर्नु : मै हुँ भनेर गर्जने ठूले आज त लुरुक्क परेर गयो ।

शूलीमा चढाउनु : वास्तविकता नै नबुझी गोपालले शशिलाई शूलीमा चढायो ।

शरणमा पर्नु : आखिर रुद्र शिवको शरणमा नपरी सुखै पाएन ।

श्री गणेश गर्नु : शुभकार्यको श्री गणेश गर्न ढिला गर्नु हुँदैन ।

सुईको पाउनु : हिजो हामी कहाँ गयौं कसैले सुईको सम्म पाएन ।

सन्यास लिनु : सोमबहादुरले त तासबाट सन्यास लिएछ ।

स्वर्ग जानु : हीरामाया त स्वर्ग गइछ ।

स्वस्ति शान्ति गर्नु : राधा भोलि हाम्रो घरमा स्वस्तिशान्ति छ, तिमी पनि आऊ है ?

साइत पर्नु : आज त साइत नै परेन ।

सिल्लिमुर् खानु : धेरै दिनदेखि रोगाएका गङ्गाधर बाजेले हिँजै सिल्लिमुर् खाएछन् ।

सास्ती दिनु: आफूलाई कति गाह्रो भइसक्यो कति सास्ती दिएको ।

सास आउनु: बल्ल छोराहरू हुर्किए, अब त सास आउन थाल्यो ।

सुदिन आउनु: राजारामको पनि सुदिन आएछ ।

सित्तैमा पाए तीनमाना चुक खानु: सित्तैमा पाएँ भन्दैमा तीनमाना चुक खानेलाई बमन नगराए कसलाई गराउने त ?

हात लाग्नु: रामलाई हात नहालेको भए विजया मिलिहाल्थी नि ।

हावा लाग्नु : हेमराजको हावा लागेर गुणराज पनि बिग्रियो ।

हिम्मत हार्नु : एकपटक सगरमाथा चढि छाड्ने कुरामा मैले हिम्मत हारेको छैन ।

हाड घोट्नु : म बूढाले मात्र कति हाड घोटौं खै ।

हत्केलामा ज्यान राख्नु : मैले आङ्गनो ज्यानलाई हत्केलामा राखेर उसलाई नदीबाट निकालें ।

हात भिक्नु : मैले त्यस कामबाट पहिले नै हात भिक्कीसकेँ ।

हत्केला चिलाउनु : आज बिहानैदेखि हात चिलाएको थियो, पैसा पाउन पो रहेछ ।

हातगोडा लाग्नु : हातगोडा लाग्ने भएपछि घरमा के को बास हुन्थ्यो र !

हात पसारनु : यस्तो भुसतिघ्रे भएर पनि हात पसारन लाज लाग्दैन ?

हरेस खानु : बिमल कहिलै हरेस खाएर कुरा गर्दैन ।

परिशिष्ट घ

गोरखा जिल्लाको नक्शा

परिशिष्ट ड

टुक्का सूचकहरूको परिचय

| क्र.सं. | सूचकको नाम | ठेगाना | सामग्री सङ्कलन गरेको क्षेत्र |
|---------|----------------------|-------------------------|---------------------------------|
| १. | नीलकण्ठ भट्टराई | ताप्ले-७ | ताप्ले, अश्राड, बोर्लाड |
| २. | रामजी भरहट्टा | आँपपिपल-६ | आँपपिपल, माल्तीगैरा |
| ३. | इन्द्रकुमारी देवकोटा | गोरखा क्याम्पस गोरखा | लिगलिग, ताङ्लीचोक ताक्लुड |
| ४. | कपिल अर्याल | पृ.ना.न.पा.-६ | श्रनिथकोट, गैरे, जौवारी |
| ५. | इन्द्रप्रसाद पोखरेल | नामजुड-१ | नामजुड, बुंकोट, फुजेल |
| ६. | गोविन्द भट्टराई | ताप्ले-८ | तान्द्राड, मसेल, धावा |
| ७. | चन्द्रकान्त पोखरेल | छोप्राक-९ | छोप्राक, नवलपुर, चित्रेपोखरी |
| ८. | विष्णुमाया धिताल | हंसपुर-८ | हंसपुर, सिमजुड खरीबोट |
| ९. | सुशील अर्याल | पृ.ना.न.पा.-६ | नारेश्वर, घलाड |
| १०. | बुद्धिमान गुरुड | गाँखु-४ | खोप्लाड, गाँखु |
| ११. | रामहरि खनाल | देउराली-५ | देउराली, धुवाँकोट |
| १२. | ईश्वरीप्रसाद कोइराला | मनकामना-३ | मनकामना, घैरुड |
| १३. | जयराज रेग्मी | ध्यालचोक-१ | ध्यालचोक, दर्बुड |
| १४. | शिवहरि लामिछाने | तान्द्राड-२ | धावा, ध्याम्पेसाल |
| १५. | ऋषि खनाल | आरुचनौटे-५ | थुमी, आरुघाट |
| १६. | रामप्रसाद अर्याल | पृ.ना.न.पा.-६ | पृ.ना.न.पा. |
| १७. | रामप्रसाद ढकाल | बोर्लाड-४ | फिनाम, ताकु, लाङ्दी |
| १८. | सुनील अर्याल | पृ.ना.न.पा.-६ | फिनामटार, चोरकाटे भिम्रेक |

